लम्बे अभियान में
अध्यक्ष माओ के साथ

लम्बे अभियान में अध्यक्ष माओ के साथ

छन छाङ-फ़ङ

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह
पेकिङ ★ १९७२

पहला संस्करण १९६०
दूसरा संस्करण १९७२

चीन लोक गणराज्य में मुद्रित

विषय-सूची

प्रारम्भिक दिन

१९१५ के पतझड़ में, च्याङशी प्रान्त की निङ्तू काउन्टी में लिङनाम्रो नामक गांव में मेरा जन्म हुआ था। हमारा परिवार बेहद गरीब था। जब मैं ग्यारह वर्ष का हुआ, मेरी मां परलोक सिधार गयीं। मेरे पिता जमींदारों के यहां काम करके परिवार का पालन-पोषण करते थे। अपनी गरीबी के कारण और जमींदारों तथा मुकामी निरंकुशों के दमन की चक्की में पिसने के कारण, मैं बचपन से ही अपने अन्तरतम से शोषकों के इस लुटेरे वर्ग से घृणा करता रहा हूं।

१९२८ में, हमारे गांव में किसी एक "लाल सेना" के बारे में अचानक चर्चा छिड़ गई, जो बाङफ़ाङ नामक गांव में इस प्रकार प्रगट हो गई थी मानो वह आकाश से उतर आई हो! वह निङ्तू से होते हुए रुइचिन और तापोती की ओर बढ़ रही थी। इस खबर से सारे गांव में हलचल मच गई और ज्यों ज्यों यह खबर चारों ओर फैलती गई, त्यों त्यों वह एक दन्तकथा का रूप धारण करती गई। गरीब लोग खुश थे। वे कहते थे कि यह सेना गरीबों की रक्षा करती है। उसे कम्युनिस्ट पार्टी या लाल सेना के नाम से पुकारा जाता है। वह अमीरों को

नंग करती है, और गरीब लोगों की मदद करती है तथा जमींदारों व मुकामी निरंकुशों के सोना चांदी को सड़कों पर फेंक देती है, ताकि गरीब लोग उन्हें अपने लिए उठा कर रख लें। यह सुन कर अमीर-उमराओं के प्राण सूख गए थे। वे इन लोगों को भयानक डाकू कहकर पुकारते थे। मैं उस समय केवल तेरह वर्ष का था। मैं राजनीति में बिलकुल अनभिज्ञ था, लेकिन गरीब-गुरबा जो बात कहते थे, उसमें मैं तुरन्त सहमत हो जाता था। ये कुछ शब्द : "अमीरों को खतम करो!" "गरीबों की मदद करो!" मेरे मानस पटल पर सदा के लिए अंकित हो गए थे।

बहुत दिन गुजर गए थे। गांव के कुछ फेरीवाले फ़ुच्येन प्रान्त में छाङतिङ गए थे। उन्होंने वापस आकर आंखों देखी घटनाओं का बड़े उल्लास के साथ वर्णन किया था। लाल सेना ने छाङतिङ पर कब्जा कर लिया था, स्थानीय निरंकुशों को मार भगाया और जमींदारों को उखाड़ फेंका था। गरीबों को जमीन दी गई थी : अब वे पहली बार अपने पांव पर खड़े हुए थे।

यह खबर सुनकर मुझे खुशी हुई और मैं अधीरता के साथ उस दिन की प्रतीक्षा करने लगा जब कि गरीबों के ये सिपाही हमारे गांव आएंगे।

नए साल की शाम को, हमारे घर की तलाशी ली गई और उसे लूट लिया गया, क्योंकि हम स्थानीय निरंकुश का कर्जा अदा नहीं कर सकते थे। इसलिए हमारे पास जो कुछ भी था—जमीन के छोटे से टुकड़े से लेकर मेरे कमरे में रखी हुई

फटी रजाई तक—सभी कुछ छीन लिया गया। हमारे पड़ोसियों ने हमारे लिए दया की भीख मांगी, जिसकी बदौलत, चावल पकाने के लिए केवल एक टूटा-फूटा बरतन हमारे पास छोड़ दिया गया। हमारा जीवन पहले से कहीं अधिक कठोर हो गया। भाग्यवश, मुझे दूसरों की गाय चराने का काम मिल गया। परन्तु मेरा जीवन जानवरों से भी बदतर था। जब कोई बैल या घोड़ा अपना काम खतम कर लेता है तो उसे अपना चारा मिल जाता है, पर हमारे सारे परिवार को तो कभी-कभी भूखा रहना पड़ता था और हमारे पास खाने के लिए लपसी की एक बूंद तक न रहती थी।

अब हम क्या करें? लाल सेना में भरती हो जाएं! यह विचार अचानक मेरे दिमाग में आया। और जितना ही अधिक मैं इस बारे में सोचता था, उतना ही अधिक इस विचार को कार्यान्वित करने के लिए मेरा इरादा पक्का होता जाता था। चीनी नए साल के दूसरे दिन रात को मैं अपने एक पड़ोसी नौजवान वन के साथ गांव से गुप्त रूप से भाग निकला। हमने परिवार तक को सूचना नहीं दी। हम लोग छाङतिङ (फ़ूच्येन प्रान्त) की ओर बढ़े। हम लोग लाल सेना का पता लगाने और उसमें भरती होने का दृढ़ निश्चय कर चुके थे।

पता नहीं कितनी दूर तक, और पता नहीं कितने दिनों तक, हम लोग चलते ही रहे, चलते ही रहे, पर हमें लाल सेना का एक भी सैनिक न मिला। हालांकि हम लोग बहुत भूखे थे, लेकिन फिर भी हमने अपना दृढ़ इरादा नहीं बदला। छाङ-

तिङ से पन्द्रह ली (२ ली = १ किलोमीटर) दूर एक पहाड़ी पर हमें दो सैनिक सन्तरी मिले, जिनकी टोपियों पर लाल सितारे थे। आखिरकार लाल सेना मिल ही गई! हम लोग तुरन्त उनके पास गए और उन्हें बताया कि हम लोग लाल सेना में भरती होने आए हैं। हम से बहुत विस्तार से सवाल-जवाब करने के बाद, उन्होंने छाङतिङ की ओर इशारा किया और हमें बताया कि अगर हम लोग भरती होना चाहते हैं, तो हमें वहां लाल रंगरूट भरती कोर में जाना चाहिए।

छाङतिङ में हमने देखा कि लाल रंगरूट भरती कोर एक पत्थर के पुल के पास तैनात है। हम लोग इतने खुश हुए कि उसी समय फौरन भरती हो जाना चाहते थे, यहां तक कि हमने उनकी बात भी नहीं सुनी। हमने कभी यह कल्पना भी नहीं की थी कि हमारे मामलों पर विचार करके, वे अपना सिर हिला कर कह देंगे : "नहीं"। उन्होंने कहा : "तुम अभी बहुत छोटे हो और अपने कन्धे पर एक राइफिल तक नहीं लाद सकते।" इससे मेरी आंखों में आंसू आ गए। लेकिन मैं हार मानने वाला नहीं था। "मैं लाल सेना में शामिल होकर रहूंगा!" मैं चिल्ला पड़ा। "अगर आप मुझे नहीं भरती होने देंगे, तो मैं यहीं पर धरना दिए रहूंगा!" अन्त में, मेरा पक्का इरादा देखकर वे कुछ ढीले पड़े और इस प्रकार मैं गौरवशाली लाल सेना का सदस्य बन गया।

मुझे कामरेड चू तेह के कमान में चीनी मजदूर-किसानों की लाल सेना की चौथी फौजी कोर के हैडक्वार्टर में बिगुल बजाने

वाले की हैसियत से तैनात किया गया। बाद में, मैं अर्दली बन गया। मार्च १९३० के अन्त में, एक दिन दोपहर, जब हमारा हैडक्वार्टर च्याङशी प्रान्त में, युङफ़ङ काउन्टी में पाएशा गांव में था, एडजुटेन्ट अफसर ल्यू चन-थिङ ने मुझे बताया कि मेरा तबादला होने वाला है। उस समय मुझे "तबादला" शब्द का अर्थ ठीक-ठीक नहीं मालूम था। इसलिए मैंने उनसे पूछा कि इसका क्या मतलब होता है।

"तबादले का मतलब यह होता है कि अब तुम दूसरी जगह काम करोगे।" ल्यू ने कहा। वे मेरी ओर इस प्रकार टकटकी लगाकर देख रहे थे मानो कोई ऐसी महत्वपूर्ण बात हो जो वे मुझे तुरन्त न बताना चाहते हों।

"मैं कहां भेजा जाऊंगा?" मैंने ल्यू से पूछा। मैं इस तबादले से खुश नहीं था, क्योंकि जिस जगह मैं काम कर रहा था, उसमें मैं संतुष्ट था।

"तुम मोर्चा कमेटी में कमिसार माओ के अर्दली के रूप में काम करोगे।" उन्होंने मुस्कराकर कहा।

मैं चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की मोर्चा कमेटी से भलीभांति परिचित था, किन्तु कमिसार माओ कौन हैं, यह मैं साफ-साफ नहीं जानता था। मैंने अनुमान लगाया कि वे अवश्य एक अगुआ अफसर होंगे, नहीं तो उन्हें अर्दली कैसे मिलता! पर वे किस प्रकार के आदमी हैं? क्या वे अच्छे स्वभाव के आदमी हैं?

मेरा संकोच देखकर एडजुटेन्ट ल्यू ने मेरा कन्धा थपथपाया

और मुझे उत्साहित करते हुए बोले : "तुम एक भाग्यवान नन्हे शैतान हो। कमिसार माओ एक बड़े ही अद्भुत व्यक्ति हैं। अगर तुम उनके साथ काम करोगे, तो निश्चय ही तुम्हारा भविष्य अत्यंत उज्ज्वल होगा।" तब उन्होंने मुझे एक परिचय पत्र दिया, और मुझसे अपना सामान बांधकर चले जाने को कहा। मेरे पास ले जाने को बहुत कम चीजें थीं। मेरे कुल सामान का वजन लगभग तीन चिन (२ चिन = १ किलोग्राम) था।

मोर्चा कमेटी उसी गांव में थी : इसलिए मैं शीघ्र ही वहां पहुंच गया। ऊ नामक एक कामरेड मुझे कमिसार के पास ले गए। मैं कुछ घबड़ाया हुआ था। वे एक च्याङशी प्रान्त के ढंग की लकड़ी की इमारत में रहते थे। इस घर में केवल दो कमरे थे—एक सोने का कमरा और दूसरा दफ्तर। हम लोगों ने सोने के कमरे से होकर प्रवेश किया। उसमें एक साधारण सी लकड़ी की खाट थी, जिस पर एक सूती चादर बिछी हुई थी। यहां तक कि तकिया भी नहीं था। मेरी घबराहट कुछ कम हुई। कमरा देखकर मैंने सोचा कि कमिसार उसी सादगी के साथ रहते होंगे जिस तरह हम सब लोग रहते हैं। दफ्तर में दो आदमी आपस में बातचीत कर रहे थे। कामरेड ऊ ने कुर्सी पर बैठे हुए आदमी की ओर इशारा किया और फुस-फुसाकर कहा : "वे ही कमिसार माओ हैं।" मैंने उनकी ओर कौतूहलपूर्ण दृष्टि से देखा। उनकी भूरे रंग की वर्दी हम लोगों जैसी ही थी। फर्क केवल इतना था कि उनके कोट की जेबें खास तौर से बड़ी मालूम पड़ती थीं। उनके काले-काले बाल

उनके गोरे रंग पर खूब खिल रहे थे। वे काफी दुबले पतले भी थे। उनकी आंखें बहुत बड़ी और बहुत तेज मालूम देती थीं। अधिक से अधिक वे चालीस वर्ष के लगते थे। अपने सामने बैठे हुए आदमी के साथ वे हाथ हिला-हिला कर बातें कर रहे थे। उनकी आवाज बहुत मधुर थी। गोकि मेरी समझ में नहीं आया कि वे किस विषय पर बातचीत कर रहे थे, फिर भी मुझे ऐसा लगा कि वे बहुत ही सच्चे आदमी हैं। कुछ देर बाद, उनसे बातचीत करने वाला व्यक्ति जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। वे भी उठ खड़े हुए। तब कहीं जाकर मैंने देखा कि वे काफी लम्बे हैं। ज्योंही वह व्यक्ति बाहर गया, कामरेड ऊ ने मेरी ओर इशारा करते हुए कमिसार माओ से कहा: "कमिसार माओ, आपके लिए एक अर्दली भेजा गया है।"

हालांकि मुझे कुछ शर्म आ रही थी, फिर भी फौजी कोर के हैडक्वार्टर में मैंने जो शिष्टाचार सीखा था, उसे मैं भूला नहीं था। मैंने एक कदम आगे बढ़कर सलाम किया और बुलन्द आवाज में कहा: "रिपोर्ट!" कमिसार माओ ने मेरी ओर देखा और उनके चेहरे पर एक दयापूर्ण मुस्कराहट खिल उठी। उनकी मुस्कराहट से मेरा सारा संकोच जाता रहा।

"तुम्हारा पारिवारिक नाम क्या है?" उन्होंने पूछा।

"छन।" मैंने एक सच्चे सिपाही की तरह उच्च स्वर में उत्तर दिया।

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"छन छाङ-फ़ङ।"

"तुम्हारी उम्र क्या है?"

"सोलह।" इस समय तक मेरा स्वर पहले से अधिक स्वाभाविक हो गया था।

"तुम लाल सेना में क्यों भरती हुए?" कमिसार माओ इस प्रकार प्रश्न कर रहे थे, मानो कोई अध्यापक परीक्षा में किसी शिष्य से प्रश्न कर रहा हो।

"लाल सेना बहुत अच्छी है। वह स्थानीय निरंकुशों से लड़ती है!" मैं अभी भी "सावधान" की स्थिति में बिलकुल तनकर खड़ा था। कमिसार माओ ने मुझसे बैठने को कहा और बड़ी दिलचस्पी के साथ पूछा: "क्या तुम्हारे गांव में भी स्थानीय निरंकुश हैं?"

"जी हां," मैंने कहा। "मुझे भी उन लोगों ने गांव से भगा दिया।"

मैंने उन्हें तफसील से बताया कि मैं कैसे अपने परिवार के साथ रहता था, कैसे मैं भाग निकला और कैसे लाल सेना में शामिल हो गया। वे बड़े ध्यान से मेरी बातें सुनते रहे, कभी-कभी सिर हिला देते थे, कभी-कभी जरा सा मुस्करा देते थे। इससे मुझे बहुत प्रेरणा मिली और मुझे लगा कि इस आदमी के साथ मेरी खूब निभेगी। इसलिए मैं उनके साथ बड़े विस्तार से बातें करता रहा। जब कामरेड ऊ ने मुझे कोहनी मारी, तब जाकर मैंने यह महसूस किया कि मैं कितनी देर से बोल रहा हूं। मैं कुछ लज्जित सा हुआ और रुक गया।

"खैर, अब तुम्हें मेहनत से काम करना चाहिए और पढ़ना

चाहिए।" कमिसार माम्रो ने कहा। कुछ देर रुककर उन्होंने पूछा : "क्या तुम अपना नाम लिख सकते हो?"

मैं उठकर खड़ा हो गया और बड़ी परेशानी में पड़ गया।

"मुझे पढ़ना-लिखना नहीं आता।" मैंने जवाब दिया।

कमिसार माम्रो मुस्कराने लगे और उठकर खड़े हो गए।

"तुम्हें पढ़ना-लिखना चाहिए, खुद अपना नाम और दूसरे लोगों का नाम लिखना सीखना चाहिए। क्या तुम्हें यह काम पसन्द है?"

"हां, पसन्द है।" मैंने जवाब दिया।

वे मुड़े और कामरेड ऊ को सम्बोधित करते हुए बोले :

"यह एक नया साथी है। तुम्हें इसकी मदद करने की पूरी कोशिश करनी होगी।" फिर वे मेरी ओर मुड़कर बोले : "अगर कोई ऐसी बात हो, जो तुम्हारी समझ में साफ-साफ न आए, तो इन लोगों से पूछ लिया करना।"

जब मैं कामरेड ऊ के साथ सीढ़ी से उतर रहा था, तो उन्होंने मुझसे कहा :

"तुम क्यों इतना ज्यादा बोले जा रहे थे? क्या तुम्हें नहीं मालूम कि वे कितने व्यस्त हैं?"

मैंने अपना सिर हिला दिया।

"वे बहुत ही व्यस्त आदमी हैं।" ऊ ने कहना जारी रखा। "याद रखो कि जिस समय वे पढ़ रहे हों, उस समय कभी मत शोर मचाना। वे हमेशा रात में देर तक काम करते हैं। तुम्हें सुबह को देर से उनका नाश्ता लाना चाहिए। समझे!"

"जी," मैंने उत्तर दिया।

मैं अत्यन्त प्रसन्न था और इतना उत्तेजित था कि मैं सारी रात झपकी तक न ले सका।

दूसरे दिन प्रातःकाल मैं एक लकड़ी की वाल्टी लेकर पानी लेने चला। कामरेड ऊ ने मुझे रोक दिया।

"तुम क्या कर रहे हो?"

"कमिसार माओ के लिए पानी लेने जा रहा हूं।" मैंने विश्वासपूर्वक कहा।

"क्या मैंने तुम्हें यह नहीं वताया है कि कमिसार माओ देर तक सोते हैं?" ऊ ने कहा।

"तुम उन्हें मत जगाना!"

मैंने सिर हिला दिया और वाल्टी रख दी।

इसके वाद, कुछ दिनों तक मैं रोज सुवह तड़के कमिसार माओ के लिए हाथ मुंह धोने का पानी उनके दरवाजे पर विना जरा भी आवाज किए रख आता था और सीढ़ी के पास एक छोटी सी कुर्सी पर बैठकर उनके हुक्म का इन्तजार किया करता था। कमिसार माओ शायद ही कभी मुझे बुलाते। लेकिन मैं वहां वहुत दिनों तक इसी प्रकार रोज-रोज बैठा करता।

एक दिन हाथ मुंह धोने के वाद, उन्होंने मुझसे पूछा:

"छन छाङ-फ़ङ, तुम वहां क्यों विना हिले-डुले बैठे रहते हो?"

मैंने कुर्सी पकड़े-पकड़े जवाव दिया: "मुझे डर है कि अगर मैं चला जाऊं तो जरूरत पड़ने पर आप मुझे नहीं ढूंढ़ पाएंगे।"

वे मुस्कराए, मानो वे किसी बच्चे से बातचीत कर रहे हों। "अब से, तुम वहां बेकार न बैठा करो! अगर तुम्हें यहां कोई काम न हो, तो जाकर दूसरों के साथ अध्ययन करो। यहां तुम्हारे लिए कोई बहुत ज्यादा काम नहीं है।"

उन दिनों, रोज-रोज लड़ाइयां होती थीं। हम लोग लगातार बढ़ते ही जाते थे। एक महीने से अधिक शायद ही किसी एक जगह ठहरते थे।

कमिसार माओ बहुत ही सादा जीवन व्यतीत करते थे, मैं शीघ्र ही उनकी आदतों से परिचित हो गया। उनकी निजी सम्पत्ति में केवल दो कम्बल, एक सूती चादर, दो भूरे रंग की वर्दियां, जो ठीक उसी प्रकार की थीं जैसी हम साधारण सिपाही पहनते थे, और एक भूरे रंग का ऊनी स्वेटर था। इसके अतिरिक्त उनके पास एक टूटा छाता था, खाने का एक कटोरा था और नौ जेब वाला एक थैला था, जिसमें वे अपने नक्शे, दस्तावेज और किताबें रखते थे। अभियान के दौरान या मार्च करते समय, वे थैला तथा छाता स्वयं लेकर चला करते थे। बाकी सामान मैं ले लेता था। जब हम लोग अपने कैम्प की जगह पहुंचते, तो मैं दो लकड़ी के तख्त ढूंढ़ निकालता, उन्हें जोड़कर जमीन पर डाल देता और उन पर दो कम्बल तथा चादर बिछा देता और उनकी वर्दियों को लपेटकर तकिया बना देता। यही उनका बिस्तर होता था।

रात को वे बहुत कम सोते थे। हमारे पास एक छोटा सा लैम्प था, मार्च के दौरान, रास्ता दिखाने के लिए इससे मशाल

का काम लिया जाता था, परन्तु जब हम लोग कैम्प में रहते तो दफ्तर में इसका प्रयोग करने के लिए इसे किसी ईंट पर रख दिया जाता था। रात्रि-भोजन के पश्चात, वे इस लैम्प को जलाते, अपना थैला खोलते और अपने नक्शे, दस्तावेज और किताबें, कागज और कूंची निकालते और कभी-कभी भोर होने तक काम करते रहते।

उस समय मैं बालक था और बिना सोए रात भर बैठा नहीं रह सकता था। जिस समय कमिसार माओ पढ़ते थे या लिखते थे, उस समय मैं उनके पास बैठा रहता था और उनकी मेज पर सिर रखकर ऊंघने लगता था तथा खर्राटे भरने लगता था। जब कभी वे मुझे जगाते थे और सोने के लिए कहते थे तो हम दोनों ही मुस्करा पड़ते थे।

गर्मियों की रात में, वे मुझे जगाकर पानी लाने को कहा करते थे।

तब मैं लकड़ी का एक छोटा सा भगोना ले जाया करता था और कुछ ठंडा पानी ले आया करता था। चूंकि हमारे पास कोई तसला नहीं था, इसलिए वे भगोने में तौलिया भिगो कर उससे अपने चेहरे को पोंछ लेते थे और कभी-कभी अपने शरीर को भी, ताकि जरा ताजगी आ जाए। तब उन्हें भूख लगती थी और मैं "चावल की सैंडविच" (चावल की दो तह जिसके बीच में पकाई हुई सब्जी रखी हो) गरम करता था जो कि तीसरे पहर के खाने के समय उनके कटोरे में बच जाती थी। कभी-कभी वे अपना कटोरा भर चावल समाप्त न कर

पाते थे, इसलिए उसे मैं वाद में खाने के लिए कागज में ढककर रख देता था। एक वार मैंने उनका छोड़ा हुआ चावल फेंक दिया, तो दूसरे ही दिन उन्होंने पूछा :

"छन छाङ-फ़ङ, वह चावल कहां है जो मैंने कल छोड़ दिया था ?"

मैंने उन्हें वताया कि मैंने तो उसे फेंक दिया। इस पर उन्होंने मेरी आलोचना की।

"चावल का एक दाना प्राप्त करना इतना आसान नहीं होता। उसे जनता पैदा करती है। भविष्य में जो कुछ मैं छोड़ दूं, उसे कभी मत फेंकना। उसे अगले भोजन के लिए रख लिया करना।"

हम लोग रोज मार्च करते थे और रोज लड़ाई करते थे। कमिसार माओ के पास इतना समय भी न होता था कि वे एक घूंट गरम पानी तक पी सकें। मैं चिन्तित हो उठता था। इसलिए मैं उनके लिए हमेशा एक थरमस ढूंढ़ने की कोशिश किया करता था। अक्सर हम किसी न किसी स्थान पर कब्जा कर लेते थे और युद्ध में दुश्मनों का माल हमारे हाथ लगता था, किन्तु कमिसार माओ अपने लिए कुछ भी न रखते थे। उन्हें जो कुछ मिलता था, उसे वे तुरन्त अपने मातहत लोगों अथवा अस्पताल को दे देते थे। १६३१ की सर्दियों में, जव हमने च्याङशी में चीआन पर कब्जा किया, तो हमें एक स्थानीय निरंकुश के मकान में, जो भाग गया था, एक थरमस मिला। इस सौभाग्य पर मैं फूला न समाया, पर मुझे भय था कि कमिसार माओ इस वात का पता लगा लेंगे। इसलिए मार्च करते

ममय, मैं किमी और मे इसे ले चलने को कहता था ताकि उन्हें यह वात मालूम न हो। इस थरमस में, मैं हमेशा उनके लिए गरम पानी नैयार रखता था किन्तु अव भी उनके लिए शीघ्रता से खाना पका देना दुष्कर कार्य था। उनके छोटे से कटोरे में वहुत चावल न आ मकता था। गत के भोजन के लिए तो इससे काम चल सकता था परन्तु मार्च के समय, वह इतना उपयोगी न सिद्ध होता था। अक्सर हम लोग युद्ध के पश्चात तुरन्त फिर मार्च करने लगते थे। फिर जव हम लोग जग आराम करते थे और खाना खाने बैठते थे, तो कमिमार माओ को फिर वही अपना ठंडा "सैंडविच" खाना पड़ता था।

नवम्वर १९३१ में, रुइचिन में केन्द्रीय मजदूर-किसान जनवादी सरकार की स्थापना हुई और वे लोकतंत्र के अध्यक्ष चुने गए। उसी समय से हम उन्हें कमिसार माओ की जगह अध्यक्ष माओ कहने लगे। पर वे अव भी भोजन के समय अपना छोटा कटोरा प्रयोग करते थे। फरवरी १९३४ में जव हमने चाङ-चओ (फ़ूच्येन प्रान्त में) पर कब्जा कर लिया, तव कहीं जाकर मैं उनके खाने के लिए तीन डिब्बे वाला एक टिफनदान ढूंढ़ने में सफल हो मका।

घर की यात्रा

जब कभी हम किसी काउन्टी या कस्बे पर कब्जा करते थे, तो अध्यक्ष माओ शत्रु के दस्तावेज तथा ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त करने के लिए लोगों को स्थानीय सरकारी दफ्तर भेज देते थे या खुद ही वहां चले जाते थे और फिर डाकखाने में जाकर अखबार और पत्रिकाएं खरीदते थे। अक्सर हम लोग खाली हाथ जाते थे और लौटते समय हमारे पास किताबों और पत्रिकाओं के पुलिन्दे होते थे। शाम को अध्यक्ष माओ उनमें लाल पेंसिल से निशान लगा देते थे। और हम लोग इन निशान लगे अंशों को कैंची से काट-काट कर रख लेते थे।

एक दिन हम लोग च्याङशी में शिनफ़ङ काउन्टी पहुंचे। हम लोग वहां पहले भी कई बार जा चुके थे, इसलिए स्थानीय जनता लाल सेना को अच्छी तरह जानती थी। सभी दुकानें खुली थीं और बहुत से लोग हमारा स्वागत करने आए थे। ज्योंही हम लोग अपने फौजी निवास स्थान पर आकर टिके, अध्यक्ष माओ ने मुझे बुलाया :

"छन छाङ-फ़ङ, चलो डाकखाने चलें!"

उस समय मेरा ऐसा ख्याल था कि डाकखाना केवल पुस्तकें खरीदने और बेचने की दुकान है।

जब हम लोग वहां पहुंचे, तो अध्यक्ष माओ किताबों और अखबारों के ढेर को उलटने-पुलटने लगे। उन्होंने कुछ किताबें और अखबार छांटकर मुझे पकड़ाए। इनका दाम चुकाने के बाद मैंने बन्डल बांधते हुए अध्यक्ष से पूछा : "अध्यक्ष माओ, डाकखाने का काम क्या है ?"

"ओह, वे बहुत सा काम करते हैं।" उन्होंने उत्तर दिया। "वे चिट्ठियां और अखबार पहुंचाते हैं। वे तार और टेली-फोन की व्यवस्था करते हैं। अगर तुम कोई पत्र घर भेजना चाहते हो, तो वे तुम्हारे लिए भेज देंगे।"

"अगर मैं कोई पत्र लिखूं, तो क्या वास्तव में वे उसे इतनी दूर मेरे घर ले जाएंगे ?" मैं सोचने लगा।

जब मैं डाकखाने से चला, तो यही विचार मेरे दिमाग में चक्कर काटता रहा। मैंने सोचा, यह तो बड़ी ही अद्भुत बात है। मैं इधर दो तीन वर्ष से घर नहीं गया था ; मैं नहीं जानता था कि मेरे पिताजी का क्या हाल है, पता नहीं, वे जिन्दा भी हैं या नहीं . . . बहुत से प्रश्न मेरे मस्तिष्क में कौंध गए। क्या ही अच्छा होता, अगर मैं एक पत्र घर भेज सकता !

जब हम अपने फौजी क्वार्टर में वापस आए, तब अंधेरा हो चुका था। मैंने किताबें और अखबार रख दिए और अध्यक्ष माओ के लिए लैम्प जला दिया। वे तुरन्त पढ़ने बैठ गए। रात का खाना लाने का समय हो गया था, लेकिन मैं अपने दिमाग

से डाकखाने का विचार न निकाल मका। मैं वहां खड़े-खड़े व्यर्थ की कल्पना में डूबा हुआ था।

"क्यों, क्या बात है?" अध्यक्ष माओ ने मुझे चिन्तित देखकर पूछा।

"अध्यक्ष माओ," मैंने कहा: "क्या वे मचमुच मेरे घर पत्र भेज सकते हैं?"

"क्या मतलब?" उन्होंने पूछा।

"डाकखाना।"

"बेशक, वे भेज सकते हैं। तुम्हारा घर सोवियत क्षेत्र (उस समय का मुक्त क्षेत्र सोवियत क्षेत्र कहलाता था) में है।"

मेरे मन में क्या था, यह उन्होंने भांप लिया।

"क्या तुम अपने घर पत्र भेजना चाहते हो?" उन्होंने पूछा।

मैंने सिर हिलाया और दबी जबान से बोला: "मैं अपने घर एक पत्र लिखना चाहता हूं, किन्तु..."

"तुम अब भी नहीं लिख सकते!" अध्यक्ष माओ ने मेरा वाक्य पूरा कर दिया। "आओ, मैं तुम्हारे लिए लिख दूंगा।"

मैं उनके इस सुझाव पर खुशी से नाच उठा। दूसरी बार विचार करने पर, मुझे कुछ बेचैनी हुई, क्योंकि मैं जानता था कि वे बहुत व्यस्त हैं और इससे उनका बहुमूल्य समय नष्ट होगा। पर वे मुझे उत्साहित करते हुए कहते ही रहे:

"तुम अपने पिताजी को क्या बताना चाहते हो?" यह कहते-कहते, उन्होंने अखबारों को एक किनारे हटा दिया और पत्र लिखने का कागज और ब्रुश निकाला।

"मैं. . ." मैं अपने पिताजी को क्या बताऊं? इस बारे में मैंने कुछ सोचा ही न था। इसलिए मैंने कहा :

"अध्यक्ष माओ, जो आप ठीक समझें लिख दें। मैं तो केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि लाल सेना में, मैं बहुत अच्छी तरह हूं। मुझे आप के साथ बहुत अच्छा लगता है। बहुत अच्छा, बहुत ही अच्छा। बस और कुछ नहीं!"

उन्होंने मेरे घर का पता और मेरे पिताजी का नाम लिख लिया। उसके बाद मैं खाना लेने चला गया। जब मैं खाना लेकर वापस आया, तो देखा कि अध्यक्ष माओ अपना एक हाथ गाल पर रखे और दूसरे में ब्रुश लिए विचारमग्न बैठे हैं। मैं जानता था कि इस समय उनसे खाने के लिए कहना उचित नहीं है, इसलिए मैंने चुपके से टिफनदान मेज पर रख दिया और बाहर निकल गया।

मैं आकर अपने मुलायम पुआल के बिस्तर पर लेट गया। कृतज्ञता के बोझ से मैं इतना दबा हुआ था कि मैं सो तक न सका। मैं करवटें बदलता रहा और उनकी दयालुता के विषय में सोचता रहा। मैं, एक मामूली किसान का बेटा, अपनी ही सेना में शामिल हो गया था और लोकतंत्र के अध्यक्ष का अंगरक्षक बन गया था (उस समय मैं उनका अर्दली नहीं, बल्कि अंगरक्षक था)। और अब हमारे अपने अध्यक्ष माओ खुद ही मेरा पत्र लिख रहे थे। इन्हीं पिछले कुछ वर्षों में, अध्यक्ष माओ मेरे लिए पिता के समान हो गए थे और मेरे दैनिक जीवन तथा प्रशिक्षण की देखभाल करते थे। मैं इस दयालु अध्यापक



“तुम अपने पिताजी को क्या बताना चाहते हो ?” (पृष्ठ १७)

को कभी नहीं भूलूंगा। इन्हीं बातों पर सोचते-सोचते, मेरे गाल पर आंसू ढुलक पड़े और फूस के बिछौने पर टपटप गिरने लगे। रात का समय था! मैं बाहर निकल पड़ा। अध्यक्ष माओ के कमरे में रोशनी चमक रही थी। वे अभी भी काम कर रहे थे। उस रात मैं अच्छी तरह नहीं सो सका।

दूसरे दिन प्रातःकाल जब मैं नाश्ता लेकर उनके दफ्तर के कमरे में आया तो अध्यक्ष ने मुझे वह पत्र दिया जो उन्होंने मेरे लिए लिखा था।

"यह रहा खत! तुम देख लो, यह ठीक है या नहीं?"

मैंने फौरन खाने का टिफनदान रख दिया और दोनों हाथों से खत ले लिया और बेचैनी से कहा: "बेशक, यह ठीक ही होगा।"

"डाकखाने जाओ और इसे डाल दो।" अध्यक्ष माओ ने कहा।

"आपका नाश्ता तैयार है।" मैंने उन्हें याद दिलाया।

"उसकी चिन्ता न करो, जल्दी जाओ!"

मैंने उन्हें सलाम किया, और दफ्तर से चला गया।

जब मैं लौटा, अध्यक्ष ने मेरी ओर देखा। "क्या अब तुम्हें कुछ राहत मिल गई है?" उन्होंने कहा। "या अब भी घर के बारे में सोच रहे हो?"

"जी नहीं!" मैं मुस्कराया। "चाहे आप मुझे हुक्म दें, तो भी मैं नहीं जाऊंगा।"

१६३३ के पतझड़ में, जब हमारी सेना च्येनछाङफ़ू पर

आक्रमण कर रही थी, अध्यक्ष माओ तथा केन्द्रीय कमेटी के कुछ अन्य सदस्य क्वाङछाङ पहुंचे। यह जगह मेरी अपनी काउन्टी निङनू के बिलकुल निकट ही थी। अचानक मेरे मन में घर जाने का विचार पैदा हो गया। क्वाङछाङ पहुंचते ही मैंने अध्यक्ष माओ से कहा :

"मैं क्वाङछाङ से भलीभांति परिचित हूं। अगर मुझे अपने घर वापस जाना पड़े तो मुझे मालूम है वहां किस प्रकार पहुंचना चाहिए।"

अध्यक्ष माओ हंस पड़े। "इतनी जल्दबाजी मत करो! जरा सब्र करो! जितना ही हम लोग आगे बढ़ेंगे, उतना ही तुम्हारे घर के निकट पहुंचते जाएंगे।"

"सचमुच?" मैं चिल्ला पड़ा। मैं इतना खुश हुआ कि मेरा दिल बल्लियों उछलने लगा।

दो या तीन दिन बाद, अध्यक्ष और मैं उसी काउन्टी में पहुंच गए, जिसे मैं एक जमाने पहले छोड़ चुका था। उस समय दोपहर के दो बजे थे। अध्यक्ष माओ कामरेड ली फ़ू-छुन के साथ ठहरे हुए थे, जो उस समय च्याङशी के प्रान्तीय पार्टी-सेक्रेटरी थे। जब हम लोग वहां टिक गए, तो अध्यक्ष ने मुझे बुलाया और पूछा : "घर जाना चाहते हो?"

"...जी हां!"

"अच्छी बात है!" उन्होंने जवाब दिया। "इन कुछ दिनों में, मुझे बहुत सी बैठकों में शरीक होना है। तुम घर जाओ और वहां की हालत देख आओ।" वे जरा रुके, फिर मेरी ओर

प्रश्नसूचक दृष्टि से देख कर बोले, "बोलो, कितने दिन चाहते हो?"

मैं उत्तेजित हो उठा। मैं उनके प्रश्न का उत्तर अच्छी तरह न दे सका। अपने बड़े-बड़े हाथों को फैलाकर उन्होंने पूछा: "दस दिन? क्या ख्याल है?"

"ठीक है," मैंने कहा। मैं तुरन्त चल देना चाहता था। परन्तु जैसे ही मैं जाने को हुआ, मैंने अचानक सोचा: अगर मैं चला जाऊंगा, तो उनके भोजन तथा पीने के पानी का प्रबन्ध कौन करेगा? "जी नहीं, अध्यक्ष, मैं नहीं जाऊंगा!" मैंने कहा।

"क्यों, अब क्या हुआ?" अध्यक्ष माओ ने मेरी ओर कौतूहलपूर्ण दृष्टि से देखा।

"अगर मैं चला जाऊंगा, तो आपका खाना-पीना कौन तैयार करेगा?"

वे मुस्कराए और मेरे पास आकर अपने दोनों हाथ मेरे कन्धों पर रखकर बड़ी दयालुता से बोले: "जाओ और अपने घरवालों को देख आओ। जब तुम वापस आओगे, तो ज्यादा अच्छी तरह काम कर सकोगे। तुम्हारा परिवार अब सोवियत क्षेत्र में है।" वे जरा रुके। फिर बोले: "यहां मत वापस आना। सीधे छाङतिङ जाना। मैं वहीं तुम्हें मिल जाऊंगा।"

मैंने सिर हिलाकर हामी भरी। पर जाने में मैं अब भी संकोच कर रहा था। मेरे हृदय में अंतर्द्वंद्व चल रहा था।

फिर मैं बेहद उत्तेजित हो अपने घर के लिए रवाना हो

गया। घर... अध्यक्ष... अध्यक्ष... घर। सूर्यास्त में धान के खेत फूलों की तरह खूबसूरत नजर आ रहे थे। मैं लगातार सोचता रहा कि मेरा घर अब सोवियत क्षेत्र बन गया है। क्या इससे भी अच्छी कोई जगह हो सकती है? फिर मैं अध्यक्ष माओ के बारे में सोचने लगा। वे, निस्संदेह, गरीब जनता के एक महान नेता हैं। क्या कोई उनसे भी अच्छा आदमी है?

जिस समय मैं उस छोटी सी नदी के पास पहुंचा, जहां मैं बचपन में गाय चराया करता था। उस समय वहां घोर अन्धकार छाया हुआ था। नदी के उस पार लिङनाओ गांव, जहां मेरा जन्म हुआ, दिखाई दे रहा था। नदी के किनारे बहुत से लोग नाव का इंतजार कर रहे थे। मैं ठसाठस भरी हुई एक नाव पर सवार हुआ। मेरी सैनिक वर्दी तथा रिवाल्वर ने जो मैं अपने साथ ले जा रहा था, देहाती लोगों का ध्यान आकर्षित कर लिया। वे लगातार मेरी ओर देखते रहे और आपस में कानाफूसी करते रहे।

"माफ कीजिये," मैं बोल उठा, "क्या आप इस गांव के छन थाए-श्याङ (मेरे पिताजी का नाम) को जानते हैं?"

क्षण भर के लिए सब ने मौन धारण कर लिया। मैं चिन्तित हो उठा। तब एक आवाज आई:

"हां, छन थाए-श्याङ नामक एक आदमी है।"

"अरे, तुम...!" एक अधेड़ आदमी ने मेरे बचपन का नाम लेकर मुझे पुकारा।

"हां, हां, मैं ही हूं!" मैं उत्तेजित होकर चीख पड़ा। उनसे

हमारी पुरानी जान-पहचान थी। अगर मैं नाव में न होता, तो मैं उछल पड़ा होता।

ज्योंही बातचीत शुरू हुई, नाव में सभी लोग उत्साहित हो उठे। वे तुरन्त बात करने लगे, सभी मुझे समाचार सुनाने के लिए उत्सुक हो उठे : कैसे गांव लाल हो गया ; कैसे जमींदारों और स्थानीय निरंकुशों को उखाड़ फेंका गया ; कैसे जमीन का बंटवारा हुआ और कैसे मेरे पिताजी को अपना हिस्सा मिला. . . बातचीत करते-करते हम नदी के दूसरे किनारे पर पहुंच गए।

हम सामने के तट पर पहुंचे, सारी भीड़ मेरे साथ मेरे घर गई। उस शाम ऐसा लगता था मानो मेरे घर कोई ग्राम सभा हो रही हो। गांव का गांव वहां मौजूद था। गांव सोवियत के अध्यक्ष भी वहां मौजूद थे। उन्होंने मुझसे अनुरोध किया कि मैं उन्हें यह बताऊं कि लाल सेना में जीवन कैसा है। जिस समय मैं बोल रहा था, मेरे पिताजी बैठे हुए थे और मुस्करा रहे थे। यह पहला मौका था जब मैंने उन्हें इतने संतोष के साथ मुस्कराते हुए देखा था।

जब उन्होंने सुना कि मैं अध्यक्ष माओ का अंगरक्षक हूं, तो उन्हें और भी ज्यादा दिलचस्पी हुई और उन्होंने आग्रह किया कि मैं उन्हें अपने अध्यक्ष के बारे में कुछ और बताऊं।

"अध्यक्ष माओ ठीक वैसे ही हैं जैसे हम साधारण लोग!" मैंने कहा।

पर वे इससे संतुष्ट न हुए। उन्होंने आग्रह किया कि मैं

उनके बारे में कुछ और बताऊं। उस रात हम लोग तब तक बातें करते रहे जब तक कि मुर्गे ने दो बार बांग न दे दी।

नवें दिन मैं अध्यक्ष माओ से मिलने छाङतिङ के लिए रवाना हो गया। पूछताछ करने पर मुझे बताया गया कि वे केन्द्रीय अस्पताल में हैं। मैं चिन्तित हुआ। क्या वे बीमार हैं? मैं लपककर अस्पताल गया, लेकिन वहां देखा कि वे स्वस्थ हैं। चिन्ता की कोई बात न थी।

यह देखकर कि मैं वापस आ गया हूं, वे बहुत खुश हुए। मैंने उन्हें मूंगफली और शकरकन्द भेंट किए जो मेरे पिताजी ने उनके लिए दिए थे। उन्होंने मुस्कराकर ये उपहार स्वीकार कर लिए और पूछा: "तुम्हारे परिवार के क्या हालचाल हैं?"

"अब उनका जीवन बहुत ही सुखमय है!" मैं अपनी उत्तेजना को रोक न सका और सारा हाल विस्तार से सुना दिया। "हमारे गांव में अब एक सोवियत कायम हो गई है; सभी जमींदारों और स्थानीय निरंकुशों को कुचल दिया गया है। मेरे परिवार को तीन कमरे और सोलह मू (६ मू = १ एकड़) जमीन मिली है।"

अध्यक्ष माओ ने स्वीकृति में सिर हिलाया और कहा: "अच्छी बात है!" तब उन्होंने पूछा: "तुम्हारे ग्राम सोवियत का अध्यक्ष अमीर आदमी है या गरीब आदमी?"

"एक गरीब आदमी, जिसने उसी प्रकार मुसीबतें झेली हैं जिस प्रकार पहले मेरे परिवार ने झेली थीं।"

वे गांव की हालत के बारे में और ज्यादा जानना चाहते थे। अन्त में उन्होंने कुछ गम्भीरता के साथ और कुछ मजाक करते हुए पूछा: "क्या तुम्हारे पिताजी ने तुम्हारे लिए कोई माताजी ढूंढ़ ली हैं?"

उनकी याददाश्त बहुत अच्छी थी। जब मैं उनसे पहली बार मिला था, तब मैंने उन्हें बताया था कि मेरी माताजी परलोक सिधार चुकी हैं।

"जी हां, पड़ोसियों ने मुझे बताया था कि यह एक नए ढंग का स्वतंत्र चुनाव का विवाह था।" अध्यक्ष माओ को यह सुनकर बहुत संतोष हुआ और उनके चेहरे पर मुस्कराहट झलक पड़ी।

लम्बे अभियान का श्रीगणेश

१६३८ की गर्मियों के शुरू में, शाचश्रोपा में वित्तीय तथा आर्थिक प्रश्नों पर एक सम्मेलन हुआ जिसकी सदारत अध्यक्ष माओ ने की। इसके पश्चात, वे ग्रामीण परिस्थितियों की छानबीन करने के लिए च्याङशी प्रान्त की रुइचिन काउन्टी के ऊयाङ कस्बे में गए, जो उस समय केन्द्रीय सोवियत क्षेत्र में उत्पादन की दृष्टि से एक आदर्श जिला था। वहां से वे ह्वेइछाङ काउन्टी गए जिसमें उस समय क्वाङतुङ-च्याङशी प्रान्तीय पार्टी कमेटी का प्रधान कार्यालय स्थित था। वहां वे कुछ दिनों तक ठहरे। तब वे ख्वीतू के लिए रवाना हुए। अगस्त में, वे ख्वीतू से रुइचिन के निकट काश्रोपीनाश्रो लौट कर आए, जहां उस समय वे नियुक्त किए गए थे। कई महीनों तक वे उन स्थानीय क्षेत्रों में, जहां वे जाते थे, जिम्मेदार कार्यकर्ताओं की बैठकें बुलाने में या गांवों में छानबीन करने में बेहद व्यस्त रहते थे।

काश्रोपीनाश्रो लौटने के बाद जब शत्रु ने "घेरा डालने" की पांचवीं मुहीम शुरू की, तो हालत नाजुक हो गई थी। शत्रु के विमान दिन में चौबीसों घंटे सिर पर मंडराते रहते थे,

वमवारी किया करते थे और अन्धाधुन्ध हमले किया करते थे।

उन दिनों अध्यक्ष माग्रो पहले से भी अधिक व्यस्त रहते थे। वे कामरेड श्ये च्वे-चाए के साथ एक पहाड़ी पर एक वड़े मन्दिर में रहते थे। दिन के समय वे सैनिक परिषद की बैठकों में शरीक होने के लिए नीचे उतरकर लगभग तीन ली जाते थे। जव वे वापस आते थे, तो वे वहुत देर तक बैठे-बैठे लिखा करते थे। कई बार ऐसा हुआ कि वहुत रात बीते, वे मुझे अपनी लिखी हुई चीजें उपाध्यक्ष चग्रो ऐन-लाइ तथा दूसरे नेताओं को देने के लिए नीचे भेजते थे। ये पांडुलिपियां क्या थीं, यह मुझे तव तक न मालूम हुआ, जव तक कि ये लाल और हरे कागज की पुस्तिकाओं के रूप में छपकर प्रकाशित न हो गईं। ये पांडुलिपियां छापेमार लड़ाई में कार्यनीति के प्रश्नों से संबंधित थीं।

प्रति दिन वहुत से लोग पहाड़ी पर वहां आते थे, जहां हम लोग रहते थे। अध्यक्ष की तबीयत वहुत अच्छी नहीं थी। अक्सर वे कुछ भी नहीं खाते थे और वहुत कम सोते थे। उनका वजन वहुत घट गया था, हम लोग उनके अंगरक्षक बेहद चिन्तित थे। पर हम कर ही क्या सकते थे? जव भी हम उन्हें यह राय देते कि उन्हें आराम करना चाहिए, वे अपनी मेज पर पड़े दस्तावेजों के ढेर की ओर संकेत करके इस प्रकार बोलते, मानो वे हम से सलाह ले रहे हों, "ज्योंही मैं इन्हें समाप्त कर लूंगा, मैं विश्राम करूंगा। क्या यह ठीक रहेगा?" किन्तु इन दस्तावेजों का कोई अन्त न होता, क्योंकि वे लगातार

आते ही रहते। हम लोगों ने सोचा कि उनके लिए एक डाक्टर रखना चाहिए।

एक दिन रात को भोजन के बाद, जब अध्यक्ष विचार-मग्न हो, मन्दिर के सामने सीढ़ियों पर खड़े थे, केन्द्रीय प्रवन्ध-विभाग के संचालक य्वान फ़ू-छिङ और केन्द्रीय अस्पताल के जिम्मेदार कामरेड वहां आ पहुंचे, उन्हें देखकर मैं वहुत खुश हुआ। मुझे विश्वास था कि अध्यक्ष के लिए डाक्टर बुलाने के सम्बन्ध में ही, वे यहां आए हैं। जहां तक मैं समझता था, किसी भी आदमी को, जो बीमार हो, चाहे वह कोई भी हो, डाक्टर की आज्ञा का पालन करना ही पड़ता है।

हाथ मिलाने के वाद, उन्होंने बातचीत शुरू की। मैं वगल में खड़ा-खड़ा इस वात की तैयारी कर रहा था कि अगर मौका मिले तो अध्यक्ष के लिए कोई अच्छा डाक्टर बुलाने के लिए कह दूं।

संचालक य्वान ने पहले एक साईस ढूंढ़ने का प्रश्न उठाया। और डाक्टर? मैं अधीर हो रहा था। वहुत देर तक बातचीत करने के वाद य्वान ने कहा:

"अध्यक्ष, हमने आपके लिए एक अच्छा डाक्टर ढूंढ़ा है। वे आपके साथ जाएंगे।"

मैं खुशी से लगभग उछल पड़ा। मैंने दिल में सोचा कि अब ठीक रहेगा। "वहुत अच्छा!" मेरे मुख से अनायास ही निकल पड़ा। "उन्हें जल्दी से अध्यक्ष के पास भेज दीजिये!" वाद में मैंने यह महसूस किया कि अपने उच्च अधिकारियों

की उपस्थिति में मुझे इस प्रकार नहीं बोलना चाहिए था। मैं लज्जित हो गया।

अध्यक्ष माओ ने पहले मेरी ओर देखा, फिर संचालक य्वान और उनके साथी की ओर देखकर एक सिगरेट जलाते हुए, उन्होंने धीरे-धीरे बोलना आरम्भ किया : "मेरा खयाल है, डाक्टर की कोई जरूरत नहीं। एक नर्स से काम चल जायगा। सिर्फ तापमान लेने तथा सुई लगाने का ही तो काम है . . ."

"अध्यक्ष," य्वान ने उन्हें अपनी बात समाप्त करने न दी, "आपकी वर्तमान हालत देखते हुए, मैं सोचता हूं कि यहां एक डाक्टर का ही रहना बेहतर होगा, और हमने पहले ही . . ."

"नहीं," अध्यक्ष माओ ने रोका। "सेना को डाक्टरों की जरूरत है। हमारे पास बहुत कम डाक्टर हैं। मैं कैसे सिर्फ अपने लिए ही एक डाक्टर रख सकता हूं?" फिर वे मुस्कराए "मेरा स्वास्थ्य बुरा नहीं है। क्या एक नर्स से काम नहीं चल जायगा?"

वे दोनों कुछ और कहना चाहते थे। पर अध्यक्ष के स्वभाव से वे भलीभांति परिचित थे, इसलिए उन्होंने अधिक आग्रह नहीं किया। इसके बाद शीघ्र ही वे चले गए।

कुछ दिनों बाद, अठारह वर्ष का एक नौजवान एक थैला लिए हमारे पास आया, जिस पर लाल क्रास बना हुआ था। वह मेडिकल अर्दली चुङ फ़ू-छाङ था जो लम्बे अभियान में लगातार अध्यक्ष माओ के साथ रहा।

लगभग उसी समय, हमें अध्यक्ष माओ से हुक्म मिला

कि हम मोर्चे पर जाने की तैयारी करने के लिए कम से कम सामान से लैस हों (हमें यह नहीं मालूम था कि उत्तरी शेनशी जाने के लिए लम्बे अभियान की तैयारी हो रही है)। हम अंगरक्षकों को इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ कि इस बार हल्के साज-सामान का हुक्म इतना सख्त क्यों है? यहां तक कि अध्यक्ष ने भी अपना नौ-जेबी थैला इस बार अपने साथ नहीं रखा। उनके सारे साज-सामान में केवल दो कम्बल, एक सूती चादर, एक मोमजामा, एक फटा-पुराना ओवर-कोट, एक टूटा छाता और किताबों का एक बन्डल था।

"हम लोग मोर्चे पर लड़ने जा रहे हैं!" चारों ओर इसी विषय पर गरमागरम बहस छिड़ी हुई थी।

सितम्बर के अन्त में, हम लोग अध्यक्ष माओ के साथ काओ-पीनाओ से य्वीतू के लिए रवाना हुए।

१८ अक्तूबर १९३४, चीनी क्रान्ति के इतिहास में एक अविस्मरणीय दिन था। उस दिन तीसरे पहर पांच बजे के थोड़ी ही देर बाद, हम लोग लगभग बीस आदमियों ने अध्यक्ष माओ के साथ य्वीतू से कूच किया। लम्बे अभियान में यह पहला कदम था।

य्वीतू के उत्तरी फाटक से निकल कर हम लोग पश्चिम की ओर चले और एक चौड़ी नदी के किनारे-किनारे उसके ऊपरी भाग की ओर बढ़े। नदी के पीले पानी में बुलबुले उठ रहे थे और वह ऐसे गरज रही थी, मानो कूच के लिए बिगुल बज रहा हो।

सूर्यास्त के साथ-साथ हल्की ठंढी-ठंढी हवा चलने लगी। अध्यक्ष ने ओवरकोट नहीं पहना था। वे केवल अपनी भूरे रंग के कपड़े की वर्दी पहने हुए थे और लाल सेना की टोपी लगाए हुए थे। सबसे आगे-आगे, लम्बे-लम्बे डग भरते हुए, वे दृढ़ता के साथ आगे बढ़ते जा रहे थे।

जब हम लोग य्वीतू से बीस ली दूर एक स्थान पर पहुंचे, तो हमने चिल्लाने की आवाज सुनी और दूर पर प्रकाश की एक रेखा देखी। मेडिकल अर्दली की और मेरी समझ में न आया कि आखिर यह सब क्या है!

"वहां हमारी सेनाएं हैं।" अध्यक्ष माओ ने कहा।

हमारी सेनाएं? मैं सोचने लगा। जब हम य्वीतू से चले थे, तो हमने एक भी सैनिक नहीं देखा था। अचानक यहां इतने सारे अपने सिपाही कैसे आ गये? मैं हैरान रह गया।

जब हम लोग तट के निकट पहुंचे, हमने नदी के दोनों किनारों पर बहुत बड़ी संख्या में लाल सेनाएं देखीं। चारों ओर कोलाहल मचा हुआ था। हजारों मशालें इधर-उधर दिखाई दे रही थीं। लोग गा रहे थे, हंस रहे थे और एक छोर से दूसरे छोर तक चिल्ला रहे थे। उस चौड़ी नदी पर पुल बनाने के लिए पीपे डाल दिए गए और सेनाएं लगातार मार्च करती हुई नदी पार करने लगीं।

मैं पुलकित हो उठा और अध्यक्ष के पास लपक कर जा पहुंचा। "यह क्या बात है, हमारे पास इतनी सेनाएं कहां से आ गईं?" मैंने बुलन्द आवाज में उनसे पूछा। वे मुस्कराने लगे।

"केवल इतनी ही सेनाएं नहीं हैं", उन्होंने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया। "इन से आगे और भी बहुत सी सेनाएं जा चुकी हैं।"

हम लोग अध्यक्ष माओ के पीछे-पीछे पुल तक गए। घुड़-सवारों, पैदल सिपाहियों, माल ढोने वालों, तथा उन ग्रामीण जनों का, जो सेना को विदाई देने आए थे, एक अपार जन-समूह इस पार से उस पार लगातार चला जा रहा था। अध्यक्ष दूसरों को रास्ता देने के लिए कभी-कभी रुक जाते थे।

आधी रात के करीब, हमें एक स्ट्रेचर मिला, जिस पर सामने की ओर से एक घायल सिपाही आ रहा था। सड़क पर देहाती लोग बेहद उत्तेजित थे।

"कूफी और शिनथ्येन पर शीघ्र ही कब्जा हो जायगा!" उन्होंने हमें बताया।

अध्यक्ष माओ स्ट्रेचर तक गए और घायल सिपाही के शरीर पर ओढ़ी चादर को जरा सा खींच दिया। "क्या तुम्हारा घाव बहुत गहरा है, कामरेड?" उन्होंने नम्रता से पूछा।

स्ट्रेचर पर पड़ा आदमी मशाल की रोशनी में अध्यक्ष माओ को देखता रहा। स्पष्ट था कि वह द्रवित हो गया था। "जी नहीं, बहुत गहरा नहीं है!" उसने उत्तर दिया। "शीघ्र ही मैं मोर्चे पर वापस चला जाऊंगा!"

जब स्ट्रेचर आगे निकल गया, तो अध्यक्ष ध्यानमग्न हो उस ओर देखते रहे।



"क्या तुम्हारा घाव बहुत गहरा है, कामरेड?" (पृष्ठ ३२)

पौ फटने से ठीक पहले ग्रामीण जनों का एक दल हमारा रास्ता काट कर निकल गया। उनमें से लगभग हरेक एक भारी बोरा लादे हुए था।

"तुम लोग कहां से आ रहे हो?" मैं उनसे पूछने के लिए आगे बढ़ा।

"कूफी और शिनथ्येन पर कब्जा हो गया!" वे एक स्वर में बोले।

"इसमें क्या है?"

"नमक! यह उतना ही कीमती है जितना सोना!"

वे पुराने सोवियत क्षेत्र के मार्गदर्शक थे और कूफी और शिनथ्येन से नमक ढोकर वापस ले जा रहे थे। उन्हीं दिनों सोवियत क्षेत्रों में नमक की सख्त कमी थी।

अध्यक्ष माओ ने उनकी ओर हाथ हिलाया। "इस बार तुम लोगों को नमक के लिए चिन्ता नहीं करनी पड़ेगी।" उन्होंने कहा।

पौ फटने के समय, सड़कों पर लोगों की एक अपार भीड़ उमड़ पड़ी। दीवारों पर, पेड़ों पर और गांव में सभी जगहों पर पोस्टरों द्वारा हमारी विजय के समाचार की घोषणा की जा रही थी : "हमारी सेनाओं ने कूफी और शिनथ्येन पर कब्जा कर लिया है!" और "अपनी पहली महान विजय का उत्सव मनाओ!"

म्याओ जाति के क्षेत्र में प्रवेश

नवम्बर १९३४ में, लाल सेना ने श्याङ नदी पार कर दुश्मन की चौथी नाकेबन्दी पंक्ति को तोड़ दिया और वह क्वाङशी और हुनान की सरहद पर मुख्य मार्ग पर पहुंच गई। जिस समय हम वहां पहुंचे, उस समय घोर अन्धकार था। हम लोग अधिकतर रात में ही मार्च करते थे ताकि शत्रु के विमान हमें देख न पाएं। भोर के समय हम लोग एक छोटे से पहाड़ी गांव में जा पहुंचे।

हम लोग रास्ते भर मार्च करते रहे थे और लड़ते रहे थे। अध्यक्ष माओ को एक वक्त भी भरपेट भोजन न मिला था। ज्योंही सेनाएं विश्राम करने लगीं, मैं सह-अंगरक्षक कामरेड चङ श्येन-ची को साथ लेकर खाने के लिए कोई चीज ढूंढ़ने निकला। वह एक छोटा सा गांव था और वहां के निवासी गरीब थे। केवल एक ही चीज हम लोग खरीद सके और वह था बीस चिन शकरकन्द। मैं उसे पका कर अध्यक्ष के पास ले आया। वे एक छोटे से स्टूल पर बैठ कर अपने चारों ओर बैठे हुए अंगरक्षकों तथा साईस से गपशप कर रहे थे। "श्याङ नदी पार करने में हमने अत्यन्त महान सफलता प्राप्त

की।" वे कह रहे थे। सचमुच, पिछली रात हमने जो श्याङ नदी पार की थी, वह कोई साधारण वीरता का काम नहीं था।

चङ श्येन-ची ने और मैंने हाथ में मिट्टी का वर्तन लेकर वताया कि खाना तैयार है। हम लोग अध्यक्ष माओ के पास गए और उनसे खाने के लिए कहा। एक शकरकन्द लेकर वे खाने लगे। तव उन्होंने कहा :

"हम लोग शीघ्र ही उस इलाके में पहुंच जाएंगे जहां म्याओ जाति के लोग रहते हैं!"

म्याओ जाति का इलाका! यह तो विल्कुल एक नई वात थी। मुझे याद आया कि एक वार राजनैतिक अध्ययन की एक कक्षा में, एक अध्यापक ने हमें वताया था कि म्याओ जनता अल्पसंख्यक जाति है, वह अपनी संस्कृति तथा अर्थतंत्र में पिछड़ी हुई है। उनके रीति-रिवाज हमसे विलकुल भिन्न हैं और श्वेत सेना (क्वोमिन्ताङ और युद्ध-सरदारों की सेना) द्वारा उनका अधिक क्रूरता से दमन किया गया है। लेकिन वे देखने में कैसे लगते हैं, यह अव भी हमारे लिए एक रहस्य था।

"वे भी हम हान लोगों की ही तरह हैं," अध्यक्ष कहते ही गए। "वे भी श्वेत सेना के दमन के विरुद्ध क्रान्तिकारी आन्दोलन चलाना चाहते हैं। इसलिए वे हमारे अच्छे भाई हैं।"

अध्यक्ष माओ ने हमें वहुत विस्तार से श्वेत सेना द्वारा म्याओ जनता के दमन की कहानी, म्याओ जाति के रीति-

रिवाज, आदतों, धार्मिक विश्वासों इत्यादि के बारे में बताया। उन्होंने हम लोगों से कहा कि हम लोगों को म्याओ क्षेत्र में प्रवेश करने के बाद और भी अधिक सख्ती से अपने काम के नियमों का पालन करना चाहिए। उन्होंने हमें सावधान किया कि हमें इधर-उधर नहीं मंडराना चाहिए और दूसरों की चीजों से हाथ नहीं लगाना चाहिए। उन्होंने हमें बताया कि म्याओ स्त्रियां सोवियत क्षेत्र की स्त्रियों से भिन्न हैं। सोवियत क्षेत्र की स्त्रियां लाल सैनिकों के साथ भाइयों जैसा व्यवहार करती हैं और दरअसल, उन्हें "भाई" कह कर पुकारती भी हैं। म्याओ स्त्रियां इस प्रकार के सम्बन्ध की आदी नहीं हैं। उनके दिमाग में अब भी सामन्ती विचार भरे हुए हैं।

अध्यक्ष की बात सुनकर हमें ऐसा लगा, मानो हम किसी दुविधा में पड़ गए हों! क्या हम लोग किसी "निषिद्ध क्षेत्र" में जा रहे हैं? जब हम अपने खेमे लगाएंगे और हमें कुछ चीजें उधार लेने की जरूरत पड़ेगी, तो हम क्या करेंगे? यह सोच कर मैंने अध्यक्ष माओ से पूछा कि "क्या वहां किवाड़ें मांगना उचित होगा?" आम तौर से हम लोग जहां भी रात भर के लिए रुकते थे, सोने के लिए लकड़ी की किवाड़ें मांग लाते थे।

"नहीं, यह नहीं हो सकता!" उन्होंने दृढ़ता से कहा। उन्होंने मुस्कराते हुए फिर कहा: "क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया था कि दूसरों की चीजों से हाथ नहीं लगाना चाहिए।"

"तब आप किस चीज पर सोएंगे?"

"उनकी किवाड़ों को छोड़, किसी भी चीज से काम चल जाएगा।"

मैं कुछ निराश सा हो गया और आगे कुछ भी न बोल सका। मैंने मन ही मन सोचा, म्याओ जनता हम हान लोगों से बिलकुल भिन्न है। वे निश्चय ही बड़े तेज मिजाज के लोग होंगे। ठीक उसी समय कोई खर्राटे लेने लगा। वह माल ढोने वाला ह्वाङ इङ-हो था। वह अध्यक्ष के पास ही सो गया था ; उसके हाथ में अब भी बचा हुआ आधा शकरकन्द था।

यह देख कर अध्यक्ष माओ ने मुस्कराते हुए कहा : "यह ठीक है, पेट भर खाना खाने के बाद हम सब लोगों को सोना चाहिए। आज रात को हमें आगे मार्च करना है।"

हालांकि नींद मुझे बेहद सता रही थी, फिर भी मैं जागता ही रहा। ह्वाङ इङ-हो को छोड़ कर बाकी सभी लोग जाग रहे थे। जैसे ही सबेरा हुआ, शत्रु-विमान अपनी मृत्यु का संदेश लेकर आ पहुंचे और बार-बार बम वर्षा करने लगे, जिससे लोगों के घर बरबाद हो गए और खेतों में लहलहाते धान के पौधे नष्ट हो गए।

उसी दिन सायंकाल हमने अपना अभियान फिर शुरू कर दिया। नवम्बर की रात थी। कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। चांद का कहीं पता न था।

रात भर हम लोग पहाड़ों पर घिसटते रहे, कभी किसी पहाड़ पर चढ़ते तो कभी किसी घाटी में उतर जाते। कभी हम लोग हाथ पांव के बल सीधी खड़ी ढालों पर चढ़ते और

दूसरी ओर घिसटते हुए उतर जाते। जब हम किसी पर्वत के शिखर पर पहुंचते, तो ऐसा लगता, मानो आकाश हमारे सिर के ठीक ऊपर है। तब अध्यक्ष चारों ओर नजर डालते और आगे बढ़ने से पहले देख लेते कि सब लोग पहुंच गए हैं या नहीं।

अगले दिन भोर के समय, हम लोग एक पर्वत के नीचे उतरे। हमारे ठीक सामने, एक छोटे से पहाड़ के पास ही लकड़ी के चित्र-विचित्र मकान खड़े थे ऐसे मकान जिन्हें हमने पहले कभी नहीं देखा था। वे न तो एक मंजिले थे, न दो मंजिले, बल्कि वे ऐसे टोकरों की भांति थे, जो हवा में लटके हुए हों। अध्यक्ष माओ ने हमें बताया कि हम लोग म्याओ इलाके में पहुंच गए हैं।

जब हम एक पहाड़ी गांव में पहुंचे तो सूरज उग रहा था। सुबह का कुहरा छंटते ही गांव के मकान साफ नजर आने लगे। पहाड़ी ढलान उनके पिछवाड़े की दीवाल का काम दे रही थी। दरअसल वे पहाड़ी ढलान का ही विस्तार जान पड़ते थे। उनके नीचे सुअरशालाएं और भेड़शालाएं बनी हुई थीं। एक छोटा-सा जलस्रोत पहाड़ से कल-कल बह रहा था, जो गांव के बीच जगह-जगह छोटी-छोटी तलैयां बनाता हुआ मकानों की खिड़कियों के नीचे से प्रवाहित हो रहा था।

जिस मकान में अध्यक्ष ठहरे थे, वह काफी अच्छा था। उसकी खिड़कियों से एक बड़ा सा तालाब दिखाई पड़ता था जिसमें बहुत सी बड़े सिर वाली मछलियां थीं।

"आओ, हम लोग अध्यक्ष के लिए कुछ मछलियां पकड़ें।"

अध्यक्ष के एक अंगरक्षक ऊ च्ये-छिङ ने सुझाव दिया। इसमें संदेह नहीं कि यह विचार वहुत ही सुंदर था। किन्तु अध्यक्ष ने अभी कल ही जो वात हमसे कही थी, उसे ध्यान में रखते हुए, भला कैसे हमारी हिम्मत पड़ती कि हम उन मछलियों को पकड़ते!

हम सव चुप रह गए।

"हो सकता है कि इस मकान का मालिक एक स्थानीय निरंकुश हो।" ऊ च्ये-छिङ ने अपनी वात पर जोर देते हुए कहा।

"मेरा ख्याल है कि पहले अध्यक्ष से पूछ लेना ही शायद ज्यादा अच्छा होगा।" ह्वाङ इङ-हो ने धीरे से कहा।

जव मैं कुछ पानी लेकर अध्यक्ष माओ के कमरे में गया, तो मैंने देखा कि वे आराम करने जा रहे हैं। मैंने वांस की एक मेज पर पानी रख दिया और थोड़ी देर खड़ा रहा तथा सोचता रहा कि वात कैसे शुरू करूं।

"अध्यक्ष।" आखिर मैंने एक रास्ता निकाल ही लिया। "क्या आपको भूख लगी है?"

"क्या खाने की कोई चीज है?"

"जी हां, है।" मैंने तुरन्त उत्तर दिया।

"क्या है?" अध्यक्ष मेरी ओर देखने के लिए मुड़े।

मैंने कुछ पानी उड़ेला और जहां तक हो सका, वड़े ही आकस्मिक ढंग से मैंने कहा: "मछलियां, कुछ वड़ी मछलियां!"

"कहां से लाओगे?" अध्यक्ष ने पूछा।

"यहीं से!" मैंने खिड़की के वाहर तालाव की ओर इशारा करते हुए कहा।

अध्यक्ष खिड़की तक गए और देखा। फिर वे मेरी ओर मुड़े। "अभी कल ही मैंने जो तुम्हें बताया था, क्या तुम उसे इतनी जल्दी भूल गए?" उन्होंने कठोरता से पूछा।

मैंने सिर झुकाकर धीमी आवाज में कहा, "हम पैसे देकर खरीद लेंगे।"

"तब भी ठीक नहीं।"

"हम कुछ ही खरीद लेंगे।" मैंने आग्रह किया।

अध्यक्ष मेरे पास आकर बैठ गए और बड़े धीरज के साथ अल्पसंख्यक जातियों की विशेषताएं और उनके प्रति अपनी नीति समझाने लगे। उन्होंने कहा: "उनकी भेड़ें अथवा मछलियां चाहे जितनी बड़ी हों, फिर भी उन्हें नहीं छूना चाहिए। वे उन्हें अपने देवताओं को बलि चढ़ाने के लिए पालते होंगे।"

अन्त में, अपनी बात समाप्त करते हुए, उन्होंने हमसे कहा कि हमें दूसरों को भी यह बात समझा देनी चाहिए कि इन लोगों की चीजों पर हमें हाथ नहीं लगाना चाहिए, यहां तक कि पैसा देकर भी इनकी चीजें नहीं खरीदनी चाहिए।

मैंने कहा: "मैं समझा दूंगा।" और मैं बाहर चला आया।

जाहिर था कि ऊ च्ये-छिङ मुझसे खबर सुनने के लिए बाहर प्रतीक्षा कर रहा था, इसलिए मैं सीधा उसके पास गया। उसने तुरन्त मुझसे दबी आवाज में पूछा कि क्या हुआ?

"अध्यक्ष इस बात को मंजूर नहीं करते!" मैंने रुखाई से उत्तर दिया।

"हम लोग पैसा देंगे!"

"पैसा देकर भी नहीं लेना चाहिए!" मैं उसके कान में चिल्लाया। "यह अनुशासन है, समझे?" फिर मैं चल दिया।

तीसरे पहर दस-बारह आदमियों का एक दल आया। वे हान जाति के कपड़े पहने हुए थे और राइफलें लिये हुए थे। उन्होंने कहा कि वे अध्यक्ष से मिलना चाहते हैं।

अपने जैकेट में जल्दी से बटन लगाते हुए मैंने पूछा कि आप लोग कहां से आए हैं?

मेरी कल्पना के विपरीत, उन लोगों का व्यवहार बहुत ही शिष्ट था। उनमें से एक बोला: "हम मुकामी लोग हैं!" वह क्वाङशी बोली बोल रहा था। उसकी भाषा समझना मुश्किल था।

मुकामी लोग? मैं सोचने लगा। तब वे अवश्य म्याओ जाति के लोग होंगे। वे अध्यक्ष से क्यों मिलना चाहते हैं और राइफलें लेकर?

"क्या आप लोगों के पास परिचय-पत्र है?" मैंने उनसे पूछा।

"हां, है।" एक बड़े डील-डौल वाले आदमी ने अपनी जेब में से कागज का एक छोटा सा टुकड़ा निकाला।

मैं उसे लेकर अध्यक्ष के पास गया। वे एक नक्शे का अध्ययन कर रहे थे। "अध्यक्ष, आप से कोई मिलने आया है।" मैंने रिपोर्ट दी।

"कौन है?" उन्होंने पूछा।

"कुछ मुकामी लोग।" मैंने उन्हें कागज का टुकड़ा दे दिया। "वे राइफलें लिये हुए हैं।"

उस कागज पर जो कुछ लिखा था, उसे पढ़ कर अध्यक्ष मेरी ओर मुड़े। उनका चेहरा खिला हुआ था। "उनसे कहो, फौरन अन्दर आएं।" यह कहकर वे खुद मेहमानों से मिलने कमरे से बाहर निकले।

मैं उन अजनबी लोगों को लेकर अध्यक्ष के कमरे में गया और फिर बाहर चला आया। मुझे कुछ हैरानी हुई। आखिर ये लोग किस काम से आए हैं? इन लोगों के साथ अध्यक्ष का व्यवहार इतना मैत्रीपूर्ण क्यों है?

ये लोग अध्यक्ष के कमरे में बहुत देर तक रहे। उनके विदा होते-होते सूरज लगभग डूब चुका था।

जिस समय मैं रात का भोजन लेकर अन्दर आया, उस समय भी अध्यक्ष उसी नक्शे के सामने खड़े थे जिस पर अब लाल-लाल गोलाइयों की भरमार थी। "अध्यक्ष, क्या आप खाना खाएंगे?" मैंने चुपचाप खाना रखते हुए पूछा।

अध्यक्ष मुड़े और अपनी पैंसिल रख दी। "तुमने दूसरे लोगों की मछलियां तो नहीं ली हैं न?" उन्होंने मुस्कराते हुए पूछा।

जवाब में, मैंने मुस्करा कर अपना सिर हिलाया। फिर पूछा: "अध्यक्ष, ये लोग क्या काम करते हैं?"

"वे सब म्याओ कामरेड हैं!" वे आनन्द-विभोर हो बोल उठे।

"म्याओ जनता के पास भी राइफलें हैं?" मैंने कौतूहल-वश पूछा।



एक बड़े डील-डौल वाले आदमी ने अपनी जेब में से कागज का एक छोटा सा टुकड़ा निकालकर मुझे दिया। (पृष्ठ ४१)

अध्यक्ष ने मेरे ऊपर एक उड़ती हुई नजर डाली। "वे म्याओ जाति के छापेमार योद्धा हैं, हमारे कामरेड!" उन्होंने कहा।

"म्याओ जाति के लोगों में भी हमारे कामरेड हैं?" मैंने आश्चर्य से पूछा।

"हमारे हर जगह कामरेड मौजूद हैं और हर जगह कम्युनिस्ट मौजूद हैं।" अध्यक्ष माओ ने कहा। "क्या तुम समझते हो कि सिर्फ तुम्हीं क्रान्ति में शामिल हुए हो और दूसरे लोग नहीं हुए।" उन्होंने विनोद भाव से कहा।

मैं मुस्कराने लगा।

उसी दिन शाम को हम लोगों ने यहां से फिर कूच किया। रास्ते में मैंने ऊ च्ये-छिङ को गुप्त रूप से बताया: "तुम्हें मालूम है, म्याओ जनता में भी कम्युनिस्ट हैं, छापेमार योद्धा हैं, हमारे कामरेड हैं!"

"सचमुच?" ऊ च्ये-छिङ को अब भी सन्देह था।

ऊच्याङ नदी के किनारे नया साल

केन्द्रीय लाल सेना क्वेइचय़ो प्रान्त की ह्वाङफिङ काउन्टी के निकट हुय़ोछाङ पहुंची। उस समय १६३४ का अन्तिम दिन था। हम वहां पड़ाव डालकर नया साल मनाने की तैयारी करने लगे।

हुय़ोछाङ कस्बे में देहाती मेले लगा करते थे। उसके बाजार में बड़ी चहल-पहल रहती थी। रुइचिन से रवाना होने के बाद यह सबसे बड़ी जगह थी, जहां हम लोग आए थे।

ज्योंही हम लोग वहां पहुंचे, अध्यक्ष माओ सैनिक परिषद की एक बैठक में शरीक होने के लिए हैडक्वार्टर चले गए। मेरी और चङ श्येन-ची की उस दिन की ड्यूटी थी, इसलिए हमें अध्यक्ष के साथ बैठक में जाना था। छ्वे क्वेइ-लान व लिन य्वी-छाए को उनके लिए एक रहने की जगह ढूंढ़नी थी।

सूर्यास्त से पहले, छ्वे ने ड्यूटी संभाल ली, ताकि मैं जाकर खाना खा सकूं। उसने मुझसे जल्दी वापस आने को कहा ताकि मैं अध्यक्ष को जल्दी घर वापस ला सकूं।

"क्या तुमने सब ठीक-ठाक कर लिया है?" मैंने पूछा।

"तुम वहां जाकर देखो।" उसने मेरी ओर पलक मारते

हुए कहा। वह बहुत ही रहस्यपूर्ण दिखाई पड़ रहा था।

मैं सेना के पड़ाव-स्थल पर आया। वह हमारे पहले के कैम्पों से बिलकुल भिन्न दिखाई पड़ रहा था। सभी लोग बड़ी उमंग में थे। पतली सैनिक वर्दी पहने हुए कुछ सिपाही सड़क से बर्फ हटा रहे थे, कुछ बिस्तर लगाने के लिए दरवाजे के तख्ते ले जा रहे थे, और गाने का अभ्यास कर रहे थे। चारों ओर एक नवीन वातावरण छाया हुआ था। पूछने पर पता लगा कि लोग नया साल मनाने की तैयारी कर रहे हैं, शाम को नये साल की सभा होगी, जिसमें तरह-तरह के प्रोग्राम होंगे। मैं बेहद खुश हुआ। इधर बहुत दिनों तक मार्च करने के कारण जो थकान पैदा हो गई थी, वह बर्फ के टुकड़ों के साथ-साथ हवा हो गई। मैंने तेजी से कदम बढ़ाए और अपने साथ सह-अंगरक्षक चङ श्येन-ची को भी हाथ से घसीटता चला। "चलो, चल कर देखें, उन लोगों ने क्या-क्या प्रबन्ध किये हैं। ज्योंही अध्यक्ष वापस आएंगे, हम लोग खुशी के साथ नए साल का अभिनन्दन करेंगे!" मैंने कहा।

अध्यक्ष के लिए जो मकान चुना गया था, वह पेकिङ के मकानों की तरह था। उसके अन्दर चारों ओर कमरे थे और बीच में एक बहुत बड़ा आंगन था। आंगन में दो विशाल हिम-मानव खड़े थे। आंगन के एक किनारे से दूसरे किनारे तक ईंट का जो रास्ता था, वह इतना साफ-सुथरा था, मानो अभी धोया गया हो। उत्तर की ओर के तीन बड़े-बड़े रोशनीदार कमरे अध्यक्ष के रहने के लिए थे। बीच का कमरा बैठक था।

छत से एक मिट्टी के तेल का लैम्प लटक रहा था। एक प्राचीन शैली की लम्बी और पतली चाय की मेज एक दीवार से सटा कर रखी हुई थी। उसी के सामने एक बड़ी चौकोर मेज रखी हुई थी, जिसके दोनों ओर भारी-भारी आराम कुर्सियां रखी हुई थीं। प्रवेश द्वार से घुसते ही, सामने दीवार पर हंसते हुए अर्हंत का एक विशाल रंगा हुआ चित्र था। इस चित्र में अर्हंत हाथ जोड़े खड़े थे, मानो वे हमारा स्वागत कर रहे हों। बाईं ओर का कमरा अध्यक्ष के सोने का कमरा था। उस पर एक नजर डालते ही हमें मालूम हो गया कि छ्वे क्वेइ-लान और लिन य्वी-छाए ने कमरे को सजाने में काफी मेहनत की थी। उसने बिस्तर पर इतना पुआल डाल रखा था कि वह अच्छे से अच्छे सोफे की भांति मुलायम हो गया था। दाईं ओर का कमरा अध्यक्ष का दफ्तर था। दो छोटी मेजों को जोड़कर एक बड़ी मेज बना दी गयी थी जिस पर दफ्तरी सामान और टेलीफोन रखा हुआ था। "कितना सुन्दर!" कमरे में चारों ओर चक्कर लगाते हुए चङ श्येन-ची और मैं खुशी से चिल्ला पड़े। अध्यक्ष को इसके पहले कभी भी इतना अच्छा मकान रहने को नहीं मिला था, यहां तक कि पुराने सोवियत क्षेत्र में भी नहीं, लम्बे अभियान में मिलना तो दूर रहा! यह देख कर हम लोगों की खुशी का ठिकाना न रहा कि अध्यक्ष को विश्राम करने के लिए इतनी अच्छी जगह मिली है! खास तौर से नए साल को तो इसका और भी अधिक महत्व था!

इन कमरों में अभी भी एक चीज की कमी थी। स्टूलों की!

"चलो, कहीं से जल्दी से स्टूल ले आएं!" मैं चङ श्येन-ची को साथ लेकर तेजी से बाहर चला गया और हम कोई तीस लकड़ी के चौकोर स्टूल ले आए, जिन्हें हमने मेज के चारों ओर रख दिया, मानो कोई दावत शुरू होने वाली हो। चङ श्येन-ची जानना चाहता था कि आखिर इतने स्टूलों की क्या जरूरत है। मैंने उसे बताया कि चूंकि आज नए साल की पूर्व-संध्या है, इसलिए केन्द्रीय कमेटी के सदस्य तथा जनरल हैडक्वार्टर के अगुआ कामरेड अध्यक्ष के साथ नए साल का उत्सव मनाने के लिए निश्चय ही आएंगे। अगर बैठने की जगह न होगी, तो वे क्या करेंगे?

चङ श्येन-ची मेरी बात सुनता रहा और सिर हिलाता रहा।

खाना खाने के बाद मैंने चङ श्येन-ची से सलाह की कि हमें अध्यक्ष के लिए क्या-क्या खाना तैयार करना चाहिए। "नया साल है," उसने कहा। "हमें ऐसी चीजें तैयार करनी चाहिए जो उन्हें सबसे अधिक प्रिय हों।" मैंने अध्यक्ष के सर्वप्रिय भोज्य पदार्थों की सूची गिनना शुरू कर दी: मांस, मिर्च, भुना सोयाबीन का पनीर...

"और खमीरदार मीठा चावल मत भूलना!" चङ श्येन-ची इस प्रकार गला फाड़ कर चिल्लाया, मानो उसे कोई विलक्षण बात सूझ गयी हो। खमीरदार मीठा चावल दक्षिण चीन में बहुत खाया जाता है। अध्यक्ष माओ को यह बहुत पसन्द है।

जब हमने सब चीजें तैयार कर लीं तो अंधेरा हो चुका था।

मैं लालटेन लेकर चङ के साथ अध्यक्ष माओ से मिलने चला गया। मैंने देखा कि बैठक अब भी हो रही है। छ्वे क्वेइ-लान अपने मे वड़ा प्रसन्न दीख रहा था। "अच्छा, साथियो, क्या तुम संतुष्ट हो?" अब मेरी समझ में आया कि वह क्यों इतने रहस्यपूर्ण ढंग से व्यवहार कर रहा था। वह हमें आश्चर्यचकित करना चाहता था। मैंने उसकी प्रशंसा की और वह मेरी ओर मुस्कराने लगा।

बैठक समाप्त होते दस वज गए। जव अध्यक्ष अपना ओवर-कोट पहन रहे थे, मैं लैम्प लेकर उनसे मिलने गया। रास्ते में उन्होंने मुझसे पूछा कि वह जगह कितनी दूर है, जहां रात वितानी है। मैंने जवाव दिया कि वह स्थान लगभग दो या तीन ली दूर है।

उस समय वर्फ गिर रही थी और हवा के तेज झोंके चल रहे थे। अध्यक्ष जो कपड़े पहने हुए थे, वह काफी गर्म नहीं थे। मैं लैम्प लिये हुए उनके पीछे-पीछे चल रहा था, उनकी यह हालत देखकर मैं अचानक अत्यंत द्रवित हो उठा। सोवियत क्षेत्र छोड़े हुए दो महीने से अधिक हो गए थे और अध्यक्ष इतने व्यस्त थे कि उन्हें विश्राम करने तक का अवकाश न मिला था। अभियान के दौरान वह अक्सर अपना घोड़ा कमजोर या बीमार साथियों को दे देते थे, और स्वयं पैदल चलते थे। कैम्प लगाने के वाद जब दूसरे लोग आराम करने चले जाते तो वे बैठकों में शरीक होते, तार पढ़ते और दस्तावेजों का मसविदा इत्यादि तैयार करते। इस प्रकार वे कैसे स्वस्थ रह

सकते थे ? क्या ही अच्छा होता, यदि वे कुछ दिन और यहां ठहर जाते, नया साल आनन्द मे विताते और अच्छी तरह आराम कर लेते !

मैं अपने विचारों को और अधिक आपे में न रख सका। "अध्यक्ष," मैंने कहा। "आज नये साल की पूर्व-संध्या है। हमें यहां अच्छी तरह आराम करना चाहिए। हमने सारी तैयारियां कर ली हैं !"

अध्यक्ष रुक गए। वे मुड़े और मेरे सामने खड़े हो गए। उन्होंने मेरी टोपी सीधी की और अत्यन्त शान्त भाव से बोले : "क्या ? तुमने नया साल मनाने की सारी तैयारियां कर ली हैं ?"

"जी हां, सारी तैयारियां हो चुकी हैं !" चङ श्येन-ची ने कहा।

अध्यक्ष ने पहले मुझे देखा, फिर चङ को। वे कुछ भी नहीं बोले। वे विचारमग्न दिखाई पड़ रहे थे।

क्या मामला है ? शायद उन्होंने हमारी वात नहीं सुनी। वे शायद उन्हीं प्रश्नों पर अब भी विचार कर रहे थे जिन पर सभा में वाद-विवाद किया गया होगा।

काफी देर की दुविधा के पश्चात अध्यक्ष बोले : "हम यहां नहीं ठहर सकते ; नया साल मनाने की अपेक्षा हमें और भी अधिक महत्वपूर्ण काम करने हैं !"

"क्या करना है ?" मैं चक्कर में पड़ गया।

"हमें ऊच्याङ नदी की वाधा पार करने के लिए, समय के

साथ दौड़ लगानी है," अध्यक्ष ने हमारे कन्धों को थपथपाते हुए कहना शुरू किया : "हम लाल सेना हैं, हमारे लिए अभी सबसे महत्वपूर्ण काम क्या है? दुश्मन से लड़ना। ऊच्याङ नदी को पार करना बहुत महत्वपूर्ण है। तुम लोग समझते हो कि ह्योछाङ एक बड़ी जगह है। नहीं, चीन में इससे कहीं ज्यादा बढ़कर बहुत सी बड़ी जगहें हैं। जैसे चुनई शहर। चुनई शहर से भी बढ़कर और हैं। जब हम ऊच्याङ नदी पार कर लेंगे और चुनई पर कब्जा कर लेंगे, तो उस समय वहां पर नया साल मनाने में हमें और भी अधिक आनन्द आएगा।"

उन्होंने हमें संक्षेप में आम परिस्थिति समझाई। च्याङ काई-शेक हमारा पीछा करने के लिए श्वे य्वे और चओ हुन-य्वान के अधीन बहुत से डिटैचमेन्ट भेज रहा है। हमें ऊच्याङ नदी के उस पार जल्दी से जल्दी पहुंच जाना चाहिए ताकि शत्रु हमारे नजदीक न आ जाए।

अध्यक्ष की बात सुनकर मेरे मन में जो भाव उत्पन्न हुआ, उसे शब्दों में प्रगट करना मुश्किल है। फिर भी ऊच्याङ नदी को तेजी से पार करने का विचार अत्यंत उत्साहवर्धक था। मेरी उत्तेजना बढ़ती गई।

घर पहुंच कर हमने देखा कि बीच के कमरे के बड़े लैम्प से घर जगमगा रहा था। अध्यक्ष हम लोगों की ओर देखकर मुस्कराने लगे। "यहां तो वास्तव में नए साल का वातावरण है!" यह कह कर उन्होंने अपने दस्तावेज निकाले और देर तक काम करने के लिए बैठ गए। उन्होंने हमें बताया कि

उन्होंने हैडक्वार्टर में खाना खा लिया है और अब उनके लिए कोई भी चीज तैयार करने की जरूरत नहीं है।

"लेकिन हमने आपके लिए अच्छी चीज बना रखी है!" चङ श्येन-ची तुरन्त बोल उठा।

"क्या चीज?" उन्होंने अपना सिर उठाया।

"खमीरदार मीठा चावल, आपकी सबसे प्रिय वस्तु!"

"बहुत अच्छा," अध्यक्ष ने कहा। वे उठकर खड़े हो गए और स्टूलों की गोलाई की ओर हाथ से इशारा करते हुए कहा: "आओ, हम लोग नया साल साथ-साथ मनाएं।"

थोड़ा सा खाना खाने के बाद, उन्होंने हम लोगों से सो जाने के लिए कहा और वे स्वयं काम करने बैठ गए।

दूसरे दिन, लगभग चार बजे सूचना मिली कि हमारा हिरावल दस्ता ऊच्याङ नदी पहुंच गया है। यह समाचार मिलते ही हम लोग भी उसी दिशा में चल पड़े।

सुनहरी बालू वाली नदी के किनारे

मुझे याद है, सन १९३५ में अप्रैल की एक शाम को, नवें, पहले तथा पांचवें सेना-ग्रुप से संगठित पहली मोर्चा लाल सेना और केन्द्रीय कमेटी का दफ्तर सुनहरी बालू वाली नदी के किनारे पहुंच गए। ऊच्याङ नदी पार करने के बाद, सुनहरी बालू वाली नदी ही सबसे पहली बड़ी नदी थी, जो हमारे सामने पड़ी। उसमें बाढ़ आई हुई थी और उसकी रोषपूर्ण लहरें हमारे सामने उमड़ रही थीं। सभी लोग नदी पार करने की समस्या में उलझे हुए थे, क्योंकि हम लोगों के पास नावें बहुत कम थीं। निस्सन्देह, अध्यक्ष माओ भी इन बहस-मुबाहिसों में डूबे हुए थे। उन्होंने नदी पार करने के बारे में अन्य नेताओं से वाद-विवाद किया।

भोर होने से जरा पहले ही, मैंने उनके साथ एक नाव में बैठ कर सुनहरी बालू वाली नदी पार की। अभी हम तट पर उतरे ही थे कि वे अभियान की अगली मंजिल की योजना बनाने के लिए फौरन चीफ आफ स्टाफ ल्यू पो-छङ से मिलने चल दिये। मैं उनके लिए एक ऐसी जगह ढूंढ़ने निकल पड़ा जो एक अस्थायी दफ्तर और मकान के रूप में काम आ सकती हो।

नदी के तट पर सिवा नंगी चट्टानों के और कुछ न था। इन चट्टानों में कुछ खोखली जगहें तो थीं पर उनके अन्दर सीलन बहुत थी, और ये खोखली जगहें भी इतनी बड़ी न थीं कि उन्हें गुफा कहा जाता। मैं बिस्तर के लिए लकड़ी के तख्ते तो क्या, पुआल तक भी ढूंढने में सफल न हो सका। अन्त में मुझे मोमजामा बिछा देना पड़ा और उस पर कम्बल डाल देना पड़ा। मैंने दिल में सोचा कि इससे कम से कम इतना तो हो सकेगा कि अध्यक्ष माओ कुछ देर आराम कर सकेंगे। सारी रात उन्होंने एक क्षण के लिए भी आराम नहीं किया था। सच पूछिये तो उन्होंने पिछले कई दिनों से जरा भी अपनी कमर सीधी नहीं की थी।

मेरा दूसरा काम था उनके दस्तावेजों, नक्शों और कागजों को खोलकर रखना। जब कभी हम लोग पड़ाव डालते थे, तो यह काम मैं आम तौर से उन के सचिव कामरेड ह्वाङ यओ-फ़ङ के साथ करता था। हम दोनों किसी भी तरह की एक मेज या डेस्क बांधबूंध कर खड़ी कर देते थे। लेकिन इस समय हमारे पास कोई भी ऐसी चीज नहीं थी जिसे हम काम चलाने तक के लिए प्रयोग कर सकते और कामरेड ह्वाङ यओ-फ़ङ अभी तक नदी के उस पार थे। अध्यक्ष कैसे अपना काम करेंगे ? मैंने गुफा की दीवार पर नक्शा टांगने की कोशिश की, पर वह बिलकुल बेकार थी, क्योंकि उसमें बालू ही बालू थी और उसमें किसी भी तरह से कील नहीं टिकती थी। बिना मेज के दस्तावेजों को फैलाने के लिए कोई जगह भी

नहीं थी। मैं काफी समय नष्ट कर चुका था। अध्यक्ष माओ किसी भी क्षण चीफ आफ स्टाफ ल्यू से बातचीत करके वापस आ सकते थे और मैंने एक बूंद भी उबला पानी तैयार नहीं कर रखा था। मैं जानता था, रात भर काम करने के पश्चात उन्हें इसकी आवश्यकता होगी। मैं मेज को खोजने का काम छोड़कर जल्दी से पानी का प्रबन्ध करने निकल पड़ा।

जब अध्यक्ष माओ वापस आए और मुझे बुलाया, तो उस समय दिन बिल्कुल निकल आया था। जब मैं गुफा में पहुंचा, तो मैंने देखा कि वे गुफा के बीच में किसी विचार में डूबे खड़े हैं।

"आप वापस आ गए।" मैंने कहा।

"हूं... सब तैयार है?"

"जी हां, जो कुछ कर सकता था, किया है।" "बिस्तर" की ओर इशारा करते हुए मैंने कहा। "कहीं भी कोई तख्ता न मिला, इसलिए मैंने यहीं लगा दिया है। कृपया आप थोड़ी देर आराम कीजिये। पानी अभी उबला जाता है।" मैं यह देखने के लिए कि पानी उबला है या नहीं, जाने को हुआ ही था कि उन्होंने मुझे वापस बुला लिया।

"क्या तुमने मेरे लिए काम करने की कोई जगह नहीं बनाई है?" उन्होंने पूछा।

"कामरेड ह्वाङ यओ-फ़ङ अभी तक यहां नहीं पहुंचे हैं।" मैंने बिना सोचे-समझे जवाब दिया। "मुझे कोई ऐसी चीज नहीं मिली, जो डेस्क की तरह इस्तेमाल की जा सकती,

यहां तक कि एक छोटी सी मेज भी नहीं मिली। क्या आप पानी पिएंगे?"

वे मेरी ओर एक कदम आगे बढ़े, मानो उन्होंने मेरी बात ही न सुनी हो, और बहुत गम्भीरता से किन्तु जरा भी क्रोध न करते हुए उन्होंने कहा: "ऐसे मौके पर सबसे महत्वपूर्ण चीज काम है। आराम या खाना-पीना, ये सब छोटी बातें हैं। नदी के उस पार हमारे बीस-तीस हजार साथी नदी पार करने के लिए अभी तक इन्तजार कर रहे हैं। तीस हजार प्राण खतरे में हैं।"

मेरी समझ में न आया कि क्या जवाब दूं। मैं खड़ा-खड़ा अध्यक्ष माओ को देखता रहा। मुझे लगा कि मेरा दिल धड़क रहा है। वे सीधे मेरे पास आए और बोले: "जाओ, सबसे पहले मेरे लिए कोई ऐसा तख्ता ला दो, जो मेज का काम दे सके।"

यह सुनते ही मैं दौड़ पड़ा और ऊपर-नीचे तलाश करते-करते, एक छोटा सा तख्ता मेरे हाथ लगा जिससे पहले गुफा के द्वार के रूप में प्रयोग किया गया था। अध्यक्ष माओ ने उसे लगाने में मदद दी और उसके नीचे खूंटे ठोंक कर उसे समतल और स्थिर बना दिया और उस पर अपने नक्शे तथा दस्तावेज फैला दिये। उसी समय मुझे अचानक पानी की याद आई। वह अब तक अवश्य खौल गया होगा। मैं उसे लाने के लिए उठा ही था कि फौरन अध्यक्ष माओ ने मुझे बुला लिया।

"छेन छाड़-फड़!"

"जी!"

"जरा इधर आना!"

मैं गुफा के भीतर वापस गया और "मेज" के सामने खड़ा हो गया।

"आज मैं तुम्हें कुछ सजा दूंगा।" उन्होंने कहा। हालांकि उनकी आवाज पहले की ही तरह नम्र थी, फिर भी मुझे ऐसा लगा कि वातावरण में बहुत तनाव है। मैंने महसूस किया कि मैं अपने कर्तव्य के पालन में असफल रहा। मैं अत्यन्त व्यथित हो उनकी ओर देखता रहा।

"तुम मेरे पास यहां बैठे रहो और रात भर जागते रहो।" यह सुनते ही मेरे चेहरे पर बेचैनी भरी मुस्कान फूट पड़ी और मैं उनके सामने बैठ गया।

उनकी सारी "मेज" पर तार और दस्तावेज फैले हुए थे। टेलीफोन की घंटी लगातार बज रही थी और वे काम में बिल्कुल डूबे हुए थे, यहां तक कि उन्होंने एक मिनट के लिए भी विश्राम नहीं किया था। मुझे बड़ा दुख हुआ और मेरी आंखों से आंसू बहने लगे। मैंने मन ही मन सोचा कि अगर मैं जरा पहले ही यह लकड़ी का तख्ता ढूंढ़ लाया होता, तो शायद उन्हें इतना व्यस्त न होना पड़ता।

मुझे नींद बहुत आती थी और मेरी आदत थी कि जब वे काम करते रहते, तो मैं उनकी बगल में बैठा-बैठा सो जाता। हालांकि उन्होंने सजा देने की बात सिर्फ मजाक में ही कही

थी, लेकिन जब मैंने देखा कि वे किस प्रकार दिलोजान से काम कर रहे हैं और सोने की तनिक भी इच्छा नहीं प्रगट कर रहे हैं, यहां तक कि प्रसन्नताभरी मुस्कराहट से समय-समय पर मुझ पर भी एक नजर डाल लेते हैं, तो मुझे बेहद बेचैनी हुई। मैं उठ कर गया और उबला पानी लाया तथा ठंडा करने के लिए कुछ पानी निकाला। कुछ समय के बाद अध्यक्ष माओ खड़े हुए और मुझसे बोले : "तुम्हें मेरे साथ रहते इतने साल हो गए, फिर भी क्या कारण है कि तुम अभी तक यह भी नहीं समझते कि सबसे पहले क्या करना है ! आइन्दा से जब भी हम लोग पड़ाव डालें, तो सबसे पहले काम करने की जगह तलाश करनी चाहिए। खाने और आराम करने की बात गौण है। तुम्हें यह महसूस करना चाहिए कि हर हालत में हमारे लिए काम सबसे महत्वपूर्ण चीज है।" वे एक मिनट के लिए रुके, फिर मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए बोले : "अच्छा जाओ, जल्दी से सो जाओ। अब तुम्हारे लिए जागते रहना मुश्किल है।"

अभी-अभी अध्यक्ष ने जो कुछ कहा था, उसे सुनने के पश्चात मेरी जाने की इच्छा न हुई। उन्होंने मुझसे फिर आग्रह किया। मैं अपने को संभाल न सका, और मेरी आंखों में आंसू आ गए। इसका कारण यह नहीं था कि मेरी आलोचना हुई थी, इसका कारण था शोक और आनन्द की मिली-जुली भावना, एक ऐसी भावना जो किसी व्यक्ति में तब पैदा होती है जब वह कोई गलती कर बैठे और उसके माता-पिता

चेतावनी के रूप में सख्ती से नहीं, बल्कि गम्भीरतापूर्वक कहते हैं: "प्यारे बच्चे, ऐसा काम फिर कभी मत करना! जाओ खेलो!"

तीन दिन और तीन रात तक यानी जब तक कि लगभग ३०,००० सैनिक सुनहरी बालू वाली नदी पार करते रहे, अध्यक्ष माओ ने अपनी "मेज" नहीं छोड़ी।

ई जाति की जनता द्वारा अध्यक्ष माओ का स्वागत

नदी पार करते ही हम दक्षिण-पूर्वी शीखाङ के म्येननिङ में पहुंच गए। वहां आदेश मिला कि हम ई जाति के इलाके में प्रवेश करने और तातू नदी पार करने के लिए तैयार हो जाएं। हर एक को आदेश दिया गया कि सब लोग चौदह दिन का राशन, एक बांस का डण्डा और सात मीटर लम्बी रस्सी साथ ले लें। सड़क पर लोग अनाज व बांस का डण्डा उठाए और हर किस्म की रस्सी बटने की सामग्री से रस्सी बनाते नजर आ रहे थे।

एक दिन हम लोग अपने मेजबान के साथ गपशप कर रहे थे। वह बूढ़ा मेजबान बहुत ही बातूनी था। अगर वह एक बार बात शुरू कर देता था, तो रुकने का नाम न लेता था। क्षण भर में वह राई का पर्वत बना देता था। जब ई जाति के लोगों के बारे में बातचीत शुरू हुई, तो अचानक वह बेहद उत्तेजित हो उठा और भय से चीख पड़ा : "लो लो जाति के लोग! अरे, वे तो बड़े ही भयानक हैं, बड़े भयानक!"

"कितने भयानक?" हमने उससे पूछा।

वह वड़ी उत्तेजना के साथ कहता ही गया : "वे सव जंगली हैं और युद्ध प्रिय हैं ! खास तौर से वे हम हान जाति के लोगों से नफरत करते हैं। ज्योंही वे किसी हान जाति को देखते हैं, वे समझते हैं कि वस अव खतरा है और अगर कहीं वे तुम्हें पकड़ लें, तो वस समझो कि अव तुम वचोगे नहीं !"

"अगर वे इतने भयानक हैं, तो अच्छा होगा कि हम उनसे दूर ही रहें !" चङ श्येन-ची ने कहा।

हमारे मेजवान ने जवाव दिया : "अगर तुम लोग उनके इलाके से दूर नहीं रहते, तो भला उनसे कैसे दूर रह सकते हो ? कहीं एक वार भी उनके इलाके में कदम रखा, तो समझो कि जाल में फंसे। अचानक सव लोग चीखते-चिल्लाते निकल पड़ेंगे और छिप-छिप कर तुम्हारे ऊपर गोलियां चलाएंगे। कहा जाता है वे अव्वल दर्जे के निशानेवाज हैं !"

"वे हान लोगों से इतनी घृणा क्यों करते हैं ?" हमने पूछा।

बूढ़े ने अपनी भौंहें सिकोड़ लीं और सिर हिला दिया। "मुझे नहीं मालूम !" उसने कहा।

हालांकि उसने जो कुछ वताया था, उस पर हमने पूर्ण रूप से विश्वास नहीं किया, फिर भी हम कुछ चिन्तित हो उठे, खास तौर से छिप कर गोली चलाने के वारे में हमें काफी हैरत भी हुई, क्योंकि हमने राजनैतिक अध्ययन कक्षा में अल्प-संख्यक जातियों के सवाल पर अक्सर वहस की थी। हम जानते थे कि श्वेत सेना ने हान जाति से अधिक इन लोगों पर अत्याचार किया है ; इसलिए हम उन्हें अपना भाई समझते थे।

हमने उन्हें हान लोगों को मारते हुए कभी नहीं सुना था। इसलिए मैंने जाकर अध्यक्ष माओ से पूछा।

"अध्यक्ष, कहा जाता है, ई जाति के लोग बड़े भयानक होते हैं!" मैंने शुरू किया।

"तुम्हें किसने बताया?" उन्होंने पूछा। मैंने उन्हें वे सारी बातें बता दीं, जो हमारे मेजवान ने हमें बतायी थीं और उनसे पूछा: "क्या यह सच है?"

अध्यक्ष माओ मुस्कराने लगे और उन्होंने उल्टे मुझसे एक प्रश्न किया: "तुम्हारा क्या ख्याल है?" इसके जवाब में, मैं सिर्फ मुस्करा दिया।

अध्यक्ष ने तव समझाया: "श्वेत सेना ने सछ्वान में ई जाति का और क्वाङ्शी में म्याओ जाति का क्रूरता से दमन किया है। यही कारण है कि वे श्वेतों से घृणा करते हैं।" उन्होंने कहा: "परन्तु हम लोगों के प्रति उनका व्यवहार बिलकुल भिन्न है। हम उन्हें अपने भाई समझते हैं। हम उनके साथ एकता कायम करते हैं और उनके साथ मिलकर श्वेत सेना के दमन का विरोध करते हैं। हमारे सेनापति चू तेह और ल्यू पो-छङ दोनों सछ्वान प्रान्त के हैं। वे ई जाति के लोगों को अच्छी तरह जानते हैं। ई जाति के लोगों को बहुत खुशी होगी, जब उन्हें मालूम होगा कि लाल सेना उनके यहां आई है, तो फिर तुम्हें किस बात का डर है?"

"पर वह बूढ़ा तो इस तरह बोल रहा था मानो जो कुछ वह कह रहा हो, वह सब सच ही हो!"

अध्यक्ष माश्रो ने समझाया : "इन सब लोगों को श्वेत सेना धोखा देती है। श्वेत सेना जानबूझ कर हान तथा ई जाति के लोगों के बीच घृणा पैदा करती है। उस बूढ़े आदमी ने अपनी आंखों से कुछ भी नहीं देखा है, इसलिए स्वभावत: उसे धोखा देना आसान है।"

अध्यक्ष माश्रो ने हमें जो कुछ समझाया, उससे हमें वड़ी राहत मिली। शीघ्र ही चीफ आफ स्टाफ ल्यू पो-छङ ई जाति के नेता श्याश्रो येतान के धर्म के भाई वन गए।

दो दिन वाद, हम लोग म्येननिङ से रवाना हुए और उसी दिन दोपहर को ई जाति के क्षेत्र में पहुंच गए। मई का महीना था। इस समय मेरे अपने प्रान्त च्याङशी में, खेत सुनहरे धान से खिल उठे होंगे, किन्तु यहां धरती वीरान तथा अनजोती पड़ी थी। यहां न तो धान के खेत थे, न ही मकान थे। हां, जंगलों में कुछ इधर-उधर झोंपड़े दिखाई पड़ते थे।

एक पहाड़ी इलाके में प्रवेश करने के वाद शीघ्र ही चित्र-विचित्र कपड़े पहने हुए पुरुषों और स्त्रियों का एक दल अचानक हमारे सामने आ गया। निकट भागते-भागते उन्होंने चिल्लाना शुरू कर दिया। चङ श्येन-ची और मैं भयभीत हो गया। जव वे हमारे विलकुल निकट आ गए, तव मुझे साफ-साफ दिखाई दिया कि वे लड़ने नहीं वल्कि हमारा स्वागत करने आए हैं। उस दल में से पांच ऊंचे कद की स्त्रियां निकलीं, उनमें से हरेक के हाथ में एक वड़ा लाल मुर्गा था। वे अध्यक्ष माश्रो के निकट आईं और उन्हें घेर लिया। उन्होंने कुछ कहा, जो हम समझ



वे अध्यक्ष माओ के निकट आईं और उन्हें घेर लिया। (पृष्ठ ६२)

नहीं सके। पर अध्यक्ष माओ ने अपना सिर हिलाया और उनकी नकल करते हुए हाथ सीने पर रख कर अपनी कृतज्ञता प्रगट की। मैंने, चङ श्येन-ची तथा अन्य साथियों ने अध्यक्ष की नकल कर बारी-बारी से उनको धन्यवाद दिया।

तब अध्यक्ष माओ आगे बढ़े और ठीक उनके पीछे-पीछे स्त्रियां मुर्गे लेकर चलीं। इस समय तक, चारों ओर ई लोग दिखाई पड़ने लगे थे – ढालों पर, घाटी में और पर्वत की चोटी पर। उनमें से कुछ ने स्वागतार्थ हाथ ऊंचे उठा लिये। और कुछ खुश होकर गाने लगे। वह एक विचित्र तथा मर्मस्पर्शी दृश्य था, जिसे देखकर हमारी आंखों में आंसू भर आए।

अध्यक्ष माओ हमारी ओर मुड़े: "देखा? कहां गईं लड़ाई की वे सारी बातें! ये लोग हमारा स्वागत करने आए हैं! जरा सोचो क्यों?" यह कह कर अध्यक्ष आगे चल दिए। चलते-चलते, हम लोगों ने इस मामले पर वाद-विवाद किया।

थोड़ी देर बाद, चङ श्येन-ची ने पूछा: "अध्यक्ष, हालांकि वे हमारे अच्छे भाई हैं, फिर भी वे जो कुछ कहते हैं हम समझ नहीं सकते। ऐसा लगता है मानो हम लोग विदेश में हों!"

"यह आश्चर्य की बात नहीं है," अध्यक्ष माओ ने कहा, "तुम्हें मालूम है, हमारा देश कितना बड़ा है। तुम च्याङशी के लोग हो और मैं हुनान का हूं। तुम मेरी बोली नहीं समझ सकते, तो फिर ई लोग जो बोलते हैं वह भला तुम कैसे समझ सकते हो!"

यह सुनकर हम सब के सब हंस पड़े। जब ई लोगों ने हमें

हंसते हुए देखा तो वे भी ठहाका मार कर हंस पड़े। वे इतने निष्कपट तथा सरल भाव से हंसे कि कौन कह सकता था कि वे लोग बहुत निर्दयी हैं? खुशी तथा मैत्री के इस वातावरण में हमने "रहस्यपूर्ण" ई जाति के क्षेत्र को पार किया।

आनशुनछाङ से लूतिङ पुल तक

ई जाति के पहाड़ी इलाके से चलने के बाद हम लोग अध्यक्ष माओ के साथ २०० ली फासला तय करके तातू नदी के तट पर आनशुनछाङ पहुंचे। वहां से हम नदी के साथ-साथ उत्तर की तरफ बढ़ने लगे। हमें बताया गया कि मोशीम्येन नामक कस्बे से गुजरते हुए लूतिङ पुल जाना है, और उस पुल से हम नदी पार करेंगे।

यह एक पहाड़ी इलाका था, एक मार्गहीन निर्जन क्षेत्र जिसमें ऊंची-ऊंची घास और झाड़-झंखाड़ के सिवाय और कुछ न था। हालांकि अध्यक्ष माओ के पास एक घोड़ा था (जिसे वे उन जगहों में भी बहुत कम इस्तेमाल करते थे जहां रास्ता ऊबड़-खाबड़ नहीं होता था और वे अक्सर घायल या कमजोर साथियों को सवार होने के लिए देते थे), वह भी बेकार साबित हुआ और अध्यक्ष माओ हमारे साथ पैदल ही चलते रहे।

हम लोग जितनी ज्यादा ऊंचाई पर पहुंचते, ऊपर चढ़ना उतना ही मुश्किल मालूम होता और झाड़-झंखाड़ उतने ही घने होते जाते। कभी-कभी हमें रुकना भी पड़ता था, ताकि इंजीनियरी यूनिट हमारे लिए आगे का रास्ता बना सके।

चाहे रास्ता हो या न हो, अध्यक्ष माओ वड़ी स्फूर्ति के साथ आगे वढ़ते जा रहे थे। एक लम्बे अरसे से कूच करते, लड़ते और कठोर काम करते आने पर भी उनके चेहरे पर जरा भी थकान नजर न आती थी। वे वार-वार हमसे वातें करते, हमें कहानियां सुनाते।

अध्यक्ष माओ को ऐसी स्थिति में देखकर हमारे हौसले वुलन्द हो गए। हमारी थकान काफूर हो गई।

सांझ के वक्त हम एक पहाड़ की चोटी पर पहुंच गए। आनशुनछाङ काफी पीछे रह गया था। हमारे साथ सफर करने वाली यूनिट ने विश्राम करने के लिए पड़ाव डाल दिया। मैंने चङ श्येन-ची और अन्य साथियों से मशवरा करने के बाद अध्यक्ष के पास जाकर पूछा, "क्या हम लोग भी यहीं आराम करेंगे?"

अध्यक्ष रुक गए और मेरी तरफ देखकर बोले, "थक गए हो क्या?"

"नहीं, सो वात नहीं। लेकिन उन लोगों ने तो खाना पकाना भी शुरू कर दिया है।"

"ओह!" अध्यक्ष माओ ने हंसते हुए कहा, "वाकी लोगों से भी कह दो कि हम भी यहीं आराम करेंगे और खाना खाएंगे।"

जव उन लोगों ने देखा कि अध्यक्ष रुक गए हैं, तो सभी अंगरक्षक, बोझा उठाने वाले साथी और साईस उनके चारों ओर जमा हो गए। एक जलस्रोत के निकट बैठकर सवने सूखे राशन से पेट भरा। अध्यक्ष माओ ने भी हमारे ही साथ भोजन किया।

"खाने के वाद पीने के लिए कुछ पानी मिल जाता तो अच्छा होता", एक नौजवान साथी जोर से बोला। ज्योंही उसने पानी का नाम लिया, हमारी प्यास वढ़ गई। सभी पानी पीना चाहते थे।

अध्यक्ष ने मुस्कराते हुए हमारी ओर देखा। "यहां पानी ही पानी है", जलस्रोत की तरफ इशारा करते हुए उन्होंने कहा और अंजुलि से पानी का घूंट पीते हुए वे बोले, "वाह, कितना ठण्डा और मीठा पानी है!" हम सवने झुक कर भरपेट पानी पिया।

अचानक किसी के खर्राटे लेने की आवाज सुनाई दी। पता लगाने की जरूरत नहीं थी कि यह कामरेड ह्वाङ है। उसे इतनी जल्दी सोते देख हमारी हंसी फूट पड़ी। ऊ च्ये-छिङ से न रहा गया। वह चुल्लूभर पानी उठाकर आहिस्ते से ह्वाङ की तरफ वढ़ा।

"वह थक गया है, उसे कुछ देर आराम करने दो।" अध्यक्ष की आवाज सुनकर हम लोग उनकी तरफ मुड़े। उन्होंने झुककर ह्वाङ का सिर घास से ऊपर उठा लिया और अपनी तह की हुई वर्दी उसके सिरहाने रख दी। ह्वाङ कुछ हिला, धीमे से मुस्कराया और एक वार फिर गहरी नींद में खो गया।

हम लोग देखते रह गए, भाव-विभोर होकर। अध्यक्ष हमारी तरफ मुड़े और मुस्कराए, "तुम लोग भी कुछ देर आराम करो। कल हमें और लम्वा कूच करना है।"

एक भी शब्द कहे विना हम वहीं लेट गए। मैं एक चौरस चट्टान पर जा लेटा।

गरमियों के शुरू में शाम के वक्त हल्की सी ठण्ड होती है। हालांकि मैं बेहद थका हुआ था, फिर भी सो नहीं पाया। ह्वाङ अध्यक्ष की वर्दी का सिरहाना बनाए गहरी नींद सो रहा था। अध्यक्ष किसी गहरे विचार में डूबे हुए पहाड़ की चोटी पर चहलकदमी कर रहे थे। काफी नीचे तातू नदी का भीषण स्वर स्पष्ट सुनाई दे रहा था। डूबते सूरज की अन्तिम किरणों से सारा आसमान लाल हो उठा और अध्यक्ष माओ की भूरी वर्दी पर नारंगी रंग चढ़ गया।

उस रात अध्यक्ष पहाड़ पर हम लोगों के ही साथ सोए।

अगले दिन हमने तड़के ही कूच कर दिया। मोशीम्येन के निकट हम एक विस्तृत गहरी नदी के तट पर पहुंच गए। इसे पैदल पार करना नामुमकिन था। इस पर बना हुआ एकमात्र पुल सिर्फ दो मीटर चौड़ा था।

जब हम वहां पहुंचे तो सैनिकों ने पहले ही पुल पार करना शुरू कर दिया था। सारी जगह लोगों से खचाखच भरी थी। अध्यक्ष को देखते ही सबने उनके लिए रास्ता छोड़ दिया।

अध्यक्ष के कुछ कहने से पहले ही साईस ने घोड़े को आगे बढ़ा दिया। पुल के एक कमजोर हिस्से पर पांव रखते ही घोड़ा खौफ खा गया और चौंक कर जोर से हिनहिनाया। लोगों में खलबली मच गई।

अध्यक्ष तुरन्त पुल पर जा पहुंचे। "अभी इसे न ले जाओ," उन्होंने साईस से कहा। "पहले साथियों को पार पहुंचने दो।"

"घोड़ा आपके कपड़े और सामान लिए हुए है," साईस ऊंची आवाज में बोला।

हमें मालूम था कि वात ऐसी ही है। अगर घोड़ा उस पार न पहुंचा तो अध्यक्ष को विस्तर के विना ही रात काटनी पड़ेगी। इसलिए हमने साईस की वात का समर्थन करते हुए कहा, "अध्यक्ष माओ, उसे धीरे-धीरे आगे ले जाने दीजिए।"

"अगर वह पार न पहुंच पाया तो वड़ी मुश्किल होगी।"

अध्यक्ष ने स्नेहपूर्ण झिड़की दी। "छन छाङ-फ़ङ, घोड़े को वापस लौटाने में साईस की मदद करो," उन्होंने कहा। "पहले सैनिकों को पुल पार करने दो।"

सिपाही घोड़े को आगे धकेलने में साईस की मदद कर रहे थे। मुझे पुल पर जाकर घोड़े को लौटाना पड़ा।

जव हम उसे किनारे ले आए, तो अध्यक्ष ने सिपाहियों से कहा कि वे जल्दी-जल्दी पुल पार कर लें। जव आखिरी सिपाही नदी के उस पार पहुंच गया तव कहीं हम लोगों ने अध्यक्ष के पीछे-पीछे चलते हुए पुल पार किया।

उस रात हम मोशीम्येन पहुंच गए। अध्यक्ष ने हमें वताया, "याद रखो, हमें हर जगह और हर समय अपने सैनिकों का ध्यान रखना चाहिए, दूसरों का ध्यान रखना चाहिए। अगर हम सिर्फ एक घोड़े की खातिर उन तमाम साथियों का आगे वढ़ना रोक देते, तो कितना बुरा होता। होता कि नहीं?"

वहां से हम लोग अध्यक्ष के साथ लूतिङ गए। आनशुनछाङ के मुकावले वहां नदी का पाट कुछ कम था। लेकिन पानी का

बहाव बहुत तेज था और दोनों तरफ चट्टानें खड़ी थीं।

यहां पुल फौलाद की तरह मोटी-मोटी जंजीरों से बना हुआ था, जो दोनों तरफ चट्टान में गड़ी हुई बड़ी-बड़ी लोहे की कीलियों मे बंधी थीं। पुल के दोनों तरफ जंजीरों का ही जंगला बना हुआ था।

लूतिङ में हम लोग कामरेड ल्यू या-लओ और अन्य नेताओं से मिले। वे अध्यक्ष को एक विशाल गिरजाघर के सामने ले गए, जहां से उन्होंने आसपास के स्थानों का सर्वेक्षण किया। उसके बाद हम लोग अध्यक्ष के साथ पुल पर गए।

पहले वहां फौलाद की केबिलों पर तख्ते बिछे हुए थे। लेकिन हमारी अग्रिम यूनिटों का कब्जा होने से पहले ही दुश्मन ने उनमें आग लगा दी थी। मैंने आगे बढ़कर उन केबिलों पर नजर डाली जो एक कटोरे के व्यास के बराबर मोटी थीं, और जले हुए तख्तों को देखा। नीचे उफनती नदी पर नजर डालते ही मेरा सिर चकरा गया।

अध्यक्ष ने देख लिया। मेरी ओर इशारा करते हुए उन्होंने पूछा, "डर लगता है क्या?"

"नहीं।"

वे पुल पार करने के लिए आगे बढ़ गए। हम सब उनके पीछे थे। मैंने उन्हें बहुत ध्यान से देखा। वे बड़े इतमीनान से, बड़े स्वाभाविक ढंग से आगे बढ़ते जा रहे थे। उन्होंने सिर उठा कर सीधी चट्टानों की तरफ देखा, जो नदी के दोनों ओर आसमान से बातें कर रही थीं। जल-प्रवाह का भीषण गर्जन उनकी

विचार-श्रृंखला को भंग करने में असमर्थ था। पुल को बहुत से लोग एक साथ पार कर रहे थे। इसलिए जब अध्यक्ष उसके बीचोंबीच पहुंचे, तो पुल डगमगाने लगा। मैंने जंजीर का जंगला कस कर पकड़ लिया और अपनी जगह रुक गया। अध्यक्ष ने मेरी तरफ मुड़ कर कुछ कहा। लेकिन मैं न सुन सका। नदी के भीषण गर्जन में बाकी समस्त स्वर विलीन हो गए। जाहिर था कि वे मुझसे यह पूछ रहे थे कि मुझे कोई परेशानी तो नहीं। मैंने सिर हिला दिया। मगर उन्होंने रुक कर मेरा हाथ पकड़ लिया। तब हम दोनों साथ-साथ चलने लगे।

एक क्षण के लिए मैंने नीचे देखा। उमड़ती लहरें तेज कटार की तरह पुल पर प्रहार कर रही थीं। मेरा सिर घूम गया। मैंने आंख उठाकर पुल पर अपने साथियों की तरफ देखा। कुछ लोग धीरे-धीरे कदम रखते हुए आगे बढ़ रहे थे, कुछ लोग फौलाद की केबिलों के सहारे रेंगते हुए आगे बढ़ रहे थे। बाकी एक दूसरे का हाथ थामे, बातें करते और हंसी-मजाक करते एक कतार में चलते जा रहे थे।

अध्यक्ष अब भी मुझे हाथ का सहारा दिए हुए थे और पीछे आने वाले साथियों को देखते जा रहे थे। वे कभी-कभी रुक जाते और हाथ हिलाकर या कुछ शब्द कह कर उन्हें प्रोत्साहन देते। आखिरकार हमने पुल पार कर ही लिया।

"अध्यक्ष माओ," नदी के उस पार पहुंच कर मैंने कहा, "सिर्फ एक फौजी दस्ते के साथ हम लोग इस तरह के पुल को अनन्त काल तक अपने हाथ में रख सकते हैं। लेकिन दुश्मन . . .।"

अध्यक्ष हंस पड़े। "दुश्मन आखिर दुश्मन ही है। उसकी तुलना हम एक ऐसी फौज से नहीं कर सकते जिसका नेतृत्व कम्युनिस्ट पार्टी करती है। ठीक है कि नहीं?"

"ठीक है!" हम सबने एकस्वर से उत्तर दिया।

श्वेइचिती के मार्ग पर

तातू नदी पार करने के वाद हम कुछ दिन ह्वालिङफिङ में ही रहे। तव हमने श्वेइचिती की तरफ कूच कर दिया। लोगों ने वताया कि एक दिन की यात्रा के वाद हम वहां पहुंच जाएंगे।

हम लोगों ने सुवह-सबेरे ही प्रस्थान कर दिया। अध्यक्ष व्यस्त थे। इसलिए वे केन्द्रीय कमेटी के संगठनों के साथ नहीं वल्कि मेडिकल यूनिट के साथ गए, जो वाद में रवाना हुई। गार्ड दस्ते के नेता कामरेड हू छाङ-पाग्रो और मैं अध्यक्ष के साथ गए।

हम एक पहाड़ पर पहुंचे, जिसकी तलहटी से चोटी तक पहुंचने में छै ली का रास्ता तय करना था। अचानक दुश्मन के तीन हवाईजहाज गोता लगाकर हमारी तरफ वढ़ने लगे। हम लोग विखर गए, मगर आगे वढ़ते रहे। कामरेड हू अध्यक्ष के आगे चल रहे थे और मैं पीछे। अध्यक्ष सड़क पर ध्यान लगाए चल रहे थे, मानो कोई गुत्थी सुलझा रहे हों। सिर्फ कभी-कभार हवाईजहाजों की तरफ सिर उठाकर देख लेते थे। लेकिन हम दोनों वहुत चिन्तित थे।

दुश्मन के जहाजों ने आसमान की परिक्रमा की और उस

दिशा में वढ़ गए जहां से हम आ रहे थे। हमने अभी खतरों मे कुछ राहत पाई थी कि हमारे पीछे ऊपर से दो जोरदार धमाके सुनाई पड़े। मैं तुरन्त समझ गया कि यह वम फटने की आवाज है।

"अध्यक्ष माओ," मैं चिल्लाया, और तेजी से उनकी ओर दौड़ा। अभी मैं कुछ ही दूर पहुंचा था कि कई वम मेरे सामने और दाएं-वाएं फटे। मैं जमीन पर गिर पड़ा। अध्यक्ष धुएं के वादलों से घिर गए। मैं रेंगता हुआ उठा और अध्यक्ष की ओर देखने लगा। वे हू छाङ-पाओ के पास बैठे थे, जो घायल हो गए थे। अध्यक्ष को चोट नहीं आई थी। मेरी जान में जान आई। अपने चेहरे की धूल और पसीना पोंछता हुआ मैं दौड़कर अध्यक्ष के पास जा पहुंचा। वे हू का सिर दवा रहे थे। हू दोनों हाथों से अपना पेट थामे हुए थे। उनके माथे पर पसीने की वड़ी-वड़ी बूंदें झलक रही थीं। लेकिन उनके मुंह से "उफ" तक नहीं निकला।

मैं हक्का-वक्का रह गया। मेडिकल अर्दली दौड़ा-दौड़ा वहां आ पहुंचा।

"जल्दी करो," अध्यक्ष ने उससे अनुरोध किया, "इसकी फौरन मरहम-पट्टी करो।"

हू ने हाथ हिलाकर इनकार किया। "अध्यक्ष माओ, मेरी जीवन-लीला समाप्त होने जा रही है। दवाइयों को सम्भाल कर रख लीजिए। वाद में काम आएंगी। वाकी लोगों को आगे वढ़ना है।" हू का लाल चेहरा पीला पड़ गया।

"जख्म ज्यादा गम्भीर नहीं है। तुम ठीक हो जाओगे।" अध्यक्ष ने दिलासा दिया। हू की मरहम-पट्टी करने में उन्होंने मेडिकल अर्दली की मदद की। इसके वाद उन्होंने हू को वच्चे की तरह अपनी गोद में लिटा लिया और वड़े प्यार से बोले, "तुम टीक हो जाओगे। कुछ देर और वरदाश्त करो। हम लोग तुम्हें श्वेइचिती तक ले जाएंगे। वहां किसी डाक्टर के इलाज से तुम जल्दी ही ठीक होकर हमारे बीच लौट आओगे।"

धुंधली नजर से हू ने अध्यक्ष की तरफ वड़े प्यार से देखा। मगर जव उनको यह पता चला कि हम लोग उन्हें उठा कर ले जाएंगे तो वे वड़े परेशान हो उठे। लड़खड़ाती जवान से उन्होंने कहा, "अध्यक्ष माओ, इसमें कोई फायदा नहीं होगा। मेरे पेट में खून ही खून भर गया है। मरने की मुझे परवाह नहीं। अफसोस सिर्फ इस बात का है कि मैं आपके साथ उत्तरी शेनशी तक नहीं जा सकूंगा और वहां का आधार-क्षेत्र नहीं देख पाऊंगा।" दो चमकदार आंसू उनकी आंखों से टपक पड़े। एक क्षण के लिए उनका दम घुट गया, मानो गले में कोई चीज अटक गई हो। फिर प्रयत्नपूर्वक वे बोले, "मेरे माता-पिता चीआन में रहते हैं। अगर हो सके तो उन्हें मेरी मौत की खवर दे देना।"

अध्यक्ष विलकुल खामोश रहे। उन्होंने हू को और अच्छी तरह पकड़ लिया।

"आप ठीक हो जाएंगे," मेडिकल अर्दली और मैंने हू का हौसला वढ़ाते हुए कहा। "आप जरूर हमारे साथ उत्तरी शेनशी जाएंगे।"

हू ने अपना सिर हिला दिया। "कामरेड छन," उन्होंने बड़ी धीमी आवाज में मुझसे कहा, "मैं अब अध्यक्ष की रक्षा करने में असमर्थ हूं। तुम उनकी और केन्द्रीय कमेटी के दूसरे नेताओं की अच्छी तरह रक्षा करना।"

हू की आवाज इतनी धीमी थी कि मुझे उनके शब्द मुश्किल से सुनाई पड़े। अन्त में बड़ी कोशिश के साथ उन्होंने अपना सिर उठाया और अध्यक्ष की तरफ और हमारी तरफ एकटक देखने लगे। कांपते होंठों से उन्होंने ये शब्द कहे, "क्रान्ति . . . जिन्दा . . . बाद !" और तब उन्होंने सदा के लिए आंखें मूंद लीं।

मेडिकल अर्दली और मैंने उन्हें जोर-जोर से पुकारा। मगर उनके प्राण-पखेरू उड़ चुके थे। हमारी आंखों से आंसुओं का दरिया उमड़ पड़ा।

अध्यक्ष ने धीरे से अपना हाथ हू की गरदन के नीचे से हटा लिया और उनका सिर आहिस्ता से जमीन पर रख दिया। वे खड़े हो गए। धीमी-सी आवाज में उन्होंने मुझसे कहा, "चादर"।

मैंने अपने पास मौजूद चादर उन्हें थमा दी। उन्होंने उसे खोला और बड़ी सावधानी से कामरेड हू पर डाल दिया।

उस दिन हवा का हल्का-सा झोंका भी नहीं आया। पहाड़ पर उगे पेड़-पौधे स्तब्ध खड़े थे। मानो इस दिवंगत रणवीर को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हों। हमने अपने आंसू पोंछे और उन्हें वहीं दफना दिया। उसके बाद अध्यक्ष का अनुसरण करते हुए हम आगे बढ़ गए।

बर्फीले पर्वत तथा दलदली मैदान

जून १९३५ में, तातू नदी पार करने के बाद हम लोग च्याचिन पर्वत की तराई में पहुंचे। इस पर्वत की गगनचुम्बी चोटी बर्फ से ढकी हुई थी। जून का तपता हुआ सूरज अभी डूबा नहीं था। किन्तु उसकी तपन इस महान हिम-समूह के कारण ठंढी पड़ चुकी थी।

हम लोग इस पर्वत के नीचे एक दिन के लिए रुके। पर्वत के ऊपर दर्रे पर चढ़ते समय कड़कड़ाती सर्दी से अपनी रक्षा करने के लिए अध्यक्ष माओ ने हमें अदरक और मिर्च इकट्ठी करने की सलाह दी। अगले दिन सुबह तड़के हमने पहाड़ पर चढ़ना शुरू किया।

च्याचिन पर्वत की चोटी सूर्य के प्रकाश में चमचमाती किसी तलवार की नोक की भांति आकाश को बेध रही थी। वह सारी चोटी इस प्रकार चमक रही थी मानो हजारों जगमगाते शीशों से सजा दी गई हो। उसकी चमक से हमारी आंखें चौंधिया जाती थीं। पहाड़ की चोटी पर वर्फ उड़ रही थी। वह एक अलौकिक दृश्य था। ऐसा लगता था मानो हम लोग परियों के देश में पहुंच गए हों।

शुरू-शुरू में तो बर्फ बहुत गहरी नहीं थी, इसलिए हम लोग उस पर काफी आसानी से चल सकते थे। लेकिन कोई बीस मिनट बाद बर्फ का ढेर और भी गहरा होता गया। अगर एक भी कदम लापरवाही से उठाते तो सीधे गड्ढे में जाकर गिरते और तब उसमें से अपने को खींच कर निकालने में घंटों लग जाते। अगर उधर से चलते जिधर बर्फ कम होती, तो वहां फिसलन होती, एक कदम आगे बढ़ते, तो तीन कदम पीछे फिसल जाते। अध्यक्ष माओ हमारे आगे-आगे चल रहे थे, उनके कन्धे झुके हुए थे और उन्हें चलने में कठिनाई हो रही थी। कभी वे कई कदम पीछे फिसल जाते। तब हम उन्हें हाथ से सहारा देते; परन्तु हमें भी अपने पैर जमाए रखने में कठिनाई हो रही थी। ऐसे मौके पर वे हमारी बांह कस कर पकड़ लेते और हमें ऊपर खींच लेते। वे रुई का एक भी कपड़ा नहीं पहने हुए थे। थोड़ी देर चलने के बाद उनकी भूरे रंग की खाकी पतलून बिलकुल भीग गई और उनके काले रंग के कपड़े के जूते पाले से चमकने लगे। वे बहुत थक गए थे।

इस चढ़ाई से हम सबका दम निकला जा रहा था। मैं घिसटता हुआ अध्यक्ष के पास गया और बोला: "अध्यक्ष! इस पहाड़ पर चढ़ना बहुत मुश्किल है, आइये, हम लोग आपको सहारा दें!" मैं बड़ी मुश्किल से उनके पास खड़ा रह सका। लेकिन वे बिना रुके आगे बढ़ते हुए बोले: "नहीं, तुम लोग भी उतना ही थके हुए हो जितना कि मैं!"

पहाड़ पर हम लोग अभी आधी ही दूर पहुंचे थे, कि अचानक

तूफानी हवा चलने लगी। गहरे काले बादल पहाड़ की चोटी पर छाने लगे। हवा के झोंकों से बर्फ के गोले उड़ने लगे और वे निर्दयता से हमारे चारों ओर चक्कर काटने लगे।

"अध्यक्ष, बर्फ गिरने वाली है!" मैं तेजी से कुछ कदम आगे बढ़ कर उनका कपड़ा खींचते हुए बोला।

उन्होंने हवा का सामना करते हुए सिर उठाकर देखा। "हां, बर्फ तुरन्त ही गिरने वाली है। हमें तैयार हो जाना चाहिए!" ज्योंही उनकी बात समाप्त हुई, अंडे के बराबर ओले पड़पड़ाते हुए हमारे ऊपर गिरने लगे। बर्फ और ओलों के इस तूफानी समुद्र के सामने हमारे छाते बेकार हो गए थे। हम लोगों ने फौरन मोमजामे को छाते की जगह इस्तेमाल किया और अध्यक्ष माओ को बीच में करके उनके चारों ओर जमा हो गए। हमारे चारों ओर तूफान इस प्रकार चल रहा था, मानो आकाश पाताल एक हो रहा हो। हमें सिर्फ लोगों का आतंकपूर्ण कोलाहल, घोड़ों की हिनहिनाहट और अकस्मात बिजली की भीषण कड़कड़ाहट सुनाई पड़ती थी। उसी समय ऊपर से एक गरजती हुई आवाज आई:

"साथियो! डटे रहो! हिम्मत न हारो! डटे रहने में ही विजय है!" मैंने सिर उठाकर ऊपर देखा। पहाड़ की चोटी पर लाल झंडा लहरा रहा था।

"वहां कौन चिल्ला रहा है?" मैंने अध्यक्ष माओ से पूछा।

"प्रचार दल के कामरेड," अध्यक्ष ने उत्तर दिया। "हमें उनकी इस दृढ़ भावना से अच्छी तरह सीखना चाहिए।"

बर्फ का तूफान जिस प्रकार अचानक उठा था, उसी प्रकार अचानक शान्त भी हो गया। जलता हुआ लाल सूरज फिर निकल आया। अध्यक्ष माओ मोमजामे से वाहर निकल आए और बर्फीले पर्वत के बीच खड़े हो गए। बर्फ अब भी उनके चारों ओर बिखरी पड़ी थी। वे ज्यों के त्यों खड़े रहे।

"क्यों, यह मुठभेड़ कैसी रही?" उन्होंने पूछा। "क्या कोई घायल तो नहीं हुआ?"

किसी के भी घायल होने की रिपोर्ट नहीं मिली। केवल लाओ य्वी अपना घोड़ा लेकर आया और बोला: "एक ओला लग जाने से मेरा हाथ फूल गया है!"

अध्यक्ष माओ ने तुरन्त मेडिकल अर्दली चुङ फ़ू-छाङ को लाओ य्वी के हाथ पर मलहम लगाने को कहा। परन्तु लाओ य्वी मुस्कराने लगा। उसने मलहम लगाने से इनकार कर दिया और अपना घोड़ा लेकर आगे वढ़ गया। मैं चङ श्येन-ची के साथ चल रहा था। मैंने उसे छेड़ते हुए कहा: "कहो दोस्त, क्या हाल है?"

उसने अध्यक्ष माओ की ओर इशारा किया और कहा: "अगर वे यह सब सह सकते हैं, तो हम भी सह सकते हैं।" तव उसने बर्फ में गहराई तक धंसे हुए अपने पैरों की ओर देखा और मजाक में कराहने लगा: "जरा यह तमाशा देखो! मेरे पैर ही जम गए हैं!" यह वात सच थी। सर्दी से सुन्न हो जाने के कारण ऐसा लगता था कि पैर ही नहीं हैं!

ज्यों ज्यों हम लोग ऊपर चढ़ते गए, चढ़ना और भी मुश्किल

होता गया। जब हम लोग पहाड़ के नीचे ही थे, तो उस समय स्थानीय लोगों ने हमें बताया था : "जब तुम लोग पहाड़ की चोटी पर पहुंचो, तो न तो बात करना, न हंसना, नहीं तो पहाड़ के देवता तुम लोगों का गला घोंट कर मार डालेंगे।" हम लोग अन्ध-विश्वासी नहीं थे, पर उन लोगों ने जो कुछ कहा था, उसमें कुछ न कुछ सच्चाई अवश्य थी। अब मेरे लिए सांस लेना भी दुश्वार हो गया था। ऐसा लगता था मानो मेरा सीना चक्की के दो पाटों के बीच पिसा जा रहा हो। मेरे दिल की धड़कन बहुत तेज हो गई थी और मेरे लिए बात करना भी मुश्किल हो गया था, हंसना तो दूर रहा। ऐसा लगता था कि अगर मैं मुंह खोलूंगा, तो अचानक मेरा कलेजा उछल कर मेरे मुंह में आ जाएगा। मैंने अध्यक्ष माओ की ओर देखा। वे हवा तथा बर्फ का मुकाबला करते हुए, दृढ़ता से कदम रखते हुए आगे-आगे चले जा रहे थे। पर्वत की चोटी पर, प्रचार दल फिर चिल्लाया :

"साथियो, कदम आगे बढ़ाओ ! सामने देखो ! चलते रहो !"

अन्त में हम लोग बर्फीले दर्रे के शिखर पर पहुंच गए। चारों ओर बर्फ की सफेद चादर बिछी हुई थी। लोग तीन-तीन चार-चार के दलों में बैठे हुए थे। कुछ लोग इतने लस्त हो गए थे कि वे लेट गए। जब उन्होंने अध्यक्ष माओ को देखा, तो बहुत से साथी उनको पुकारते हुए आए : "अध्यक्ष, आइये, कुछ देर आराम कीजिए।"

जब अध्यक्ष ने यह सब देखा, तो वे फौरन उन लोगों के

पास गए और बड़ी नम्रता से बोले : "साथियो, हम लोग यहां आराम नहीं कर सकते ! यहां हवा बहुत कम है। जरा और कोशिश करो, तो हम लोग नीचे उतरते ही चौथी मोर्चा-सेना में जा मिलेंगे।"

यह सुनते ही, हम लोग फिर जोश में आ गए और ढाल से अव्यवस्थित रूप से नीचे उतरने लगे। मुझे नहीं मालूम कि चोटी पर पहुंचने में हमने जो विजय प्राप्त की, उसके कारण या किसी और कारण से, अचानक मेरा सिर चकराने लगा। ऐसा लगा कि मेरे पैरों के नीचे ऊंचा पहाड़ हिल रहा हो। मेरा शरीर मेरे काबू में न रहा और मैं बड़े जोरों से कांपने लगा। मैं लड़खड़ाता हुआ अध्यक्ष माओ के सामने पहुंचा और बोला : "अध्यक्ष, मैं. . ." मेरी बात अभी पूरी भी न हुई थी कि मैं बेहोश होकर गिर पड़ा। किन्तु मैं पूरी तरह बेहोश नहीं हुआ था। मुझे अब भी इस बात का ज्ञान था कि अध्यक्ष अपने दोनों हाथों से मुझे सहारा दिये हुए हैं और मेरा नाम लेकर मुझे पुकार रहे हैं। मुझे लगा, मानो मैं हवा में तैर रहा हूं। मुझे सांस लेने में इतनी कठिनाई हो रही थी कि बोलते नहीं बनता था। थोड़ी ही देर में, अचानक हवा के एक तेज झोंके से बर्फ के गोले मेरे चेहरे से आकर टकराए जिससे कि मेरी चेतना-शक्ति लौट आई और मैंने अपनी आंखें खोल दीं। चङ श्येन-ची आदि साथियों ने मुझे घेर लिया और पूछा कि क्या मामला है। अध्यक्ष माओ ने भी मुझ से पूछा : "क्या हाल है ? अब तो तबीयत अच्छी है न ?" मैं तुरन्त बहुत जोर



अन्त में हम लोग बर्फीले दर्रे के शिखर पर पहुंच गए। (पृष्ठ ८१)

लगाकर उठ खड़ा हुआ और हम लोग आगे वढ़े।

अध्यक्ष माओ के पैर कदम-कदम पर वर्फ में वहुत गहराई तक धंस जाते थे। वे पीछे मुड़-मुड़ कर उन साथियों को देखते थे जो अभी तक चोटी पर नहीं पहुंच सके थे। वे लोग इतने धीरे-धीरे चल रहे थे मानो कोई लम्वा सा सांप रेंगता हुआ चोटी पर चढ़ रहा हो। अध्यक्ष माओ उनकी ओर लगातार हाथ हिला रहे थे।

हवा तेज होती जा रही थी और काले-काले वादल आकाश में फिर घिर रहे थे। मैं अध्यक्ष माओ के पास लपक कर गया और चिल्लाया : "अध्यक्ष, आप यहां नहीं रुक सकते! कृपया तेजी से आगे वढ़िये!"

ऊपर चढ़ने की अपेक्षा नीचे उतरना आसान था। पर चूंकि पर्वत के इस ओर धूप नहीं थी, इसलिए इधर सर्दी थी। हम सवने पतले सूती कपड़े पहन रखे थे, और सर्दी से कांप रहे थे। मैंने अपनी कमर में एक रजाई वांध रखी थी और इस प्रकार वर्फीली ढाल पर चलता हुआ, फिसलता हुआ और लुढ़कता हुआ नीचे चला जा रहा था।

थोड़ी ही देर वाद, हम लोग चौथी मोर्चा-सेना के साथियों से जा मिले। वे झंडे लेकर चल रहे थे जिस पर लिखा हुआ था : "उत्तर-पश्चिमी सछ्वान में आधार-क्षेत्र का विस्तार करो!" हमें ऐसा लगा मानो हमारे शरीर में नई शक्ति आ गई हो। हमारे मन में उनके प्रति ऐसी ही भावना जागृत

हुई जैसी कि किसी ऐसे भाई के प्रति जागृत होती है जिससे हम वहुत दिनों पहले विछुड़ गए हों।

जव हम ग्रन्तिम ढालों से नीचे उतरे, तो मैंने पीछे मुड़कर ऊपर की ओर देखा। वर्फ से ढकी पहाड़ की चोटी पर ग्रव भी लाल झंडे लहरा रहे थे। प्रचारक साथियों की ग्रथक ग्रावाज ग्रव भी हमारे कानों में गूंज रही थी।

*

*   *

च्याचिन पर्वत से नीचे उतर कर हम लोगों ने माग्रोकुङ में कुछ दिनों तक ग्राराम किया। फिर हम लोग एक ग्रौर ऊंचे वर्फीले पर्वत – मङपी पर्वत पर चढ़े। हम लोग उत्तर-पश्चिमी सछ्वान में च्वोखची नामक स्थान पर पहुंचे, जहां हम लोग दलदली मैदान पार करने की तैयारी में लग गए। इसके वाद हम फिर रवाना हुए।

जिस समय हम लोगों ने च्वोखची से कूच किया, उस समय सबेरा हो चुका था ग्रौर ग्राकाश साफ था। पर बीस ली पहुंचते-पहुंचते काले-काले बादल घिर ग्राए ग्रौर शीघ्र ही बूंदावांदी होने लगी। हम लोग एक ऐसे निर्जन पर्वतीय क्षेत्र से गुजर रहे थे, जो चित्र-विचित्र चट्टानों से भरा पड़ा था। उन नोकीली खड़ी चट्टानों तथा गिरे हुए पत्तों के ढेरों के बीच कोई पगडंडी तक न थी। कुछ ही क्षण वाद, वड़े जोरों से विजली कड़की

और वर्षा होने लगी। पानी की बड़ी-बड़ी बूंदें तथा गिरती हुई टहनियां निर्दयता से हमारे ऊपर आघात करने लगीं। अध्यक्ष के कपड़े तथा हमारे कपड़े भी पानी से तर-बतर हो गए।

तीसरे पहर चार बजते-बजते अंधेरा हो गया। लगातार मूसलाधार वर्षा होती रही। हम लोग किसी रहने लायक जगह से मीलों दूर थे। अध्यक्ष की लालटेन का तेल भी समाप्त हो गया था। उस घने अन्धकार में हम लोग एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते थे। ऐसे में हमें रोशनी की कितनी आवश्यकता थी! अध्यक्ष बड़ी कठिनाई से रास्ता टटोलते आगे बढ़ते जा रहे थे और बहुत ही थके दिखाई पड़ते थे। यह देखकर मैं अत्यंत बेचैन हो उठा। जरा सोचिये! जब कि दूसरे लोग पड़ाव डालने की जगह पहुंचते ही सो जाएंगे, अध्यक्ष बैठकों में शरीक होने में, तार पढ़ने में, दस्तावेजों का मसविदा आदि तैयार करने में व्यस्त हो जाएंगे। वास्तव में कितने मेहनती थे वे!

"हम लोग यहां रुक जाएं, अध्यक्ष," मैंने सुझाव दिया।

वे रुक गए। क्षण भर सोचने के बाद उन्होंने कहा: "अच्छी बात है, सबसे कह दो।"

लेकिन अब हम लोग मुसीबत में पड़ गए थे। हमारे चारों ओर पानी के गड्ढे, चट्टान और अन्धकार था। हम लोग उनके लिए सोने की जगह कहां ढूंढ़ते? अपनी बुद्धि का प्रयोग करके और कुछ थोड़ी सी सख्त कोशिश करके हमने किसी प्रकार

एक "झूला" तैयार किया जिसे हमने दो छोटे-छोटे पेड़ों से लटका दिया।

भीगे हुए झूले को छूकर अध्यक्ष ने विनोद भाव से कहा: "मैं च्याङशी के ठंडे बिस्तर पर सोऊंगा।"

अध्यक्ष के विनोद भाव ने हम सब को उत्साहित कर दिया। जब कभी भी हम कठिनाइयों में पड़ते, तो उनके कुछ मनोरंजक शब्द वातावरण को पूरी तरह बदल देते। उनके हंसी-मजाक से हम अपनी थकान भूल जाते और हम में नई शक्ति पैदा हो जाती। हम किसी भी चीज का मुकाबला करने को तैयार हो जाते।

जब अध्यक्ष लेट गए, तो हम लोग अपने लिए कोई जगह तलाश करने लगे। वर्षा अब भी हो रही थी। मैंने चारों ओर टटोला और एक खड़ी चट्टान को स्पर्श किया। जब मैंने उस पर अपना हाथ फेरा, तो उसमें मुझे एक छेद मिला! गुफा! मैंने पुलकित होकर सोचा। बिना और अधिक सोचे, मैं उसमें घुस पड़ा। फड़ाक! मेरा सिर किसी सख्त चीज से टकराया। वह कोई गुफा नहीं थी, बल्कि सिर्फ एक छोटी सी खोखली जगह थी। लेकिन यह भी बड़ी मुश्किल से मिली थी। दर्द की परवाह किये बिना, उस खोखली जगह में अपना सिर डालकर मैं करवट लेकर लेट गया। पर जमीन पर इतना पानी क्यों है? अपने हाथ से टटोल कर मैंने देखा कि मैं पानी के छोटे से गड्ढे में लेटा हुआ हूं। खैर, कोई बात नहीं। मैंने अपना छोटा सा बन्डल गड्ढे में रख दिया और वर्षा

से अपने शरीर की रक्षा करने के लिए अध्यक्ष के टूटे छाते का प्रयोग किया। मेरा सिर अब भी वर्षा में भीग रहा था लेकिन फिर भी सिर चट्टान पर रखते ही मैं गहरी नींद में सो गया।

जिस समय मैं सोकर उठा, उस समय तक सूरज निकल आया था। इसकी किरणें घने पेड़ों को चीरती हुई जगमगा रही थीं। घाटी में प्रातःकाल का कोहरा अब भी छाया हुआ था। वर्षा थम चुकी थी, पेड़ों से मोती की तरह बूंदें टपक रही थीं। ज्योंही मैंने अपनी आंखें खोलीं, त्योंही मुझे गर्दन में दर्द मालूम हुआ। वह एक अजीव तरह का दर्द था, जो तभी होता था, जब मैं नीचे देखता था। पानी अब भी मेरे चेहरे पर चू रहा था। दर्द से बचने के लिए मैं केवल यही कर सकता था कि पानी नाक में जाने दूं। मैंने इस पर गम्भीरता से ध्यान नहीं दिया, क्योंकि मैंने सोचा कि यह गम्भीर बीमारी नहीं है। इस बारे में शोर मचाने की जरूरत नहीं। इसलिए मैंने किसी से कुछ नहीं कहा।

हमने अपना अभियान जारी रखा।

अध्यक्ष माओ हमेशा हर चीज पर ध्यान रखते थे। सबसे पहले उन्होंने ही देखा कि मुझे कुछ तकलीफ है और मुझसे मजाक में पूछा : "क्या मामला है, छन छाङ-फ़ङ ? हर वक्त आसमान की ओर क्यों देखते हो ? क्या हवाई जहाज की तलाश में हो ?"

ऊपर पत्तियों की ओर अपलक नेत्रों से देखते हुए मैंने जवाब दिया : "यहां हमारे ऊपर दो आसमान हैं। दुश्मन के हवाई

जहाज चाहे जितने निपुण हों, पर वे हमारा पता नहीं पा सकते।"

"तो फिर आकाश में कौन सी ऐसी चीज है, जिसमें तुम्हें इतनी दिलचस्पी है?" उन्होंने फिर प्रश्न किया।

मैं उनके पास गया और बोला : "मेरी गर्दन में कुछ तकलीफ है। मैं नीचे नहीं देख सकता। जब भी मैं अपना सिर हिलाने की कोशिश करता हूं, मुझे भयानक पीड़ा होती है।"

अध्यक्ष अचानक रुक गए। "कोई गम्भीर बात नहीं है।" मैंने आगे कहा। "थोड़ी देर में अपने आप ठीक हो जायगा।" मैं उन्हें परेशान नहीं करना चाहता था।

मेरी अन्तिम बात की उपेक्षा करके उन्होंने मेरी गर्दन को बड़ी कोमलता से छुआ और मुड़कर मेडिकल अर्दली चुङ फ़ू-छाङ को पुकारा कि वह तुरन्त आकर मुझे देख जाय।

अध्यक्ष की पुकार सुनकर सभी लोग मेरे चारों ओर जमा हो गये। चङ श्येन-ची और चुङ युङ-हो ने मेरी बीमारी में खास दिलचस्पी ली। उन्होंने मेरी गर्दन दबायी, मेरा सिर सहलाया और मुझे इतना तंग किया कि मैं उत्तेजना के कारण अवाक रह गया।

चुङ फ़ू-छाङ ने बहुत सावधानी के साथ मेरी परीक्षा की। फिर वह मुस्कराकर अध्यक्ष की ओर मुड़ा : "मैं इस मरीज के लिए कुछ नहीं कर सकता।" उसने कहा : "रात को इसकी गर्दन की नसें तन गई होंगी!"

देखने से लगता था कि अध्यक्ष अब उतने चिन्तित नहीं हैं। उन्होंने कहा : "फिर भी हमें इसके लिए कुछ न कुछ तो

करना ही पड़ेगा। चङ श्येन-ची! डाक्टरी दल में जाकर डाक्टर से कहो कि वह आकर छन छाङ-फ़ङ को देख जाएं।"

इसके पहले कि मैं यह कहता कि कोई जरूरत नहीं है चङ श्येन-ची चला गया था।

अपना चेहरा ऊपर करके चलते हुए गिरने का भय था। इसलिए मुझे बचाने के लिए, अध्यक्ष मेरा हाथ पकड़ कर मुझे अपने साथ ले चल रहे थे, जैसे कोई पिता अपने बच्चे को ले चल रहा हो, जो अभी भी चलना सीख रहा हो। "चिन्ता न करो।" उन्होंने मुझे सान्त्वना देते हुए कहा।

डाक्टर दौड़ते हुए आए। उन्होंने मुझसे विस्तार से बहुत से प्रश्न किये, मेरी गर्दन की परीक्षा की और कुछ मरहम मल दिया। थोड़ी ही देर में गर्दन कुछ ठीक हो गई।

"अब तो बिलकुल ठीक हो न?" अध्यक्ष ने पूछा। उन्होंने देखा कि मैं अपना सिर फिर झुका सकता हूं।

मैंने सिर हिलाया और उन्हें बताया कि मैं बिलकुल ठीक हूं। इस पर वे बोले: "तुम भी अजीब आदमी हो! सोने की खातिर, तुम अपना सिर दे देने को तैयार हो गए!"

*

*   *

पहाड़ों और जंगलों को अपने पीछे छोड़ते हुए, हम लोग माओअड़काए पहुंचे। दलदली मैदान पार करने के लिए

तैयारियां पूरी करनी थीं। इसलिए हम लोग यहां रुक गए।

मैं बुरी तरह मलेरिया से ग्रस्त हो गया था। च्याचिन पर्वत पार करने से पहले, मुझे मलेरिया हो चुका था, किन्तु पर्वत पार करते समय एक वार भी नहीं हुआ था। फिर मैं वारिश से तर-वतर हो गया था तथा थक गया था और अव जव कि हम अपने मार्ग की सवसे कठिन वाधा दलदली मैदान को पार करने को तैयार हुए तो मैं मलेरिया से बुरी तरह पीड़ित हो गया। उस समय वीमार पड़ना मेरे लिए वड़े दुर्भाग्य की वात थी और सभी के लिए चिन्ता का विषय था, खास तौर से अध्यक्ष माओ वहुत चिन्तित थे। वे भी अव वहुत कमजोर हो गए थे और उनका शरीर पहले से लम्वा दिखाई पड़ने लगा था।

उन्हीं दिनों उन्हें वहुत सी बैठकों में शरीक होना पड़ता था। कभी-कभी ये बैठकें रात में वहुत देर तक होती रहती थीं और तव विना आराम किये, वे रात के अन्तिम पहर तक अन्य नेताओं के साथ विभिन्न समस्याओं पर वहस किया करते थे। हालांकि वे वहुत व्यस्त रहते थे, फिर भी वे मुझे देखने अक्सर आते थे। जव वे देखते कि मैं वहुत हतोत्साहित हूं, तो वे मुझे यह समझाकर उत्साहित करते कि आखिर हमें क्यों ये दलदली मैदान पार करने पड़ रहे हैं। वे वहुत सी दिलचस्प घटनाएं सुना कर मेरा मन वहलाते।

मुझे उनसे एक पिता का प्यार मिलता था। मुझमें उनके प्रति हार्दिक तथा गहरी कृतज्ञता की भावना पैदा होती थी

ग्रौर मैं ग्रपने ग्रापसे घृणा करने लगा था कि ऐसे समय मैं क्यों बीमार पड़ा ? मैंने ग्रपने साथियों का बोझ ग्रौर भी भारी कर दिया था ग्रौर ग्रध्यक्ष का ध्यान बंटा दिया था।

हमने माग्रोग्रड़काए में लगभग एक माह बिताया। फिर १९३५ के ग्रगस्त के मध्य में, हम विशाल दलदली मैदान के लिए रवाना हुए, जिसे किसी भी मानव ने इसके पूर्व कभी भी पार नहीं किया था। हम लोग चालीस ली नहीं गए थे कि बीस ली से भी ज्यादा लम्बे एक विशाल जंगल में जा पहुंचे। वहां के जंगल के वृक्ष बहुत ही ऊंचे-ऊंचे थे ग्रौर उनके तने ग्रत्यंत मोटे थे। जब हम रात को यहां ठहरते थे, तो दो वृक्षों के बीच ग्रध्यक्ष माग्रो के लिए एक झूला बना देते थे। दिन में जब कभी हम पड़ाव डालते थे तो ग्रध्यक्ष कभी ग्राराम नहीं करते थे। वे बैठकों में शामिल होने के लिए चले जाते थे या सैनिकों से मिलने चल देते थे। इसलिए मेडिकल ग्रर्दली चुङ फ़ू-छाङ मुझे उस पर ग्राराम करने के लिए कह दिया करता था।

एक दिन रात को मैं उस पर लेटा हुग्रा था ग्रौर काफी ग्रन्धेरा हो चुका था। सैनिकों ने ग्रलाव जला रखा था। इस प्राचीन जंगल में न तो पक्षियों ने ग्रौर न ही पशुग्रों ने कभी ग्राग देखी थी। वे ग्रातंकित हो ग्रजीब-ग्रजीब ग्रावाजें करने लगे ग्रौर घबड़ाहट में या तो पंख फड़फड़ाते हुए उड़ गए या ग्रासपास चक्कर काटने लगे। मेरे कुछ साथी ग्राग के चारों तरफ बैठे हुए थे ग्रौर कुछ लोग पेड़ का सहारा ले गहरी नींद में सो रहे थे।

मैं झूले पर लेट गया। मुझे फिर जूड़ी चढ़ने लगी। मैं अध्यक्ष माओ का कम्बल ओढ़े हुए था और वह नया कपड़ा पहने हुए था जो उन्होंने मुझे माओअरकाए में दिया था। (इस कपड़े को किसी ने अध्यक्ष माओ को भेंट किया था।) लेकिन अभी भी मैं लगातार कांप रहा था। इस डर से कि कहीं दूसरे लोग जग न जायं, मैंने अपने ऊपर पूरे तौर से काबू कर रखा था और जरा भी कराह नहीं रहा था। मुझे विशेषकर इस बात का डर था कि कहीं मेडिकल अर्दली चुङ फ़ू-छाङ जग न जाय, क्योंकि अगर उसे यह पता लग गया कि मुझे फिर जूड़ी चढ़ी है, तो वह फौरन अध्यक्ष माओ को बता देगा और फिर अध्यक्ष माओ किसी तरह भी अपने झूले पर नहीं सोएंगे। मैं सांस रोके, अपने पैरों को पेट से सटाए चुपचाप पड़ा रहा। अचानक मेरे सामने एक लम्बी छाया प्रगट हुई। अध्यक्ष माओ वापस आ गए थे। मैंने अपने पैर फैलाने की जबरदस्त कोशिश की, लेकिन वे सुन्न पड़ गए थे और वे मानो पेट से चिपक गए थे। किसी भी तरह उन्हें फैलाते न बना। मेरा शरीर मेरे काबू में न रहा। मेरे दांत किटकिटा रहे थे और मैं कांप रहा था। अध्यक्ष मेरे पास आए और मेरे ऊपर झुक गए।

"क्या हुआ, छन छाङ-फ़ङ?" उन्होंने अपना हाथ मेरे ऊपर रखा और चिल्ला पड़े। "चुङ फ़ू-छाङ! छन छाङ-फ़ङ क्या फिर बीमार पड़ गया?" वे बहुत जोरों से नहीं बोले, पर अलाव के चारों ओर सोते हुए लोग जाग पड़े और वे सब के सब मेरे चारों ओर जमा हो गए।

जब मैंने देखा कि अध्यक्ष माओ तथा मेरे चारों ओर खड़े अन्य साथी इतने चिन्तित हो मुझे देख रहे हैं, तो ऐसा लगा मानो मेरे शरीर में शक्ति लौट आई हो और मैं उठकर बैठ गया।

"लेट जाओ!" अध्यक्ष ने नम्रता से आज्ञा दी और अपने दोनों हाथों से मुझे झूले पर लिटा दिया। मैंने उठकर सीधे बैठ जाने की पुरजोर कोशिश की, लेकिन उन्होंने अपने प्रबल हाथों से मुझे जबरदस्ती लिटा दिया। प्रतिरोध की शक्ति भी मैं खो बैठा। जब उन्होंने देखा कि मैं लेट गया हूं, उन्होंने चुङ फ़ू-छाङ से मुझे कुछ दवा देने को कहा। फिर वे तथा अन्य साथी अलाव के किनारे जाकर लेट गए।

दूसरे दिन प्रातःकाल ज्योंही मैं सोकर उठा, मैं झूले से कूद पड़ा। मुझे नहीं मालूम कि मुझमें इतनी शक्ति कहां से आ गई थी – शायद रात को अच्छी तरह सोने से या शायद अध्यक्ष की पिता-तुल्य देखभाल की प्रेरणा से! सबसे पहला काम मैंने यह किया कि मैं दौड़ कर गया और उनसे मिला।

"तबीयत तो पहले से अच्छी है न?" उन्होंने मेरी बाहों पर अपने हाथ रखते हुए पूछा।

मैं एक भी शब्द न बोल सका। मेरी आंखों से आंसुओं की धारा बह रही थी।

हमने अपना अभियान फिर शुरू किया। प्राचीन जंगल पीछे रह गया और हमने दलदली मैदान में प्रवेश किया। हमारे सामने एक विशाल तथा वीरान दलदली मैदान था।

वहां एक भी मनुष्य नहीं रहता था। कोई मकान भी न था। उस गन्दे स्थिर जल में जंगली घास की भरमार थी। उस का कहीं कोई अन्त न था। जब हम उस पर चलते थे, तो गीली जमीन से "फच-फच" की नीरस आवाज निकलती थी। जरा सी असावधानी हुई कि दलदल में बहुत गहराई तक पैर धंसे, और अगर कहीं इस अथाह दलदल में एक बार भी धंस गए, तो बिना साथियों की मदद के पैर निकालना मुश्किल था। कई बार हम लोगों के पैर कीचड़ में धंस गए और अध्यक्ष ने अपने बलिष्ठ हाथों से हम लोगों को घसीट कर बाहर निकाल लिया।

वहां का मौसम ठंडा था और बदलता रहता था। कभी पानी बरसने लगता था, तो कभी बर्फ गिरने लगती थी। कभी-कभी तो ओलों की वर्षा भी शुरू हो जाती थी। हर कदम उठाने के लिए हमें काफी जोर लगाना पड़ता था। अध्यक्ष हम लोगों के आगे-आगे चल रहे थे। हर बार कुछ कदम चलने के बाद वे रुक जाते थे और पीछे मुड़कर बहुत चिन्तित हो हमारी ओर देख लेते थे तथा हमारे नाम तब तक पुकारते रहते थे जब तक हम कोई जवाब न दे देते थे। फिर वे आगे बढ़ जाते थे। कभी-कभी यह देख कर कि हम लोग थक गए हैं, वे हमें कहानियां सुनाने लगते थे, हमसे हंसी मजाक करना शुरू कर देते थे और हमें इतना हंसाते थे कि हमारे पेट में बल पड़ जाते थे और हम लोग अपनी थकान भूल जाते थे।

दलदली मैदान की इस कठिन परिस्थिति में भी किसी ने

उफ तक न किया ग्रौर न ही किसी ने कोई शिकायत की। मैदान पार करने का हमारा पक्का इरादा था ग्रौर हमें पूरा विश्वास था कि हम ऐसा कर सकेंगे। वास्तव में हम लोग ग्रध्यक्ष माग्रो के साथ हमेशा ग्राशावादी रहते थे।

हमारे पीछे-पीछे सेना ने भी दलदली मैदान में प्रवेश किया। सैनिक नाना प्रकार की वर्दियां पहने हुए थे। कुछ लोग भूरे रंग की सैनिक वर्दियों में थे, कुछ लोग विभिन्न प्रकार की खालों के ग्रोवरकोट पहने हुए थे, कुछ लोग कम्वल ग्रोढ़े हुए थे। कुछ वांस के वड़े-वड़े चौड़े-चौड़े टोप लगाए हुए थे ग्रौर कुछ फटे-पुराने छाते लगाए हुए थे। इस रंग-विरंगे जन-समूह से वह निर्जीव विशाल दलदली मैदान सजीव हो उठा था। वे एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए एक लम्वी कतार में धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ता के साथ ग्रागे वढ़ते जा रहे थे।

एक दिन हमने ग्रचानक उस वीरान क्षितिज में एक काला सा विन्दु देखा। ज्यों ज्यों हम वढ़ते गये, यह विन्दु वड़ा होता गया। हमें मालूम नहीं था कि यह क्या चीज है, हमारी उत्तेजना वढ़ती गई। हमारे दिल में उम्मीद जाग उठी। वह पानयग्रो नामक एक जगह थी। ग्रपने साथियों की उस समय की खुशी को वयान करना हमारे लिए ग्रसम्भव था। पानयग्रो पहुंच कर हम लोग ग्रौर ग्रध्यक्ष माग्रो एक तिब्वती परिवार के घर में ठहरे। हमारे साथियों ने खुश होकर उपले जलाये ग्रौर ग्रपने भीगे तथा सीले कपड़ों को सुखाया।

कुछ ग्ररसे वाद, हम लोग पाशी पहुंचे ग्रौर यहां हमने

एक विचित्र दृश्य देखा : चौथी मोर्चा-सेना के कुछ सैनिक सामने से मुड़कर हमारी ओर (भयानक दलदली मैदान की ओर) धीरे-धीरे चले आ रहे थे। यह बात हमारी समझ में नहीं आई। हमने आश्चर्यचकित हो अध्यक्ष माओ से पूछा : "अध्यक्ष, ये लोग पीछे क्यों लौट रहे हैं?" उन्होंने तुरन्त कोई उत्तर नहीं दिया, किन्तु उनके चेहरे की मुद्रा से हम यह देख सकते थे कि वे अत्यन्त भावविह्वल हो उठे हैं। फिर हमें मालूम हुआ कि यह पार्टी को तोड़ने के लिए गद्दार चाङ क्वो-थाओ की साजिश का नतीजा है। यही गद्दार इन भोले-भाले साथियों को गुलामों की तरह विनाश के मार्ग पर चलने के लिए मजबूर कर रहा है।

थोड़ी देर बाद, अध्यक्ष माओ ने हमसे पूछा : "क्या तुम लोग भी पीछे हटना चाहते हो और फिर से दलदली मैदान पार करना चाहते हो?"

"कभी नहीं, चाहे हम मर भी जाएं, तब भी पीछे नहीं हटेंगे।" हम लोगों ने एकस्वर से उत्तर दिया।

अध्यक्ष उठकर खड़े हो गए और उन्होंने उन थके हुए और फटे कपड़े पहने हुए सैनिकों की ओर देखा जो उधर ही वापस जा रहे थे, जिधर से हम लोग आ रहे थे। उन्होंने धीमे किन्तु आत्म-विश्वास से भरे स्वर में कहा : "वे वापस आएंगे! हमें आगे बढ़कर उनके लिए मार्ग प्रशस्त करना चाहिए, ताकि वे हमारे पास आ सकें!"

ल्यूफान पहाड़ पर

सितम्बर के मध्य में सांझ होने पर हम लाचिखओ के निकट एक गांव में पहुंच गए। मैंने अध्यक्ष का विछौना लगा दिया, जिससे वे कुछ आराम कर सकें। लेकिन जब मैं दूसरे कमरे में गया तो क्या देखता हूं कि वे न्ये रुङ-चन, ल्यू या-लओ और अन्य नेताओं के साथ विचार-विमर्श कर रहे हैं। मेज पर नक्शे फैले हुए थे।

लाचिखओ एक सामरिक महत्व का दर्रा है, जो सछ्वान प्रान्त और कानसू प्रान्त को मिलाता है। उत्तरी शेनशी पहुंचने के लिए जिन दर्रों को हमें पार करना था उनमें यह एक प्रमुख दर्रा था। मुझे यकीन था कि अध्यक्ष और अन्य लोग इसी के वारे में विचार-विमर्श कर रहे हैं। इसलिए एक भी शब्द कहे विना मैं वापस लौट गया। उस रात अध्यक्ष काफी देर तक नहीं सोए।

लेकिन अगले दिन तड़के ही हमने उक्त दर्रे पर धावा बोल दिया। उस पर कब्जा करने के वाद भी हम रुके नहीं और आगे वढ़ते गए।

सितम्बर के अन्त में हमने वेइश्वेइ नदी की नाकेवन्दी पार

की ग्रौर ल्यूफान पहाड़ की तरफ कूच कर दिया।

ल्यूफान पहाड़ लुङशान पर्वतमाला का ही एक हिस्सा है। पश्चिमी कानसू में यह सबसे ऊंचा पहाड़ है। उत्तरी शेनशी पहुंचने के लिए पार किए जाने वाले पहाड़ों में यह ग्रन्तिम बड़ा पहाड़ था। जब सैनिकों को यह मालूम हुग्रा कि उन्हें यह पहाड़ पार करना है तो उनके हौसले बुलन्द हो गए।

जिस दिन हम इस पहाड़ पर चढ़ने के लिए प्रस्थान करने लगे, उस दिन ग्रासमान में बादल छाए हुए थे। हवा में ठंडक थी। शीघ्र ही पानी पड़ने लगा। पहाड़ की तलहटी तक पहुंचते-पहुंचते हम लोग भीग कर तर-बतर हो गए। मगर हमारा इरादा ग्रडिग बना रहा।

ल्यूफान पहाड़ की तुलना बरफ से ढके च्याचिन पर्वत से नहीं की जा सकती, जिसे हम पहले ही पार कर चुके थे। लेकिन जब हमने उसकी तलहटी में खड़े होकर ऊपर की तरफ देखा, तो यह भी काफी खतरनाक जान पड़ा। रास्ता बड़ा घुमावदार था। शुरू में हम छोटे-छोटे पेड़ों का सहारा लेकर चढ़ते रहे। लेकिन ज्यों-ज्यों शिखर के नजदीक पहुंचते गए, वहां सूखी घास के सिवाय ग्रौर कुछ भी न था। इसलिए ऊपर चढ़ना बेहद मुश्किल हो गया।

मैं मलेरिया की वजह से ग्रब भी काफी कमजोर था। ऊपर तक हमें कुल ३० ली ऊबड़-खाबड़ रास्ता तय करना था। ग्रभी हम ग्राधा ही रास्ता तय कर पाए थे कि मेरा दम फूलने

लगा, दिल तेजी से धड़कने लगा और सारा शरीर पसीने से तर हो गया।

अध्यक्ष माओ ने तुरन्त मेरी हालत भांप ली। जब कभी हम किसी कठिन स्थल पर पहुंचते, तो वे अपने मजबूत हाथों का सहारा देकर मुझे ऊपर खींच लेते।

शिखर के नजदीक पहुंचने पर मेरे लिए एक भी कदम उठाना कठिन हो गया। मेरा सिर घूमने लगा और शरीर जैसे तैरने लगा। अचानक मैं चक्कर खाकर गिर पड़ा। मुझे लगा दो मजबूत हाथ मुझे थामे हुए हैं। अध्यक्ष माओ स्नेहपूर्ण स्वर में चङ से कह रहे थे, "मेडिकल अर्दली को बुलाकर जल्दी दवाई दो। इसे मलेरिया की शिकायत फिर शुरू हो गई है।"

दूसरे ही क्षण कड़वी दवा की दो टिकियां किसी ने मेरे मुंह में डाल दीं और ऊपर से पानी पिला दिया। धीरे-धीरे मेरी हालत सुधरने लगी। अध्यक्ष माओ मुझे थामे हुए थे और चङ व मेडिकल अर्दली मेरी तरफ देख रहे थे। मेरा दिल बैठा जा रहा था। "यह मलेरिया नहीं है, अध्यक्ष माओ," मैं जोर से बोला, "यह सिर्फ मेरी कमजोरी की वजह से है। मुझे लगता है कि मैं उत्तरी शेनशी नहीं पहुंच पाऊंगा।"

"जरूर पहुंचोगे। चिन्ता न करो," अध्यक्ष ने प्रोत्साहन देते हुए कहा। "कठिनाइयों में ऐसी कोई चीज नहीं जिससे डरा जाए। चिन्ता सिर्फ इस बात की होनी चाहिए कि कठिनाइयों से डरा न जाए। अगर तुम डरोगे तो वे तुम्हें सचमुच भयानक मालूम होंगी। लेकिन अगर तुम उनसे डरोगे नहीं, तो वे तुम्हें

जरा भी डरावनी नहीं लगेंगी। उनका मुकावला करो। जहां एक वार हमने यह पहाड़ पार कर लिया, तो तुम ठीक हो जाओगे।"

अध्यक्ष के शब्दों से मेरा आत्म-विश्वास फिर जाग उठा। लेकिन मैं उनके लिए बोझ नहीं वनना चाहता था। "आप आगे चलते जाइए, अध्यक्ष माओ," मैंने कहा। "मैं थोड़ा आराम करने के वाद जल्दी ही आपके पास पहुंच जाऊंगा।"

"विलकुल नहीं," अध्यक्ष ने दृढ़ता से कहा। "यहां हवा में आक्सीजन की कमी है और ऊपर से वर्षा भी हो रही है। ऐसी हालत में तुम यहां कैसे आराम कर सकते हो? जव तक हम इस पहाड़ को पार नहीं कर लेते तव तक हमें हर सूरत में आगे वढ़ते जाना है, चाहे कुछ भी क्यों न हो।"

अध्यक्ष ने और चङ ने मुझे उठा लिया और आगे वढ़ना जारी रखा। अध्यक्ष मेरे वारे में अत्यधिक चिन्तित थे। मैं पैदल चलना चाहता था, लेकिन मेरा सारा शरीर कांप रहा था और मैं एक भी कदम उठाने में असमर्थ था।

"तुम्हें ठण्ड तो नहीं लग रही?" अध्यक्ष ने पूछा।

"हड्डी-हड्डी ठण्ड से ठिठुर रही है।"

"यह लो, यह कोट पहन लो और जरा अधिक गरम पानी पियो। शरीर में कुछ गरमी आने पर तुम्हें अच्छा महसूस होने लगेगा।" यह कहते हुए अध्यक्ष ने अपना ओवरकोट उतार दिया।

अध्यक्ष के शरीर पर अव सिर्फ भूरे रंग की सूती फौजी वर्दी रह गई थी, जिसे उन्होंने चुनई में वनवाया था। यही

नहीं, उन्होंने पिछली रात देर तक काम किया था और आज वारिश में कई घण्टे मार्च किया था। मैं न सिर्फ अध्यक्ष की देखभाल अच्छी तरह नहीं कर पा रहा था वल्कि उनका बोझ भी वढ़ाता जा रहा था। ऐसी हालत में उनका ओवरकोट भला मैं कैसे ले सकता था ?

मैंने कोट लौटा दिया। "मुझे इसकी जरूरत नहीं। मैं चल सकता हूं।" मैंने उसे पहनने से इनकार कर दिया और चलने की भरपूर कोशिश की। लेकिन मैं वहुत कमजोर था। एक कदम आगे रखते ही मैं गश खाकर गिर पड़ा।

जव आंख खुली तो मैंने देखा कि मैं अध्यक्ष का कोट पहने हूं। अध्यक्ष वारिश में खड़े थे, शरद की ठण्डी हवा के थपेड़े उनकी पतली भूरी फौजी वर्दी को झकझोर रहे थे। वे अव भी मेरे वारे में चिन्तित मालूम हो रहे थे। मगर अव उनके चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान खिलने लगी थी।

चङ मेरे लिए एक कटोरा पानी ले आया और मेरे पास आकर खड़ा हो गया।

यह सव देख कर मेरे शरीर में गरमी का संचार होने लगा। खोई हुई शक्ति फिर लौटने लगी। मैं खड़ा हो गया और अध्यक्ष की तरफ एकटक देखता रहा। मेरा गला रुंध गया।

अध्यक्ष बेहद खुश थे। "क्यों, पहले से अच्छा लग रहा है क्या ?"

"हां, आइए अव हम आगे चलें", मैं कहना तो वहुत कुछ चाहता था, लेकिन इतना ही कह पाया।

"शाबाश! तुम लाल सेना के सच्चे योद्धा हो।" अध्यक्ष माओ ने बड़े स्नेह के साथ मेरी पीठ थपथपाते हुए कहा। "आओ, आगे बढ़ें।"

सांझ होने तक हमने ल्यूफान पहाड़ को पार कर लिया और दूसरी तरफ की तलहटी में जा पहुंचे। मैंने पीछे मुड़ कर पहाड़ की चोटी की तरफ देखा।

"आखिर तुमने इसे पार कर ही लिया," अध्यक्ष ने कहा। "कठिनाइयों को हल करने का यही तरीका है।"

उस रात हमने पहाड़ की तलहटी में एक गांव में पड़ाव डाला। मैं बिस्तर में लेट गया। उस दिन की समस्त घटनाएं मेरी आंखों के सामने घूम गईं। "अगर अध्यक्ष मेरी देखभाल न करते और मुझे प्रोत्साहन न देते, तो मैं आज ल्यूफान पहाड़ पर प्राण त्याग चुका होता", मैंने मन ही मन सोचा।

मैं गहरे सोच-विचार में डूब गया। मेरी आंखों में आंसू छलछला आए। "अध्यक्ष की हिदायतों को मैं हरगिज नहीं भूलूंगा," मैंने शपथ ली। "जहां भी जाऊंगा, उन्हें याद रखूंगा, हमेशा याद रखूंगा।"

हम घर पहुंच गए

ल्यूफान पहाड़ को लांघने के बाद हम लोग कानसू के ह्वेइ जातीय क्षेत्र में पहुंच गए। ह्वेइ जाति के लोगों ने हमारे प्रति बड़ी गरमजोशी दिखाई। जहां भी हम गए, उन्होंने सड़क के दोनों तरफ खड़े होकर भारी संख्या में हमारा स्वागत किया। गरम पानी से भरे कटोरे थमाते हुए उन्होंने हमसे पूछा, "आप लोग कहां से आ रहे हैं? साथियो, आप थक गए होंगे। कुछ गरम पानी पीजिए।" जब से हमने तिब्बती जाति के इलाके में प्रवेश किया था तभी से हान भाषा में बात करने वाले लोग हमें बहुत कम मिले थे। इसलिए ह्वेइ जाति के इलाके में "साथियो" शब्द सुन कर हमें खास तौर पर अपनापन महसूस हुआ। हमें उनसे पता चला कि लाल सेना की २५वीं फौजी कोर का, जो यहां से जुलाई में गुजरी थी, उसके सुदृढ़ अनुशासन के कारण यहां के लोगों पर बहुत अच्छा असर पड़ा है। जैसे-जैसे हम उत्तरी शेनशी के निकट पहुंचते गए, हमारा उत्साह बढ़ता गया और हम अपनी सारी थकान व बीमारियां भूलते गए। मन करता था कि शेनशी की भूमि पर झटपट पहुंच जाएं और अपने भावी "घर" को जल्दी से जल्दी देख लें।

एक दिन हम लोग कानसू में ह्वानश्येन काउन्टी से रवाना होकर दमियों ली चलकर एक छोटे से पत्थर के पहाड़ पर पहुंच गए। अभी हम लोग रुके ही थे कि हमें पहाड़ के नीचे पगडंडी पर पांच घुड़सवार तेजी से आते हुए दिखाई पड़े। उनके कन्धों पर बन्दूक लटक रहे थे और वे अपने सिर पर सफेद तौलिये बांधे हुए थे। जब वे निकट आए, तो हमने देखा कि वे सब के सब बीस-बाईस वर्ष के तगड़े जवान थे। पर्वत के नीचे पहुंच कर वे घोड़े पर से उतर पड़े और हमारी ओर आए। "अध्यक्ष माओ कहां हैं?" उन्होंने जोरों से चिल्लाकर हमसे पूछा।

मैं उनसे मिलने गया और उनसे पूछा कि तुम लोग क्या चाहते हो।

उन लोगों का शरीर पसीने से तर-बतर था और वे हांफ रहे थे। उनमें से एक जिसकी उम्र कुछ ज्यादा थी बड़े उत्साह से बोला, "हमें लाओ ल्यू ने अध्यक्ष माओ को एक खत देने के लिए भेजा है। वे कहां हैं?"

लाओ ल्यू! वे कामरेड ल्यू चि-तान तो नहीं हैं?

"कामरेडो," मैंने पूछा, "क्या आप लोगों को कामरेड ल्यू चि-तान ने भेजा है?"

"जी हां", वे एकस्वर में बोले। वे आगन्तुक जो पत्र लाए थे, उसे लेकर मैं बेतहाशा दौड़ता हुआ अध्यक्ष माओ के पास गया। जब अध्यक्ष माओ ने वह पत्र पढ़ा, तो वे मुस्कराने लगे और बोले: "साथियो, आपने बहुत मेहनत की है।" तब उन

आगन्तुकों को मालूम हुआ कि वही अध्यक्ष माओ हैं जिन्हें देखने के लिए उत्तरी शेनशी की जनता इतने दिनों से प्रतीक्षा कर रही थी। वे सब हंस पड़े और उनका चेहरा लाल हो गया। वे उनके चारों ओर जमा हो गए और उनसे हाथ मिलाने के लिए आपस में होड़ करने लगे।

सैनिक जहां आराम कर रहे थे, अध्यक्ष वहां गए और उनके बीच खड़े होकर, उन्होंने उच्च स्वर में कहा : "साथियो, हम लोग उत्तरी शेनशी सोवियत इलाके में पहुंचने ही वाले हैं! हमारी २५वीं और २६वीं फौजी कोरों ने दुश्मन की "घेरा डालने" की दूसरी मुहीम को पराजित कर दिया है और हम से मिलने के लिए सैनिक भेजे हैं!" . . .

यह घोषणा सुनते ही तूफानी हर्षध्वनि होने लगी। सभी लोग हंसने व उछलने लगे और एक दूसरे के गले मिले।

वे पांचों साथी जो हमसे मिलने आए थे, हमारे मार्गदर्शक बन कर हमें सानछाचन नामक गांव में ले गए। उस दिन शाम को अध्यक्ष उनके साथ बहुत देर तक बातचीत करते रहे और उन्होंने उन्हें एक पत्र लिख कर दिया। उन्हें खाने तक का अवकाश न मिला।

अगले दिन हम लोग एक छोटे से गांव में रुके जिसका नाम हम लोग नहीं जानते थे। वहां खरीदने के लिए चावल तक न था। केवल कोदों मिल रहा था। हम अंगरक्षक सब के सब दक्षिण के थे; इसलिए हमने कोदों पहले कभी नहीं देखा था, उसे पकाना तो दूर रहा। तो फिर क्या करते? चूंकि वहां

वकरियां वहुतायत से मिल रही थीं, इसलिए हमने एक वड़ी वकरी खरीदी और वकरी का मांस पका कर रात का भोजन तैयार किया।

जव अध्यक्ष लौटे, तो हमने उनके सामने वकरी की टांग पेश की। "यह क्या वात है। महज गोश्त ही क्यों?" अध्यक्ष ने आश्चर्य से पूछा।

"हमें इस गांव में न तो चावल मिला और न ही आटा।" चङ श्येन-चौ ने तुरन्त जवाव दिया। "यहां सिर्फ कोदों मिल सकता है पर उसे हम लोग पकाना नहीं जानते।"

"पकाना सीखो, यह कोई मुश्किल काम नहीं है।" अध्यक्ष ने कहा। "जव हम किसी नई जगह जाएं, तो हमें रहन-सहन के नए ढंग सीखने चाहिए, नहीं तो हम लोग भूखों मर जाएंगे।"

यह सुनते ही हम लोग कोदों पकाने के लिए फौरन तैयार हो गए। "कोई जल्दी नहीं है।" अध्यक्ष ने कहा। "आओ, अभी तो सिर्फ वकरी के गोश्त को ही खाएं।"

छ्वीची से लेकर कानसू-शेनशी सीमा को विभाजित करने वाले पहाड़ी टीले तक, ८० ली की यात्रा के दौरान क्वोमिन्ताङ युद्ध सरदार मा हुङ-ख्वेइ की घुड़सवार फौज से हमारी अठारह वार मुठभेड़ हुई। लेकिन ज्योंही हम लोग मा हुङ-ख्वेइ के घुड़सवारों के निकट आते, वे भाग खड़े होते। हम लोग उन पर हंसते और कहते कि ये लोग तो क्वेइचओ के युद्ध सरदार वाङ च्या-ल्ये के "सोयाबीन का पनीर" सैनिकों के वरावर

भी नहीं हैं। ये लोग तो पनीर वनाने के वाद सोयाबीन के वचे हुए छिलकों के समान हैं।

अध्यक्ष माम्रो ने विनोद भाव से कहा : "अगर उन्हें मालूम हो जाय कि हम लोग चीनी मजदूर-किसानों की लाल सेना के हैं, तो उनकी हमसे लड़ने की हिम्मत कभी नहीं पड़ेगी। वे केवल भागने में ही 'निपुण' हैं!" अध्यक्ष की इस वात ने हमारा खूब मनोरंजन किया।

पहाड़ी टीले की चोटी पर एक वहुत वड़ी पत्थर की शिला गड़ी हुई थी जिस पर मोटे-मोटे अक्षरों में खुदा था : "विभाजक टीला", यह कानसू और शेनशी प्रान्तों की सीमा के विभाजन का चिन्ह था। इस शिला के पास ही एक जंगली चैस्टनट के वृक्ष के नीचे हम लोग आराम करने के लिए बैठ गए।

अध्यक्ष एक ओर शिला के पृष्ठभाग के अक्षरों को पढ़ रहे थे। दूसरी ओर उन्होंने हम लोगों से पुलकित होकर कहा : "हम लोग दस प्रान्त पार कर चुके हैं। जव हम लोग इस पहाड़ के नीचे उतरेंगे, तो हम लोग ग्यारहवें प्रान्त में यानी शेनशी में पहुंचेंगे। वही हमारा आधार-क्षेत्र है–हमारा घर है!"

उस विभाजक टीले से चल कर डेढ़ दिन के अभियान के पश्चात हम लोग ऊछी कस्बे में पहुंचे। वहां हम लोग गुफाओं में ठहरे। हमने जीवन में पहली वार ऐसी गुफाएं देखी थीं। हम लोग अव सोवियत क्षेत्र में पहुंच गए थे।

अध्यक्ष माम्रो अन्य नेताओं से इस मामले में सलाह-मशवरा

करने में व्यस्त हो गए कि मा हुङ-ख्वेइ की घुड़सवार सेना का कैसे सफाया किया जाय।

हमारे सिपाही भावी युद्ध की कल्पना से ही उत्तेजित हो रहे थे। "हम लोग घर आ रहे हैं।" उन्होंने कहा। "आओ, हम लोग उत्तरी शेनशी की जनता को विजय के रूप में एक उपहार भेंट करें!"

वह महान दिन आ ही गया! हम लोग अध्यक्ष के साथ एक पहाड़ की चोटी पर खड़े हो गए जहां हरियाली तक भी न थी। ज्योंही युद्ध शुरू हुआ, हमारी मशीनगनें खड़खड़ाने लगीं। भयभीत घोड़े हिनहिनाते हुए और गोलियों की वर्षा से बचने की कोशिश में छलांग लगाते हुए पर्वत में भाग खड़े हुए। घोड़ों ने अपने सवारों को फेंक दिया और दुश्मन के सिपाही ढाल पर लुढ़क कर नीचे जा गिरे। जो बच गए वे अपनी जान लेकर भाग खड़े हुए।

"अध्यक्ष!" हमने चिल्लाकर कहा। "हमारे पास केवल दो पैर हैं और उनके पास तो चार हैं, लेकिन हमने उनको चारों ओर पहाड़ों पर भगा दिया!" यह सुनते ही वे भी हमारे साथ ठहाका मार कर हंस पड़े।

जब सेना आराम करने लगी, तो हम लोग अध्यक्ष के साथ व्याशवान गए जहां शेनशी-कानसू प्रान्तीय पार्टी कमेटी तथा प्रान्तीय सोवियत का प्रधान कार्यालय था।

जिस समय हम लोग रवाना हुए, उस समय बर्फ के बड़े-बड़े गोले गिर रहे थे। गोकि हम लोग बहुत कपड़े नहीं पहने हुए

थे, फिर भी उन ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी रास्तों पर पैर घसीटते-घसीटते चलते हुए हम में से किसी को भी सर्दी नहीं लग रही थी। जिस समय हम लोग श्याशवान पहुंचे, उस समय शाम हो चुकी थी। हम लोगों ने घड़ियालों और नगाड़ों के वजने की आवाज तथा भीड़ का शोरगुल सुना। दूर से ही हमने देखा कि गांव के प्रवेश मार्ग के पास एक विशाल मैदान में एक विराट जन-समूह एकत्रित है। जनता अध्यक्ष का स्वागत करने की प्रतीक्षा कर रही थी। ज्योंही अध्यक्ष माओ दिखायी पड़े, वे हर्षध्वनि करने लगे। घड़ियालों और नगाड़ों के भीषण शोरगुल के बीच, भीड़ बेतहाशा दौड़ पड़ी, लोग लाल और हरी झंडियां हिला रहे थे, जिन पर लिखा हुआ था :

अध्यक्ष माओ का स्वागत !

केन्द्रीय लाल सेना का स्वागत !

शेनशी-कानसू-निङश्या सोवियत क्षेत्र का विस्तार करो !

दुश्मन की "घेरा डालने" की तीसरी मुहीम को चकनाचूर कर दो !

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी जिन्दाबाद !

. . . .

अपना फटा-पुराना लबादा पहने हुए जो कि वे च्याङशी से अपने साथ लाए थे और अपनी पुरानी टोपी लगाए हुए, अध्यक्ष ने अपना सिर हिलाया और जनता की ओर देख कर बार-बार हाथ हिलाया। तब लोगों ने बीसियों अगुआ साथियों को रास्ता दिया ताकि वे आकर अध्यक्ष के साथ हाथ मिला

मकें। इनमें कामरेड ल्यू चि-तान तथा २५वीं फौजी कोर के कमांडर श्वी हाए-तुङ भी थे। अध्यक्ष माओ के साथ साथ कामरेड चओ ऐन-लाइ, तुङ पी-ऊ, श्वी थ-ली, लिन पो-छ्वी तथा श्ये च्वे-चाए भी खड़े थे। उन सबने चारों ओर घूम-घूम कर एक दूसरे से हाथ मिलाया और एक दूसरे से परिचय कराया।

"अध्यक्ष माओ का स्वागत!" जनता ने हर्षध्वनि की। चारों तरफ लोग गला फाड़ फाड़ कर चिल्लाने लगे, जिससे कि धरती तक कांप उठी।

"हमारी विजय हुई। हमारी विजय हुई!" चङ श्येन-ची और मैं भी चिल्ला उठे।

अध्यक्ष माओ ने मुझे स्कूल भेजा

उत्तरी शेनशी पहुंचने के वाद, शीघ्र ही हम लोग वहां वस गए। वहां तरह-तरह के संगठन कायम किए गए और हमारा जीवन और काम व्यवस्थित रूप से चलता रहा।

१९३६ के वसन्त में, एक दिन लाल सेना अकादमी के राजनैतिक विभाग के संचालक कामरेड मो वन-ह्वा, अध्यक्ष माओ से मिलने आए और अकादमी के लिए विद्यार्थी भर्ती करने के वारे में वातचीत करने लगे। वातचीत के दौरान, अध्यक्ष ने ध्यानमग्न हो मेरी ओर देखा और कहा: "यहां हैडक्वार्टर में कुछ अनुभवी योद्धा हैं। वे अच्छे कामरेड हैं, वे लम्बे अभियान की परीक्षा में खरे उतरे हैं। उनमें से कुछ को पढ़ने के लिए क्यों न भेज दिया जाय?" कामरेड मो ने सिर हिला कर अपनी अनुमति प्रगट की और कहा: "हम उनका स्वागत करते हैं, हार्दिक स्वागत करते हैं!"

कुछ दिनों वाद एक दिन सुवह मैं अध्यक्ष के हाथ मुंह धोने का पानी रख कर वाहर जा ही रहा था कि उन्होंने मुझे रोक लिया और कहा: "छन छाङ-फ़ङ! मैं तुम्हें पढ़ने के लिए लाल सेना अकादमी में भेज रहा हूं! तुम खुश हो या नहीं?"

मैंने तुरन्त उत्तर न दिया। मेरा दिल जोरों से धड़कने लगा। नाना प्रकार के विचार मेरे दिमाग में चक्कर काटने लगे। मैं, जो कभी स्कूल भी नहीं गया था, और जो बचपन में जमींदार की गाय चराया करता था, आज सचमुच एक स्कूल में भेजा जा रहा था! बेशक, मैं बहुत खुश था। परन्तु मैंने अध्यक्ष के साथ छै वर्ष व्यतीत किये थे। यह कोई छोटा अरसा नहीं था। सबसे कठिन दिनों में, चाहे वे कितने ही व्यस्त क्यों न रहे हों, वे हमेशा मेरा ख्याल रखते थे और मुझे शिक्षा देते थे। वे मेरी राजनैतिक तथा आम शिक्षा और रोजमर्रा की कठिनाइयों से लेकर जीवन की छोटी-मोटी जरूरतों तक का ध्यान रखते थे। उनकी पिता-तुल्य देखरेख में और उन की महान विचारधारा की शिक्षा-दीक्षा तले ही मैंने धीरे-धीरे वर्ग-संघर्ष की सच्चाई तथा अन्य अनेकों बातें सीखी थीं। पर सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह थी कि उनके दैनिक जीवन तथा कार्य से मैंने यह सीखा कि एक सच्चा कम्युनिस्ट बनने के लिए क्या करना चाहिए।...

मेरा संकोच देख कर अध्यक्ष ने मुझसे फिर पूछा: "क्या तुमने फैसला कर लिया?"

"मैं... मैं सोचता हूं कि मुझे नहीं जाना चाहिए, अध्यक्ष।"

"क्यों?"

"कुछ नहीं, सिर्फ यही कि मैं आपसे बिछुड़ना नहीं चाहता। इसके अलावा जैसे मैं वहां सीख सकता हूं, वैसे मैं आपसे भी सीख सकता हूं।"

अध्यक्ष मेरे निकट आए, मेरे कन्धे पर हाथ रखा और मुझसे बैठने के लिए कहा। मेरी बगल में बैठकर, उन्होंने बड़ी नम्रता से कहना शुरू किया : "छन छाङ-फ़ङ, तुम्हें समझना चाहिए कि हमारा आधार-क्षेत्र दिनोंदिन विस्तृत होता जा रहा है। हमें हर प्रकार का काम करने के लिए कार्यकर्ताओं की जरूरत है—ऐसे कार्यकर्ताओं की, जो पार्टी के प्रति वफादार हों, जनता के प्रति वफादार हों। तुम्हें मेरे साथ रहते हुए पांच-छै साल हो चुके हैं। इस बीच तुम्हें अध्ययन करने का ज्यादा मौका न मिल सका। अब तुम्हें स्कूल जाना चाहिए और वहां व्यवस्थित रूप से पढ़ना चाहिए। अध्ययन समाप्त करने के बाद तुम पार्टी के लिए ज्यादा अच्छी तरह काम कर सकोगे। इससे मुझे बहुत खुशी होगी। ठीक है या नहीं, क्या ख्याल है तुम्हारा ?"

बोलते समय, वे मेरी ओर बड़े स्नेह से देखते रहे।

"लेकिन अगर मैं चला जाऊंगा, तो आपकी देखभाल कौन करेगा ?" मैंने बच्चों की तरह प्रश्न किया।

"इस बारे में तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं। जब तुम चले जाओगे, तो तुम्हारी जगह कोई और आ जाएगा।" उन्होंने मुस्कराते हुए कहा।

मैं उठकर खड़ा हो गया। मैं इतना घबरा गया था कि हालांकि अध्यक्ष ने हाथ मुंह नहीं धोया था फिर भी मैं पानी की चिलमची उठा कर चल दिया। मुझे अपनी बद-हवासी का

पता तब चला जब उस स्वच्छ शुद्ध जल में मेरे आंसू टपटप गिरने लगे।

खैर, मेरे स्कूल जाने का मामला तय हो गया। अध्यक्ष से जुदा होने से पहले, मैंने सारी रात जाग कर बिताई। मैं स्कूल जाने के महत्व, अपने भावी स्कूली जीवन तथा अध्यक्ष के बारे में सोच रहा था : "मेरी जगह कौन आएगा? नए साथी को अध्यक्ष की आदतें तुरन्त कैसे मालूम होंगी ; क्या वह हमारे प्यारे नेता की अच्छी तरह देखभाल कर सकेगा?" यह विचार आते ही मेरा मन फिर उद्विग्न हो उठा। मैं बिस्तर से कूद पड़ा और बाहर निकल गया। उस समय काफी रात बीत चुकी थी ; अध्यक्ष के कमरे में रोशनी अब भी रही थी। मैंने तय किया कि मैं उनसे अन्तिम बार प्रार्थना करूंगा कि वे मुझे अपने साथ रहने दें। लेकिन जब मैं खिड़की के निकट पहुंचा और उन्हें लिखते हुए देखा, तो मेरी हिम्मत टूट गई। मैं जानता था कि अगर मैं अन्दर जाऊंगा, तो वे मुझसे बातचीत करेंगे। वर्षों के अनुभव से मुझे मालूम था कि मुझे उनके काम में बाधा नहीं डालनी चाहिए। उनके काम की तुलना में जो सारे देश, सारी पार्टी से संबंधित था, मेरा छोटा सा सवाल आखिर क्या था? मैं दबे पांव अपने कमरे में वापस चला आया।

अगले दिन सुबह मैं बहुत जल्दी उठा। रोजाना की तरह मुंह धोकर मैं अध्यक्ष के दफ्तर में सफाई करने, झाड़ने और सारी चीजों को तरतीब से लगाने—यानी वह सब काम करने

गया जो मैं वहुत ग्रच्छी तरह जानता था, लेकिन मैं ग्रव इन सव चीजों से विछुड़ रहा था।

उसी समय ग्रध्यक्ष हाथ में दो कापियां ग्रौर दो पैंसिल लेकर ग्रन्दर ग्राए। "तुम जल्दी ही जाने वाले हो," उन्होंने कहा। "कमरे की चिन्ता न करो! जाग्रो, ग्राराम करो!" मुझे दो कापियां ग्रौर दो पैंसिल देते हुए उन्होंने ग्रागे कहा: "ये तुम्हारे लिए स्कूल में इस्तेमाल करने की चीजें हैं। ग्रच्छी तरह पढ़ना। जब फुर्सत मिले, तो ग्राकर मुझसे मिलना।"

मैंने ग्रध्यक्ष के उपहार ले लिये। उनकी ग्रोर देखते हुए, मुझे ऐसा लगा मानो मेरा गला रुंधा जा रहा हो ग्रौर मेरी ग्रांखें सजल होती जा रही हों। मैं एक शब्द भी न बोल सका।

*

* *

मेरे लाल सेना ग्रकादमी में प्रवेश करने के तुरन्त वाद ही, ग्रध्यक्ष माग्रो मोर्चे पर चले गए। मैंने वहां कुल चालीस दिन ग्रध्ययन किया, उसके वाद मेरा तवादला उत्तर-पश्चिम सुरक्षा ब्यूरो में हो गया जहां मुझे सुरक्षा की टुकड़ी का निर्देशक वना दिया गया। उसी साल ग्रगस्त में, ग्रध्यक्ष माग्रो शानशी मोर्चे से लौट ग्राए ग्रौर मैं उनसे मिलने गया। ज्योंही मैंने उनके कमरे में प्रवेश किया, उन्होंने सबसे पहला प्रश्न मेरी पढ़ाई के वारे में किया।

"मैं अब पढ़ता नहीं हूं, काम करता हूं।" मैंने जवाब दिया।

"कैसा काम?" अध्यक्ष माओ ने सिगरेट सुलगाते हुए और बहुत दिलचस्पी के साथ पूछा। मैंने उन्हें बता दिया: "उत्तर-पश्चिम सुरक्षा ब्यूरो में एक सुरक्षा टुकड़ी का निर्देशक बन गया हूं।"

"वाह! खूब! तुम्हारे दल में कितने सैनिक हैं?"

"दो सौ से ज्यादा।"

जब अध्यक्ष ने यह सुना तो उन्होंने विनोद भाव से कहा: "दो सौ से ज्यादा! इसका मतलब है कि तुम एक छोटी सी बटालियन के कमांडर हो!" (उस समय हमारी बहुत सी कम्पनियों में केवल सत्तर-अस्सी आदमी रहते थे।)

अध्यक्ष की इस बात से मुझे जरा बेचैनी सी हुई।

"क्या तुम अपना काम अच्छी तरह कर रहे हो?" यह उनका दूसरा प्रश्न था। "एक निर्देशक की हैसियत से, क्या तुमने सीखा है कि कैसे 'सावधान' की हालत में खड़ा होना चाहिए और कैसे 'आराम' की हालत में?"

उस समय मुझे याद आया कि जब हम लोग अध्यक्ष की सेवा करते थे, तो हम लोग कितने भद्दे ढंग से सावधान और आराम की हालत में खड़े होते थे। इस समय अध्यक्ष माओ के मन में यही बात थी। मैंने मुस्कराकर जवाब दिया: "जी हां, मैंने सीख लिया है। लेकिन भाषण तो मैं अब भी नहीं दे सकता, खास तौर से शाम को हाजिरी के समय ..."

वे मुस्कराने लगे। उन्होंने पूछा: "क्या तुम्हारे बोलते

समय, सैनिक अपने पैर पटकते हैं और मच्छरों के बारे में शिकायत करते हैं?"

उन दिनों, अगर शाम की हाजिरी के वक्त, रोजमर्रा का भाषण बहुत ही लम्बा होता था तो कुछ मजाकिया सैनिक अपने पैर पटकने लगते थे और अगर कोई उनसे पूछता था कि क्या बात है, तो वे यह जवाब देते थे कि मच्छर काट रहे हैं। ऐसा लगता था कि अध्यक्ष माओ सेना के इन मजाकों से भलीभांति परिचित थे। अध्यक्ष की बात सुनकर मुझे हंसी आ गई।

फिर उन्होंने गम्भीरता से कहा: "अब तुम एक कार्यकर्ता हो, इसलिए तुम्हें हरेक बात पर ध्यान देना चाहिए। बोलते समय, हर बात साफ-साफ कहनी चाहिए। बेकार बकबक नहीं करनी चाहिए। न कभी शेखी बघारनी चाहिए, न दिखावा करना चाहिए।" फिर उन्होंने पूछा: "क्या तुम्हारे साथी लिखना-पढ़ना सीख रहे हैं?"

मैंने जवाब दिया: "जी हां।" और जब उन्होंने पूछा कि उन्हें लिखना किसने सिखाया, तो मैंने शरमाते हुए कहा: "मैंने।" "अच्छा, तो तुम अध्यापक भी हो!" उन्होंने कहा। "तुम दूसरों को कैसे सिखा सकते हो जब तुम खुद इतने कम शब्द जानते हो?"

"मैं पढ़ाने के साथ-साथ पढ़ता भी हूं।" मैंने बताया। "अगर कोई ऐसा शब्द है जो मैं नहीं जानता, तो मैं उसे स्टूडेन्ट पाकिट डिक्शनरी में ढूंढ़ लेता हूं।"

जब अध्यक्ष ने यह सुना, तो उन्होंने मुझे उत्साहित करते हुए कहा : "यह बहुत अच्छी बात है! मेहनत से काम करो और कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करो! तुम्हें याद है, जब तुम च्याङशी में थे, श्ये च्वे-चाए, श्वी थ-ली, छन युन और च्वो छ्वान तुम्हें कैसे पढ़ना और लिखना सिखाते थे?"

मैंने सिर हिला कर हामी भरी। मैं कैसे भूल सकता था? उन दिनों च्याङशी में, ज्योंही हम लोग किसी जगह टिकते थे, अगुआ कार्यकर्ता बारी-बारी से आकर हमें लेक्चर देते थे और हमें पढ़ना और लिखना सिखाते थे। खास तौर से कामरेड श्ये च्वे-चाए हमारी पढ़ाई में विशेष दिलचस्पी लेते थे। हालांकि अध्यक्ष माओ बहुत व्यस्त रहते थे, फिर भी अगर वे जरा सा भी समय निकाल पाते थे, तो वे हमारी पढ़ाई में मदद देने के लिए कुछ उठा न रखते थे।

उन दिनों, जैसा कि बाद में भी होता था, जहां भी लाल सेना जाती थी, वह नारे लिख-लिख कर चिपकाती थी। अध्यक्ष माओ इन नारों के शब्द सीखने में हमारी मदद करते थे और बाद में हमारी परीक्षा लेते थे। उन्होंने ही मेरा हाथ पकड़कर मुझे अपना नाम लिखना सिखाया था। उन्होंने हमें और भी बहुत सी बातें सिखायी थीं। जब हम लोग फ़ूच्येन प्रान्त के लुङ्येन में थे, जो कि एक कोयला खान केन्द्र था तो उन्होंने हमें बताया था कि जमीन के नीचे कोयला कैसे बनता है। अगर हम किसी गर्म-झरने के पास पहुंचते थे, तो वह हमें इन झरनों का कारण समझाते थे। जब कभी बिजली कड़कती

ग्रौर चमकती थी तो वे हमें वताते थे कि यह कैसे होता है।

जिन दिनों हम लोग च्याङशी प्रान्त के रुइचिन में थे, उन दिनों ग्रध्यक्ष को सब्जियों के लिए उतना ही भत्ता मिलता था, जितना हम लोगों को। उनके पास कोई रसोइया न था। ऊ च्ये-छिङ ग्रौर मैं हम दोनों वारी-वारी से उनके लिए खाने की चीजें खरीदने जाते थे ग्रौर खाना पकाते थे। जव मैं बाजार से लौटता था, तो मैं ग्रपनी नोटबुक में सब्जियों के नाम लिख लेता था। एक दिन उन्होंने जांच के लिए वह नोटबुक देखी ग्रौर दिलचस्पी से मुझसे पूछा :

"क्या यह तुम्हारा हिसाब है?"

"जी नहीं," मैंने जवाव दिया। "ये वे शब्द हैं जो मैं सीख रहा हूं।"

"शब्द सीखने का यह ग्रच्छा तरीका है।" उन्होंने वताया। "क्या ऊ च्ये-छिङ भी यही करता है?"

जव मैंने उत्तर दिया "नहीं" तो उन्होंने कहा : "यह तो बुरी वात है। उससे कहो कि यहां ग्राए!"

मैंने ऊ को ग्रन्दर बुलाया ग्रौर ग्रध्यक्ष ने उससे कहा : "ग्रव से जव भी तुम सब्जी खरीदो, तो हिसाव जरूर लिखो ग्रौर मुझे दिखाग्रो!"

तभी से ऊ च्ये-छिङ गम्भीरता से पढ़ने-लिखने लगा।

ग्रध्यक्ष माग्रो हमारी शिक्षा में इसी प्रकार की गहरी दिलचस्पी लेते थे।

अध्यक्ष माओ से बिदाई

जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध की विजय के वाद उन नए मुक्त क्षेत्रों में, जहां नए सिरे से काम करने के लिए जनता हमारा इन्तजार कर रही थी, पार्टी एक वड़ी तादाद में कार्यकर्ता भेजने जा रही थी। उस समय मैं येनान में सार्वजनिक सुरक्षा ब्यूरो के तुङक्वान उप-कार्यालय का प्रधान था। एक दिन पार्टी के केन्द्रीय संगठन विभाग ने मेरे नए काम के वारे में वाद-विवाद करने के लिए मुझे बुलाया। जव मैं वहां पहुंचा, तो उस विभाग के एक कामरेड ने मुझे वताया कि पार्टी मुझे मोर्चे पर भेजने के वारे में सोच रही है और मुझसे कहा कि मैं शानतुङ और उत्तर-पूर्व में से एक जगह चुन लूं।

कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों से जिन महत्वपूर्ण वातों की आशा की जाती है, उनमें से एक यह है कि उन्हें पार्टी के हुक्म का पालन करना चाहिए। मैं कहीं भी जाने को तैयार था जहां भी पार्टी को जरूरत हो। इसलिए मैंने पार्टी पर छोड़ दिया कि वह मेरे लिए तय करे।

पार्टी ने तय किया कि मुझे काम करने के लिए शानतुङ जाना चाहिए।

मेरे काम का कई वार तवादला हो चुका था, मगर इस वार मेरा दिल काफी अशान्त था। इस वार मैं येनान छोड़ कर युद्ध के मोर्चे पर वहुत दूर जा रहा था और मैं शायद वहुत दिनों तक अध्यक्ष माओ को नहीं देख सकूंगा। जव मैं घर पहुंचा तो मुझे सव से पहले यही सूझा कि मुझे अध्यक्ष माओ से विदाई लेनी चाहिए। इसलिए मैंने अध्यक्ष के अंगरक्षक हो छिङ-ह्वा को फोन पर वताया कि मैं युद्ध मोर्चे पर जा रहा हूं और अध्यक्ष से मिलना चाहता हूं। थोड़ी देर वाद, हो छिङ-ह्वा ने मुझे वताया कि अध्यक्ष ने कल सुवह का समय निश्चित किया है।

उस रात को मुझे नींद नहीं आई। उस रात मैंने अपनी पत्नी को अध्यक्ष के वारे में वहुत सी वातें वताईं कि अध्यक्ष किस तरह हमें शिक्षा देते थे और हमारी देखभाल करते थे... अध्यक्ष का जीवन कितना सादा है और वे पार्टी व जनता के कितने वफादार हैं... इस तरह हम पौ फटने तक वातचीत करते रहे।

दूसरे दिन नाश्ते के तुरन्त वाद, मैं अपनी पत्नी तथा साल भर की वच्ची को लेकर रवाना हुआ। जव हम लोग वाङ-च्याफिङ पहुंचे जहां वे रहते थे, तो उनके अंगरक्षक हो छिङ-ह्वा ने हमें वताया : "अध्यक्ष माओ अपने दफ्तर में सुवह से ही तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं!"

हम लोग उसके पीछे-पीछे आंगन में गए। अध्यक्ष माओ की पत्नी कामरेड च्याङ छिङ हमारा स्वागत करने के लिए

बाहर निकल आई। उन्होंने हम से हाथ मिलाया और मेरी बच्ची को अपनी गोद में ले लिया। अध्यक्ष शीघ्र ही हमसे मिलने आए। वे एक ढीली-ढाली वर्दी पहने हुए थे और पहले से अधिक हृष्ट-पुष्ट दिखाई पड़ रहे थे। मैंने उन्हें सलाम किया। वे हमें अपनी बैठक में ले गए और जब हम बैठ गए, तो हमसे पूछा : "कहां जा रहे हो तुम?"

मैंने उन्हें बताया कि मैं शानतुङ जा रहा हूं।

"तो तुम उत्तरी शेनशी छोड़ कर जा रहे हो! क्या तुम्हें कोई कठिनाई है?"

मैंने उत्तर दिया : "नहीं"। फिर उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं अपनी पत्नी और बच्ची को साथ ले जा रहा हूं या नहीं, और हमें रास्ते में कोई कठिनाई तो नहीं होगी? जब मैंने उनके प्रश्नों का उत्तर दे दिया, तो उन्होंने मुझे उन दोनों की अच्छी तरह देखभाल करने की सलाह दी।

फिर वे मेरी पत्नी से बातचीत करने लगे। उन्हें यह जानकर खुशी हुई कि हमारा पारिवारिक जीवन अत्यन्त सुखमय है।

वे मेरी बच्ची के साथ खेलते रहे और उसके बारे में पूछते रहे। इसके बाद अध्यक्ष बैठकर मेरे तबादले के बारे में बातचीत करते रहे। उन्होंने कहा : "जब कोई आदमी किसी नई जगह जाता है, तो उसे अनिवार्य रूप से कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यह तो तुम्हारे ऊपर है कि तुम उन कठिनाइयों को दूर करने के लिए कोई उपाय खोज निकालो।" उन्होंने हमसे यह भी कहा : "जनता के साथ घनिष्ठ सम्पर्क

कायम करना चाहिए।" बातचीत करते-करते, उन्होंने हो छिङ-ह्वा को बुलाया। वह दो पैकेट बिस्कुट और कुछ मांस लेकर आया। इन चीजों को मुझे देते हुए, उन्होंने कहा: "अब तुम जा रहे हो। तुम्हें देने के लिए मेरे पास कोई अच्छी चीज नहीं है, पर सफर के लिए ये कुछ चीजें बच्ची के लिए हैं।" मैंने एक छोटी सी नोटबुक निकाली और उनसे कहा: "अध्यक्ष माओ, मैं अब आपसे जुदा हो रहा हूं, क्या आप मेरी नोटबुक में मेरे लिए कुछ लिखेंगे?"

उन्होंने तुरन्त मेरी नोटबुक ले ली और निम्नलिखित वाक्य लिखे:

कामरेड छन छाङ-फ़ङ,

मेहनत से काम करो! पार्टी तथा जनता के प्रति वफादार रहो! मैं तुम्हारी सफलता की कामना करता हूं!

माओ त्सेतुङ

१७ मई, १९४६

उन्होंने मुझे अपनी एक फोटो भी दी।

हो छिङ-ह्वा से मुझे मालूम हुआ कि अध्यक्ष साढ़े दस बजे एक बैठक में जाने वाले हैं, इसलिए मेरी पत्नी और मैं जाने के लिए तैयार हुए।

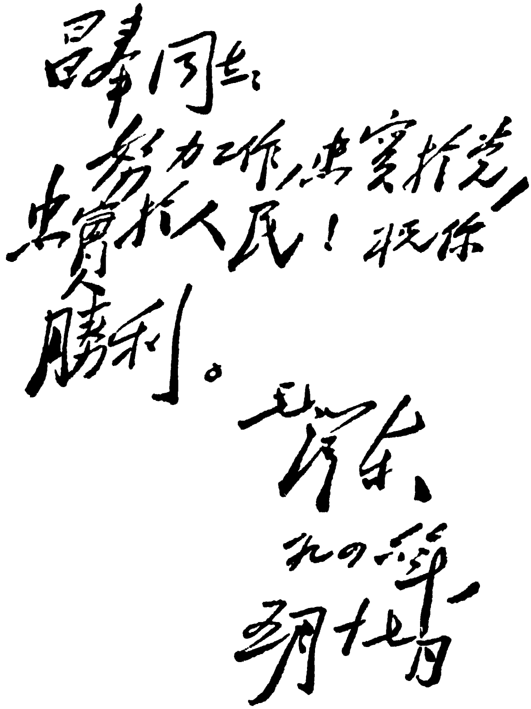
"कोई जल्दी नहीं।" अध्यक्ष ने कहा। "मैं अभी बैठक में जा रहा हूं। तुम लोग दोपहर का भोजन यहीं करके जाना।" उन्होंने हो छिङ-ह्वा से खाना तैयार करने को कहा और मुझसे

कहा कि मैं अपने मन-पसन्द की कुछ चीजें बता दूं।

हमने कहा कि हमें अभी सफर की तैयारी करनी है, इसलिए हम दोपहर के भोजन के लिए नहीं ठहर सकते।

अध्यक्ष हमारे साथ बाहर निकल कर आए। वे हमसे बार-बार यही कहते रहे कि अच्छी तरह काम करना और अच्छी तरह अपनी तबीयत की देखभाल करना। जब उन्होंने अपना हाथ आगे बढ़ाया, तो मैंने उसे कसकर पकड़ लिया। मेरे मुंह से एक भी शब्द न निकल सका।

१८ मई, १९४६ को, मैं येनान से रवाना हुआ। तब से कितने वर्ष व्यतीत हो गए, पर इस बीच चाहे मैं मोर्चे पर लड़ता होऊं या शान्तिपूर्ण निर्माण के लिए काम करता होऊं, मैं हमेशा ऐसा महसूस करता रहा हूं कि मैं अब भी अध्यक्ष के साथ हूं। जब भी मैं उनके बारे में सोचता हूं, तो मेरी शक्ति और आत्म-विश्वास बढ़ जाता है। उनकी फोटो और अपनी नोटबुक, जिसमें उनका विदाई-संदेश लिखा हुआ है, आज भी मैं अपने पास रखे हुए हूं। मैं हमेशा उसी प्रकार कार्य करूंगा जैसा कि उन्होंने कहा है। मैं अपना काम मेहनत से करता रहूंगा और पार्टी तथा जनता के प्रति हमेशा वफादार रहूंगा।



छन छाङ-फ़ङ की नोटबुक में अध्यक्ष माओ के आटोग्राफ़ :

कामरेड छन छाङ-फ़ङ,

मेहनत से काम करो! पार्टी तथा जनता के प्रति वफादार रहो! मैं तुम्हारी सफलता की कामना करता हूं!

माओ त्सेतुङ

१७ मई, १९४६

परिशिष्ट

सुखद स्मृतियां

येनान में अध्यक्ष माओ से विदा हुए आज मुझे बारह वर्ष हो गए हैं। मुझे याद है, १७ मई १९४६ को जब शानतुङ के लिए प्रस्थान करने से पहले मैं उनसे विदाई लेने गया तो उनके साथ मेरी काफी अच्छी बातचीत हुई थी।

"अच्छा, तो तुम अब शानतुङ जा रहे हो?" अध्यक्ष ने पूछा। "वह एक अच्छी जगह है। वहां हमारा एक बड़ा क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्र है। चूंकि पिछले कुछ समय में हमने बहुत सी काउन्टियों को मुक्त करा लिया है, इसलिए तरह-तरह का काम करने के लिए वहां कार्यकर्ताओं की जरूरत है। जब तुम वहां जाओ, तो तुम्हें जिम्मेदार स्थानीय नेताओं और उस संगठन के नेताओं का जिसमें तुम्हारा तबादला किया जा रहा है, अवश्य सम्मान करना चाहिए। तुम्हें स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ अच्छी तरह एकता कायम करनी चाहिए और उनके साथ अच्छी तरह सहयोग करना चाहिए।"

उनकी हिदायतों को बड़े ध्यान से सुनने के बाद मैंने अपनी नोटबुक निकाल ली और कुछ शब्द लिखने का अनुरोध किया। उन्होंने मान लिया (शब्द पिछले पृष्ठ पर प्रकाशित प्लेट में अंकित हैं)। उन्होंने अपने आटोग्राफ सहित एक फोटो भी मुझे दिया। इन दोनों मूल्यवान वस्तुओं को मैं आज तक सुरक्षित रखे हुए हूं।

मुझे वे दिन याद हैं जब मुझे अध्यक्ष की सेवा करने का मौका मिला, पहले एक अर्दली के रूप में और बाद में एक अंगरक्षक के रूप में। मुझे याद है कि मैंने लम्बे अभियान में उनके साथ कैसे भाग लिया। उन दिनों मेरी उम्र केवल सोलह वर्ष थी। दरअसल अध्यक्ष की देखभाल मैं नहीं करता था बल्कि अध्यक्ष ही मेरी देखभाल करते थे। उन्होंने मुझे क्रान्ति की सच्चाइयां समझाईं और पढ़ना-लिखना सिखाया। और जब कभी मुझे घर की याद सताती, तो वे मेरी तरफ से मेरे घर को चिट्ठियां भी लिखते थे। मूसलाधार वर्षा में रात को होने वाले अभियान में वे लालटेन खुद उठाकर हमें रास्ता दिखाते थे, ताकि हम कहीं गिर न जाएं। एक अविस्मरणीय घटना मुझे अब भी याद है। ल्युफान पहाड़ को पार करते समय मैं कई दिनों तक मलेरिया ज्वर से पीड़ित रहा। तब मैं बहुत दुर्बल हो गया था। पहाड़ की चोटी पर पहुंचने से पहले ही मैं लड़खड़ाने लगा और बेहोश होकर गिर पड़ा। अध्यक्ष ने अपना गरम ओवरकोट उतारकर मुझे पहना दिया और खुद सर्द हवा में हल्के कपड़े पहने रहे।

मगर मेरी राजनीतिक शिक्षा पर वे शारीरिक सुख-सुविधाओं से कहीं अधिक ध्यान देते थे। फरवरी १९३९ में जब मैं लाल सेना अकादमी में जाने के लिए उनसे विदाई लेने गया तो उन्होंने बड़ी गम्भीरता के साथ मुझे बताया, "अध्ययन करना बड़ी अच्छी बात है, मगर इसलिए नहीं कि हम कोई ओहदा हासिल करना चाहते हैं बल्कि इसलिए कि हम जनता के लिए और अधिक काम करने की योग्यता प्राप्त कर सकें। बेशक, अध्ययन के दौरान तुम्हें कुछ कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन जब तक तुम्हारे अन्दर जनता की सेवा करने का इरादा बना रहेगा, तब तक तुम सभी कठिनाइयों पर काबू पा सकोगे।"

जिन दिनों मैं येनान सार्वजनिक सुरक्षा ब्यूरो में काम कर रहा था, उन दिनों मैं अभी किशोर ही था। जब भी मुझे मौका मिलता अध्यक्ष के पास जाकर दिल खोलकर बातें करता। उन दिनों मैं ओहदे और रुतबे को बहुत ज्यादा अहमियत देता था। मैं महसूस करता था कि चार वर्ष से ज्यादा समय तक निर्देशक के रूप में कार्य करने के बाद मैं तरक्की का हकदार हूं। एक बार मैंने अध्यक्ष से कहा, "अध्यक्ष माओ, मुझे अभी कितने दिन और निर्देशक ही बने रहना पड़ेगा?"

"निर्देशक का काम भी एक क्रान्तिकारी काम है। क्या तुम अफसर बनना चाहते हो?" उन्होंने मुझसे पूछा। "कम्युनिस्ट पार्टी उन लोगों के लिए नहीं है जो सिर्फ अफसर बनना चाहते हैं। हम सबका दर्जा बराबर है। हम जनता के लिए कार्य करते

है—चाहे अफसर हों या न हों। यहां अगर कोई सिर्फ पदोन्नति चाहता है अथवा अपनी सुख-समृद्धि चाहता है तो उसके हाथ निराशा ही लगेगी।"

उनके ये शब्द मुझे बड़े प्रेरणादायी प्रतीत हुए। उनका मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा। येनान से शानतुङ आने के बाद पिछले अनेक वर्षों में जब भी मेरा तबादला एक पद से किसी दूसरे पद पर हुआ है, मैंने हर जगह भरपूर उत्साह से और व्यक्तिगत लाभ की भावना के बिना कार्य किया है, कारण अध्यक्ष के शब्दों को मैंने अपना ध्येयवाक्य और प्रेरणा-स्रोत बना लिया है।

अध्यक्ष माओ से विदा हुए मुझे बारह वर्ष हो गए हैं। मैं अक्सर उनसे मिलने के लिए लालायित रहता हूं। युद्ध के वर्षों में, जब मुक्त क्षेत्रों को दुश्मन ने अलग-थलग कर दिया था और आना-जाना कठिन था, मैं उन्हें केवल पत्र भेज पाता था। राष्ट्रव्यापी विजय के बाद मेरी तीव्र इच्छा थी कि पेकिङ जाकर उनसे मुलाकात करूं। लेकिन काम में फंसा होने के कारण मैं अपनी इच्छा पूरी नहीं कर पाया।

फरवरी १९५२ में एक दिन मैं नानकिङ की एक फौजी ट्रेनिंग कक्षा में भाग ले रहा था। आदेश मिला कि मुझे अपने सह-शिक्षार्थियों के साथ एक नेतृत्वकारी साथी को विदा करने जाना है। जब मुझे पता चला कि वह नेतृत्वकारी साथी और कोई नहीं अध्यक्ष माओ खुद ही हैं, तो मैं खुशी से फूला न समाया। जब अध्यक्ष ने हमारे सामने से गुजरते हुए सलामी ली और

गनबोट में पहुंचकर तट पर खड़ी भीड़ को हाथ हिलाकर अलविदा कहा, तो मेरे मन में आया कि पांत तोड़ दूं और दौड़कर अध्यक्ष से दो बातें कर लूं। बेशक, मैं ऐसा नहीं कर सकता था। बोट को बन्दरगाह से बाहर निकलते और धीरे-धीरे ओझल होते देखने के सिवाय मैं और कर ही क्या सकता था।

कुछ समय बाद, जब फौजी अधिकारियों के लिए छुट्टी के नियम लागू हुए, तो मैंने तैयारियां शुरू कर दीं, ताकि पेकिङ जाकर अध्यक्ष को मिलने की अपनी दीर्घकालीन आकांक्षा पूरी करके छुट्टियों का बेहतरीन इस्तेमाल कर सकूं।

तभी मेरे जीवन में एक सुखद घटना घटी। यह मेरे लिए एक महान दिवस था। ६ अगस्त १९५८ की बात है। मैं शानतुङ प्रान्त के चीनान में सेना की पार्टी कांग्रेस में भाग ले रहा था। अध्यक्ष माओ प्रतिनिधियों से मिलने आए। जब मैंने उन्हें कार से उतरते देखा तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। मुझे पक्का यकीन था कि इस बार मैं उनसे अवश्य बातें कर सकूंगा। जब वे हमारे साथ फोटो खिचवाने बैठे, तो मेरी व्याकुलता बहुत बढ़ गई। सोचने लगा उनसे क्या बातें करूंगा। तभी किसी ने शायद उन्हें बता दिया कि मैं भी उस ग्रुप में मौजूद हूं। उन्होंने मुझे बुला भेजा। हड़बड़ाकर मैं अध्यक्ष के पास जा पहुंचा। मैंने उनका अभिवादन किया, लेकिन जो कुछ उनसे कहने के लिए सोचा था वह सब भूल गया। भावावेश में मेरा गला रुंध गया। "तुम छन छाङ-फ़ङ हो क्या ?"

"जी हां", मैंने धीमे से कहा।

उन्होंने अपना हाथ बढ़ा दिया, जिसे मैंने अपने दोनों हाथों में थाम लिया। मैं इतना भावविभोर हो उठा कि अध्यक्ष से उनका हालचाल पूछना भी भूल गया।

"एक दूसरे से जुदा हुए हमें दस साल से ज्यादा अरसा हो गया है," अध्यक्ष ने कहा। "तुम्हारा क्या हाल है?"

"हां, बारह साल हो गए हैं!" मैंने अपने को सम्भालते हुए कहा। "आप तो ठीक-ठाक हैं, अध्यक्ष माओ?"

"आजकल कहां काम कर रहे हो?"

"एक फौजी उपक्षेत्र में," मैंने उत्तर दिया।

राजनीतिक निर्देशक ली और उपनिर्देशक तुङ ने, जो मेरे ही पास खड़े थे, अध्यक्ष को बताया कि मैं एक फौजी उपक्षेत्र का डिप्टी-कमाण्डर हूं।

"अच्छा, तो अब तुम एक कमाण्डर बन गए हो!" अध्यक्ष ने मुस्कराते हुए कहा। "क्या इस बीच घर भी गए?"

"सिर्फ एक बार, १९५३ में।"

"अपने पुराने घर निङतू में ही?"

उनकी याददाश्त सचमुच बड़ी अद्भुत थी! इतने वर्ष बीतने पर भी उन्हें याद था कि मेरा घर निङतू में है। मैंने उन्हें बताया कि मेरा घर वहीं है।

"तुम्हारे परिवार के लोग कैसे हैं? परिवार में अब कौन-कौन हैं?"

मैंने उन्हें अपने परिवार का पूरा हाल बता दिया—कैसे वे लोग कृषि सहकारी समिति में शामिल हो गए हैं, कैसे उनकी

रहन-सहन की स्थिति में सुधार हुआ है, वगैरह-वगैरह।

"अब तुम्हारे बच्चे कितने हैं?"

"चार।"

"बहुत अच्छा!" स्पष्ट था कि यह जानकर उन्हें खुशी हुई थी। इसके बाद उन्होंने पूछा, "अब तुम्हारी उम्र कितनी है?"

"चालीस से ऊपर।" मैंने जवाब दिया।

"कितने?"

"चवालीस।"

वे खिलखिलाकर हंस पड़े। "तुम भी इतने नौजवान नहीं रहे अब!"

मेरा हाथ अपने दोनों हाथों में थामकर उन्होंने कहा, "बहुत अच्छा! जल्दी ही हम दोनों फिर मिलेंगे!"

उनकी पकड़ बड़ी मजबूत थी। निश्चय ही उनका स्वास्थ्य पहले से कहीं ज्यादा अच्छा था। वे एक सफेद कमीज, भूरे रंग की पतलून और पुराने जूते पहने हुए थे। उनकी सरलता और सादगी पहले की ही तरह बनी हुई थी। मैंने उनके भव्य व्यक्तित्व को दृढ़ता से कार की तरफ बढ़ते देखा, जो उनके लिए इन्तजार कर रही थी।

उस दिन की सुखद घटना की स्मृति में रातभर मेरी आंख न लग पाई। लेटे-लेटे मैं अतीत की स्मृतियों में खो गया और बीते दिनों की ही तरह अध्यक्ष के निकट जा पहुंचा।

परिशिष्ट

लम्बे अभियान के बारे में

चीनी मजदूर-किसानों की लाल सेना को, फ़ूच्येन और च्याङशी के अपने दक्षिणी आधार-क्षेत्र से उत्तरी शेनशी तक अपना विश्वविख्यात लम्बा अभियान पूरा करने में पूरे दो वर्ष (अक्तूबर १९३४ से अक्तूबर १९३६) लगे। इस अभियान में उसने २५,००० ली या १२,५०० किलोमीटर लम्बा फासला तय किया। लड़ते-लड़ते ग्यारह प्रान्तों से गुजरते हुए लाल सेना ने बरफ से ढके पहाड़ों और सामरिक महत्व के दर्रों को पार किया, तूफानी नदियों और निर्जन घास के मैदानों को लांघा तथा दुश्मन के लाखों सैनिकों की घेरेबन्दी को तहस-नहस किया। योद्धाओं का अद्भुत शौर्य और पराक्रम, कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में लड़ने वाली उस जन-सेना की जुझारू शक्ति का ज्वलन्त प्रमाण है जो सभी शत्रुओं के सामने अपराजेय सिद्ध हो चुकी है।

नीचे लम्बे अभियान का विवरण दिया जा रहा है—वह कैसे

हुआ और अन्त में किस प्रकार विजयी हुआ तथा उसका ऐतिहासिक महत्व क्या है।

*

* *

१९३१ में जब जापानी साम्राज्यवादियों ने उत्तर-पूर्वी चीन पर कब्जा कर लिया तो चीन को बड़ी नाजुक स्थिति का सामना करना पड़ा। लेकिन क्वोमिन्ताङ ने जापानी हमलावरों का मुकाबला करने और देश को बचाने की जनता की मांग की अवहेलना करते हुए जापानियों का प्रतिरोध न करने की नीति अपनाई। उन्होंने अपना प्रहार चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में कायम किए गए क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्रों पर केन्द्रित किया।

अक्तूबर १९३३ में च्याङ काई-शेक ने दस लाख सैनिक जमा करके क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्रों के खिलाफ—खास तौर पर च्याङशी प्रान्त के केन्द्रीय आधार-क्षेत्र के खिलाफ, जिसका केन्द्र रुइचिन था—"घेरा डालने" की पांचवीं मुहिम छेड़ दी। तब तक समूचे देश में लाल सेना के सैनिकों की संख्या बढ़कर ३,००,००० तक हो गई थी; नागरिक सशस्त्र सैन्य-शक्तियों का भारी विकास हो चुका था। खाद्य-पदार्थों और अन्य सामग्री की सप्लाई पहले से बेहतर हो गई थी। क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्रों में मुकम्मिल भूमि-सुधार होने, आर्थिक निर्माण के क्षेत्र में प्रगति होने और जनता के रहन-सहन की स्थिति में सुधार

होने के परिणामस्वरूप जन-समुदाय ने – खास तौर से किसानों ने – क्रान्तिकारी युद्ध का और अधिक उत्साह के साथ समर्थन किया।

उसी वर्ष नवम्बर में "फ़ूच्येन घटना" हुई। उन्नीसवीं राह सेना ने, जो पहले क्वोमिन्ताङ की कमान में थी, छाए थिङ-खाए के नेतृत्व में ली ची-शन और अन्य क्वोमिन्ताङ सदस्यों के साथ मिलकर फ़ूच्येन में "चीन गणराज्य की क्रान्तिकारी जन सरकार" की स्थापना कर दी तथा च्याङ काई-शेक का विरोध करने और जापानी हमलावरों का प्रतिरोध करने के लिए चीनी लाल सेना के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए। इसके फलस्वरूप लाल सेना के लिए "घेरा डालने" की इस मुहिम में इससे पहले की चार अन्य मुहिमों के मुकाबले अधिक अनुकूल स्थिति पैदा हो गई।

दुर्भाग्यवश, उस समय कम्युनिस्ट पार्टी तीसरी "वामपंथी" कार्यदिशा के प्रभाव में थी। "वामपंथी" अवसरवादियों ने, जिनका पार्टी पर नियंत्रण था, १९३३ के शुरू में केन्द्रीय क्रान्तिकारी आधार-क्षेत्र में प्रवेश करके कामरेड माओ त्सेतुङ को उनके पद से अलग कर दिया तथा आधार-क्षेत्रों और लाल सेना का नेतृत्व हथिया लिया। उन्होंने उन्नीसवीं राह सेना के साथ अच्छी तरह सहयोग नहीं किया, जिसकी वजह से इस सेना को अकेले ही दुश्मन का मुकाबला करना पड़ा। नतीजे के तौर पर च्याङ काई-शेक ने उसका सफाया कर दिया। ज्यादा गम्भीर बात यह थी कि "वामपंथी" अवसरवादियों ने कामरेड

माओ त्सेतुङ की सही रणनीति का निषेध किया तथा आक्रमणात्मक कार्यवाहियों में दुस्साहसवाद पर अमल करते हुए, बेहतर साज-सामान से लैस क्वोमिन्ताङ फौजों का मुकावला करने के लिए नियमित और मोर्चेवद्ध युद्ध का पक्षपोषण किया, और इस प्रकार लाल सेना को भारी हानि पहुंचाई। बाद में उन्होंने रक्षात्मक कार्यवाहियों में रूढ़िवाद पर अमल करते हुए तथाकथित चौतरफा रक्षात्मक कार्यवाही की और सैन्य-शक्तियों को तितर-बितर कर दिया, जिससे लाल सेना निष्क्रिय स्थिति में पड़ गई। हालांकि एक वर्ष तक भीषण संघर्ष करने के वाद लाल सेना को कुछ आंशिक फौजी कामयाबियां हासिल हुईं, फिर भी वह दुश्मन की घेरेबन्दी को नहीं तोड़ पाई। इसके विपरीत आधार-क्षेत्र सिकुड़ते गए और लाल सेना अधिकाधिक थकती चली गई।

ऐसी स्थिति में, अपनी शक्ति को सुरक्षित रखने और उत्तर में जापानियों के आक्रमण का मुकावला करने के लिए, लाल सेना ने फैसला किया कि दुश्मन के घेरे को चीरकर लम्बा अभियान करने के सिवाय उसके सामने और कोई चारा नहीं।

अक्तूबर १९३४ में पहली मोर्चा-सेना की मुख्य सैन्य-शक्ति, जिसमें कुल ८५,००० सिपाही (या सरकारी कर्मचारियों को मिलाकर १,००,००० लोग) थे, कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के प्रत्यक्ष नेतृत्व में केन्द्रीय आधार-क्षेत्र से लम्बे अभियान पर चल पड़ी। उसने कामरेड छन ई के नेतृत्व में थोड़ी-सी सैन्य-शक्ति को आधार-क्षेत्र में छोड़ दिया, ताकि वे लोग

छापामार युद्ध चलाकर दुश्मन के घेरे को चीरने में मुख्य सैन्य-शक्ति को आड़ दे सकें। ८,००,००० शत्रु-सैनिकों की चार नाकेबन्दियों को तोड़ते हुए, पहली मोर्चा-सेना नवम्बर १९३४ में हुनान और क्वाङशी की सीमा पर पहुंच गई तथा दूसरी मोर्चा-सेना द्वारा स्थापित हुनान-हुपे-सछ्वान-क्वेइचग्रो आधार-क्षेत्र की तरफ बढ़ गई। लाल सेना की इन दो मुख्य फौजी यूनिटों के मिलन से अत्यन्त भयभीत होकर च्याङ काई-शेक ने उक्त सेना को पश्चिमी हुनान में रोकने के लिए तुरन्त लाल सेना से कोई छे गुनी बड़ी सैन्य-शक्ति बटोर ली। उसने क्वाङशी के युद्ध-सरदारों को भी आदेश दे दिया कि वे उत्तरी क्वाङशी से लाल सेना पर धावा बोल दें, और इस प्रकार पहली मोर्चा-सेना को घेर लेने और उसका सफाया कर देने की कोशिश की। स्थिति बड़ी गम्भीर जान पड़ती थी। कामरेड माओ त्सेतुङ के सुदृढ़ दृष्टिबिन्दु और अधिकांश नेतृत्वकारी साथियों के समर्थन के परिणामस्वरूप पहली मोर्चा-सेना ने अपने अभियान का रास्ता बदल दिया और क्वेइचग्रो की तरफ कूच कर दिया, जहां दुश्मन की रक्षा-पंक्ति कमजोर थी। उसने जल्दी ही पूर्वी क्वेइचग्रो पर कब्जा कर लिया। जनवरी १९३५ में उसने ऊच्याङ नदी को, जो एक प्राकृतिक बाधा थी, पार किया और उत्तरी क्वेइचग्रो के सबसे बड़े शहर चुनई पर अधिकार कर लिया। वहां उसने १२ दिन तक विश्राम किया, जिसके दौरान उसने लगभग ५ हजार नए योद्धाओं से अपनी पांतों की क्षतिपूर्ति की। यहीं कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने केन्द्रीय राज-

नीतिक ब्यूरो का विस्तृत सम्मेलन – चुनई सम्मेलन – बुलाया जिसने चीनी क्रान्ति के इतिहास में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

च्याङ काई-शेक की "घेरा डालने" की पांचवीं मुहिम का मुकाबला करने के दौरान गलत नीतियां अपनाने के कारण लाल सेना को जिस पराजय का सामना करना पड़ा उसमें "वामपंथी" गलतियां करने वाले साथी घबरा उठे। लम्बे अभियान के शुरु में उन्होंने राजनीतिक जत्थेवन्दी का काम अच्छी तरह नहीं किया। उसके बाद लम्बे अभियान के दौरान उनकी एकमात्र कोशिश यह रही कि दुश्मन से कैसे दूर रहा जाए, जिसके फल-स्वरूप लाल सेना को अक्सर एक निष्क्रिय भूमिका अदा करनी पड़ती थी और सैनिकों के हौसले घट जाते थे। उन्होंने जरूरत से ज्यादा बड़े कमान-संगठन और सप्लाई-संगठन बना डाले, जिससे फौजों के एक जगह से दूसरी जगह आने-जाने की रफ्तार घट गई। दुश्मन की नाकेबन्दी का सामना होने और दुश्मन द्वारा पीछा किए जाने की वजह से लाल सेना अनेक बार खतरनाक स्थिति में पड़ गई। जनवरी १९३५ में चुनई पहुंचने तक पहली मोर्चा-सेना अपने ६० प्रतिशत सैनिक खो चुकी थी।

इस गम्भीर स्थिति से, जो दुश्मन की "घेरा डालने" की चौथी मुहिम को नाकाम करने में प्राप्त की गई विजय के विपरीत थी, पार्टी के अधिकांश नेतृत्वकारी सदस्यों और बुनियादी पांतों के सदस्यों को इस बात का एहसास हुए बिना न रहा कि हालत बिगड़ने का कारण सही कार्यदिशा को, जिसका प्रतिनिधित्व

कामरेड माओ त्सेतुङ कर रहे थे, ठुकराना तथा गलत कार्य-दिशा को अपनाना था। सैनिकों में सन्देह और असन्तोष पैदा हो गया और उन्होंने नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं को बदलने की मांग की। "वामपंथी" अवसरवादी कार्यदिशा के खिलाफ कामरेड माओ त्सेतुङ के नेतृत्व में अविचल संघर्ष चलाया गया जिसकी परिणति चुनई सम्मेलन के रूप में हुई जिसमें पार्टी-केन्द्र में "वामपंथी" कार्यदिशा के प्रभुत्व को समाप्त कर दिया गया तथा कामरेड माओ त्सेतुङ की अगुवाई में केन्द्रीय कमेटी का सही नेतृत्व स्थापित किया गया। इस प्रकार पार्टी व लाल सेना को उनके सिर पर मंडराने वाले खतरे से बचाया जा सका। चुनई सम्मेलन एक ऐसे ऐतिहासिक महत्व का मोड़ था जिसके जरिए पार्टी लम्बे अभियान को अन्त में सफल बना सकी, तथा लम्बे अभियान के दौरान परीक्षा की घड़ी आने पर पार्टी व लाल सेना के मेरुदण्ड की रक्षा कर सकी और उसे फौलाद की तरह मजबूत बना सकी।

चुनई सम्मेलन के बाद, पहली मोर्चा-सेना ने कामरेड माओ त्सेतुङ के विवेकपूर्ण नेतृत्व में लचीली कार्यनीति अपनाई और पहलकदमी अपने हाथ में रखी। फरवरी १९३५ में उसने चुनई के पास चार शत्रु-डिवीजनों का सफाया कर डाला तथा लम्बा अभियान आरम्भ होने से अब तक की पहली महान विजय प्राप्त की। इसके बाद पहली मोर्चा-सेना ने, नकली हमलों के जरिए दुश्मन को उलझन में डाल कर उसे चकमा देने में काम-याबी हासिल की। उसने मई के महीने में सिर्फ नौ दिन और नौ

रातों में, बिना कोई क्षति उठाए, सछ्वान प्रान्त और युन्नान प्रान्त की सीमा पर सुनहरी बालू वाली नदी पार की।

लाल सेना ने लाखों शत्रु-सैनिकों की नाकेबन्दी तोड़ डाली। यह लम्बे अभियान की निर्णयात्मक विजय थी। उसके बाद लाल सेना ने पश्चिमी सछ्वान से गुजरते हुए उत्तर की तरफ कूच किया, दुर्गम तातू नदी पार की, विशाल हिमाच्छादित पर्वतशृंखला को लांघा, तथा जून १९३५ में पश्चिमी सछ्वान के तावेइ और माओकुङ नामक स्थानों में जा पहुंची, जहां वह सछ्वान-शेनशी आधार-क्षेत्र में चौथी मोर्चा-सेना से जा मिली।

चाङ क्वो-थाओ, जो चौथी मोर्चा-सेना का एक नेता था, "घेरा डालने" की पांचवीं मुहिम का मुकाबला करने में असफल होने पर क्रान्ति के भविष्य के बारे में विश्वास खो बैठा तथा उसने पलायन करने की दक्षिणपंथी अवसरवादी नीति का अनुसरण किया। मार्च १९३५ में उसने सछ्वान-शेनशी आधार-क्षेत्र को छोड़ दिया तथा अपने सैनिकों को लेकर पश्चिम की तरफ बढ़ गया, दक्षिण-पश्चिमी चीन की तरफ पीछे हटने—वास्तव में भाग खड़े होने—के इरादे से। च्यालिङ, फ़ू और मिन नदियों को पश्चिम की तरफ पार करने के बाद ये फौजें लीश्येन और माओकुङ क्षेत्र में पहली मोर्चा-सेना के साथ जा मिलीं।

कामरेड माओ त्सेतुङ ने चाङ क्वो-थाओ की गलतियों के खिलाफ अन्त:पार्टी संघर्ष चलाने की सही कार्यदिशा अपनाई। उसे धीरज के साथ समझा-बुझा कर सही रास्ते पर लाने के

लिए पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने सछ्वान के उत्तर-पश्चिम में स्थित सुङफान नामक स्थान में एक महत्वपूर्ण मीटिंग बुलाई, जिसमें विचार-विमर्श के बाद यह फैसला किया गया कि लाल सेना उत्तर की तरफ अपना अभियान जारी रखें। अन्त में चाङ क्वो-थाओ ने केन्द्रीय कमेटी के फैसले को नाममात्र के लिए स्वीकार कर लिया।

अगस्त १९३५ में लाल सेना के दो कालमों ने उत्तर की तरफ अभियान करना जारी रखा—दाईं तरफ का कालम पार्टी की केन्द्रीय कमेटी और कामरेड माओ त्सेतुङ के नेतृत्व में था और बाईं तरफ का कालम चू तेह, चाङ क्वो-थाओ और ल्यू पो-छङ के नेतृत्व में। लेकिन जब बायां कालम आपा (यह अब सछ्वान के आपा तिब्बती स्वायत्त चओ में है) पहुंचा, तो चाङ क्वो-थाओ ने फिर एक बार केन्द्रीय कमेटी के फैसले पर अमल करने से इनकार कर दिया तथा वह चू तेह और ल्यू पो-छङ को नजरबन्द करके अपनी फौजों को दक्षिण की तरफ ले गया। उसने चौथी मोर्चा-सेना की दो फौजी कोरों को भी, जिन्हें दाएं कालम के अधीन रखा गया था, गुप्त रूप से आदेश दिया कि वे दक्षिण की तरफ उसी के साथ कूच कर दें तथा पीछे हटकर थ्येनछ्वेन और लुशान के इलाके (जो अब सछ्वान प्रान्त में याआन के उत्तर में है) में चली जाएं। बाद में, उसने केन्द्रीय कमेटी के खिलाफ खुल्लम-खुल्ला नारे लगाए और उसे नष्ट करने की साजिश रची। तब केन्द्रीय कमेटी ने फैसला किया कि दाएं कालम को अकेले ही उत्तर की तरफ ले जाया जाए। सितम्बर में, उन्होंने सछ्वान

ग्रौर कानसू की सीमा पर लाचिखग्रो में प्राकृतिक बाधा पार की, मिनशान पहाड़ को लांघा ग्रौर दक्षिणी कानसू में प्रवेश किया। ग्रगले महीने वे उत्तरी शेनशी के ऊछी कस्बे में पहुंच गए, जहां वे उत्तरी शेनशी में फौजी कार्यवाही में जुटे हुए पन्द्रहवें सेना-ग्रुप से जा मिले। नवम्बर में, लाल सेना की इन दोनों यूनिटों ने ग्रपना पीछा करने वाली शत्रु-सेनाग्रों को चकनाचूर कर दिया तथा शेनशी-कानसू ग्राधार-क्षेत्र को सुदृढ़ बनाया, जो बाद में विकसित होकर सुप्रसिद्ध शेनशी-कानसू-निङश्या सीमान्त क्षेत्र बन गया ग्रौर जिसका केन्द्र येनान था।

नवम्बर १९३५ में, दूसरी मोर्चा-सेना ने पहली मोर्चा-सेना को ग्राड़ देने के लिए दुश्मन के पृष्ठभाग में छापामार युद्ध चलाने के बाद, खुद भी लम्बा ग्रभियान शुरू कर दिया। उसने भी लगभग वही रास्ता ग्रपनाया जो पहली मोर्चा-सेना ने ग्रपनाया था। जून १९३६ में वह पश्चिमी सछ्वान के कानचि नामक स्थान में पहुंच गई तथा चौथी मोर्चा-सेना के साथ जा मिली, जिसका नेतृत्व चाङ क्वो-थाग्रो कर रहा था ग्रौर जो वहां पड़ी हुई सिर्फ वक्त गुजार रही थी।

चाङ क्वो-थाग्रो, जो नापाक इरादे लिए हुए था, ग्रब इतना ग्रागे बढ़ गया कि उसने पार्टी के साथ भी गद्दारी कर डाली। उसने एक बोगस "पार्टी-केन्द्र" कायम कर लिया ग्रौर खुद उसका ग्रध्यक्ष बन बैठा। उसने दूसरी मोर्चा-सेना के नेताग्रों को इस बात के लिए उकसाया कि वे पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का विरोध करने में उसका साथ दें तथा उसकी पलायनवादी

नीति और पार्टी-विरोधी फूटपरस्त गतिविधियों का समर्थन करें। कामरेड माम्रो त्सेतुङ की अन्तःपार्टी संघर्ष की सही कार्यदिशा पर कायम रहते हुए, कामरेड चू तेह ने पक्की राजनीतिक ईमानदारी और क्रान्तिकारी गुणों का प्रदर्शन किया और पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के खिलाफ ऐलान जारी करने के चाङ क्वो-थाम्रो के अनुरोध को ठुकरा दिया, तथा इससे भी आगे बढ़कर, कार्यकर्ताओं के बीच केन्द्रीय कमेटी की सही कार्यदिशा का प्रचार-प्रसार किया। कामरेड चू तेह, कामरेड ल्यु पो-छङ, कामरेड रन पी-श और कामरेड क्वान श्याङ-इङ (इनमें अन्तिम दोनों दूसरी मोर्चा-सेना के नेता थे) द्वारा पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की सही कार्यदिशा का दृढ़ता से समर्थन किए जाने, तथा चाङ क्वो-थाम्रो की पलायनवादी नीति और पार्टी-विरोधी फूटपरस्त गतिविधियों के खिलाफ संघर्ष किए जाने के परिणामस्वरूप, तथा चौथी मोर्चा-सेना के अधिकांश कार्यकर्ताओं में चाङ क्वो-थाम्रो की कार्यदिशा की गलती का एहसास हो जाने और जापान का प्रतिरोध करने के लिए लगातार उत्तर की तरफ बढ़ने की उनकी मांग के फलस्वरूप, चाङ क्वो-थाम्रो की गद्दारी व फूटपरस्ती की स्कीमें नाकाम हो गईं। उसे मजबूर होकर अपना बोगस "पार्टी-केन्द्र" तोड़ देना पड़ा, तथा जुलाई में, दूसरी मोर्चा-सेना के साथ चौथी मोर्चा-सेना को भी उत्तर की तरफ ले जाना पड़ा। वे दोनों अक्तूबर में कानसू प्रान्त के ह्वेइनिङ नामक स्थान में पहुंचीं और पहली मोर्चा-सेना से जा मिलीं। लाल सेना की तीन मुख्य सैन्य-

शक्तियों–पहली, दूसरी और चौथी मोर्चा-सेनाओं–के मिलन के साथ लम्बा अभियान विजयपूर्वक समाप्त हो गया।

लम्बा अभियान एक महान ऐतिहासिक घटना है, जिसकी मिसाल चीन के इतिहास में और कहीं नहीं मिलती। लाल सेना द्वारा तय किए गए रास्ते का अधिकतम फासला २५,००० ली था, जो क्रमश: फ़ूच्येन, च्याङशी, क्वाङतुङ, हुनान, क्वाङशी, क्वेइचओ, युन्नान, शीखाङ, सछ्वान, कानसू और शेनशी इन ग्यारह प्रान्तों में फैला हुआ था। च्याङ काई-शेक ने अपनी बेहतरीन फौजी और हवाई यूनिटों को गोलबन्द करने, विभिन्न प्रान्तों के युद्ध-सरदारों व जमींदारों की फौजों के साथ मिल कर कार्यवाही करने, तथा लाल सेना के अभियान-मार्ग में मौजूद प्राकृतिक बाधाओं पर अपनी प्रतिरक्षा-व्यवस्था कायम करने की भरपूर कोशिश की और हमले करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। एक ऐसे दुश्मन से बचने के लिए जिसके पास उससे कहीं अधिक अच्छा साज-सामान मौजूद था और जिसकी तादाद उससे कहीं अधिक थी, लाल सेना को निर्जन स्थानों में कूच करना पड़ा, ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों व तूफानी नदियों, और खतरनाक दलदली इलाकों व रास्तों को पार करना पड़ा, खास तौर पर पश्चिमी सछ्वान प्रान्त में, जहां के हिमाच्छादित पर्वत समुद्र की सतह से ५,००० मीटर तक ऊंचे थे और जहां दुर्गम दलदली मैदान थे। इन क्षेत्रों में व्यापक गरीबी, छितरी आबादी और अनाज की कमी का बोलबाला था।

लेकिन इनमें से कोई भी कठिनाई और बाधा लाल सेना

को लम्बे अभियान में विजय प्राप्त करने से न रोक सकी। इसका मुख्य कारण यह था कि लाल सेना का नेतृत्व एक मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के हाथ में था। १६२१ में अपनी स्थापना के वाद से ही यह पार्टी लम्बे क्रान्तिकारी संघर्षों में तपकर फौलादी वन चुकी थी तथा इसने मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त को चीन के क्रान्तिकारी अमल के साथ मिलाना सीख लिया था, इस प्रकार का समृद्ध अनुभव, खास तौर पर क्रान्तिकारी युद्धों का समृद्ध अनुभव संचित कर लिया था तथा काफी वड़ी तादाद में नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित कर लिया था। चुनई सम्मेलन के वाद, पार्टी की केन्द्रीय कमेटी कामरेड माओ त्सेतुङ की अगुवाई में कायम की गई। उसने सही कार्यदिशा अपनाई। वह न सिर्फ हर तरह के दुश्मनों का मुकावला करने में निपुण थी वल्कि पार्टी के भीतर गलत रुझानों के खिलाफ संघर्ष करने में भी कुशल थी। लम्बे अभियान का समूचा दौर इस वात का साक्षी है कि "वाम-पंथी" गलत कार्यदिशा को पूर्ण रूप से दुरुस्त करने और कामरेड माओ त्सेतुङ की सही कार्यदिशा का नेतृत्व कायम करने, चाङ क्वो-थाओ की दक्षिणपंथी अवसरवादी कार्यदिशा और फूटपरस्त स्कीमों के खिलाफ दृढ़ता से संघर्ष करने, तथा कामरेड माओ त्सेतुङ के सही विचारों पर कायम रहने के परिणामस्वरूप ही इसमें विजय प्राप्त की जा सकी। यदि पार्टी और कामरेड माओ त्सेतुङ का सही नेतृत्व न होता, तो लाल सेना के लम्बे

अभियान में विजय प्राप्त करने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

लम्बे अभियान के महत्व की कामरेड माओ त्सेतुङ ने बड़े स्पष्ट शब्दों में इस प्रकार व्याख्या की है :

> **लम्बे अभियान की चर्चा करते हुए, पूछा जा सकता है, "उसका महत्व क्या है?" हमारा उत्तर है कि लम्बा अभियान अपने ढंग की पहली घटना है, जिसकी इतिहास में कोई मिसाल नहीं मिलती ; वह एक घोषणापत्र है,... उसने संसार के सामने घोषित कर दिया है कि लाल सेना एक वीरों की सेना है और साम्राज्यवादी और उनके पालतू कुत्ते, च्याङ काई-शेक और उसके जैसे लोग लाल सेना के सामने कोई हस्ती नहीं रखते। उसने साम्राज्यवादियों और च्याङ काई-शेक की घेरा डालने, पीछा करने, अड़चनें डालने और रास्ता छेंकने की नाकाम कोशिशों के दिवालियेपन का ऐलान कर दिया है। लम्बा अभियान एक प्रचार-दल भी है। उसने ग्यारह प्रान्तों की लगभग बीस करोड़ जनता के सामने यह ऐलान कर दिया है कि लाल सेना का रास्ता ही उसकी मुक्ति का रास्ता है। लम्बे अभियान के बिना व्यापक जन-समुदाय इतनी जल्दी यह कैसे जान सकता था कि संसार में ऐसी महान सच्चाई भी है जो लाल सेना के रूप में अभिव्यक्त हुई है? लम्बा अभियान बीज डालने वाली मशीन भी है। उसने ग्यारह प्रान्तों में बहुत से बीज**

डाले हैं, जो अंकुरित, पल्लवित और पुष्पित होंगे ; उनमें फल लगेंगे और भविष्य में फसल तैयार होगी। सारांश यह कि लम्बे अभियान का अन्त हमारी विजय और शत्रु की पराजय के रूप में हुआ है।

("जापानी-साम्राज्यवाद-विरोधी कार्यनीति के बारे में")

लम्बा अभियान विजयपूर्वक समाप्त होने के फलस्वरूप चीनी क्रान्ति १६२७ के संकट के बाद एक और संकट पर काबू पाने में समर्थ हो सकी। इसने समूची चीनी जनता में क्रान्ति और जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के भविष्य के बारे में आत्मविश्वास का संचार कर दिया। इसने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और लाल सेना की चुनिदा शक्ति की हिफाजत की तथा कठोर अग्नि-परीक्षा के जरिए पार्टी की पांतों को फौलाद की तरह मजबूत बना दिया। इसी चुनिदा शक्ति के भरोसे जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दौरान, पार्टी व कामरेड माओ त्सेतुङ के सही नेतृत्व में क्रान्तिकारी पांतों की शक्ति पहले से कहीं ज्यादा बढ़ गई तथा इस प्रकार साम्राज्यवाद और उसके पालतू कुत्तों, क्वोमिन्ताङ प्रतिक्रियावादियों के शासन का तख्ता उलटने और एक नए चीन को जन्म देने के हेतु महान विजय प्राप्त करने के लिए बुनियाद तैयार की जा सकी।

दिनांक Date	उधारकर्ता की संख्या Borrower's No.	दिनांक Date	उ I